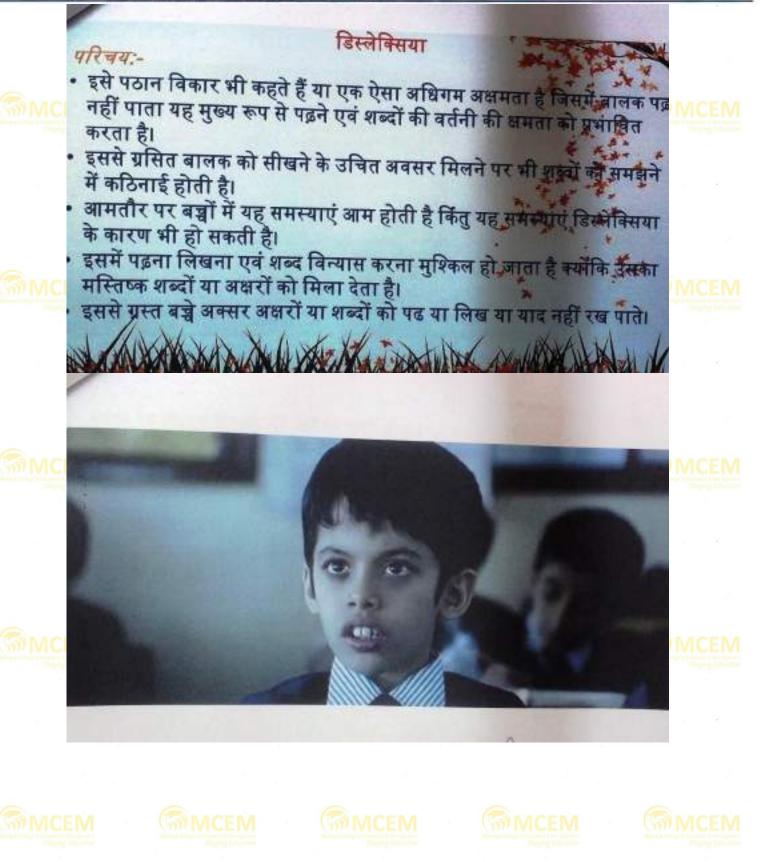






Shaping Education







Shaping Education

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

इसका यह मतलब बिल्कुल भी नहीं की उससे सीखने की क्षमता बाकी वजा ब कम है हालांकि अच्छी तरह से पढ़ने में और सक्षम होने के कारण उसे अध्ययन में दिखते वाती है और कई चीजों को समझना मुश्किल हो जाता है।

कारण:-

इस दिशा में अनेक शोध व अनुसंधान जारी है। विशेषज्ञ डिस्लेक्सिया के काजगों की गहराई से नहीं जान पाए हैं।

हालांकि कुछ अध्ययनों से अज्ञात अवश्य होता है कि वंशानुक्रॅम कि इसमें महत्वपूर्ण पूमिका है। अर्थात यह एक अनुवांशिक बीमारी है।

यदि माता-पिता में से किसी एक को भी डिस्लेक्सिया है तो संतान में मी इसके होने की संभावना काफी बढ़ जाती है।

 कुछ अध्ययनों में गर्भावस्था के दौरान मां का अत्यधिक तनाव में रहना भी झाक प्रमुख क माना जाता है।

• यह पाया गया है कि DCDC2 नामक एक जीन की कमी के कारण पढ़ने में समस्या कीती है।

कुछ लोगों को जन्म के बाद डिस्लेक्सिया होता है जिसका आमतौर पर कारण मस्तिष्क की चोट स्ट्रोक या कुछ अन्य प्रकार के आघात होते हैं।

मस्तिष्क के उन हिस्सों में समस्याएं जो पढ़ने में सक्षम होते हैं।

डिस्लेक्सिया का कारण पर्सनल इंटेलीजेंशिया बुद्धिमत्ता नहीं बल्कि इसका संबंध कुछ एँ से जीन्स से है जो मस्तिष्क के विकास संबंधी तंत्रिका तंत्र को नियंत्रित करते हैं। यह एक ऐसी स्थिति है जो ब्रेन के अक्षरों और शब्दों को समझने की क्षमता को प्रभावित करते हैं।





AUXA





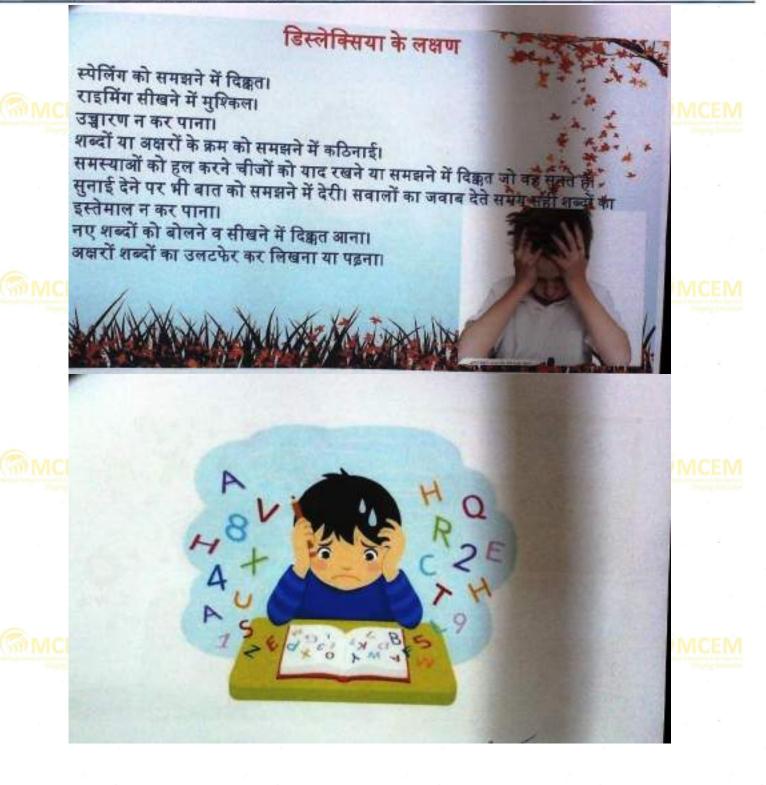






Shaping Education

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna









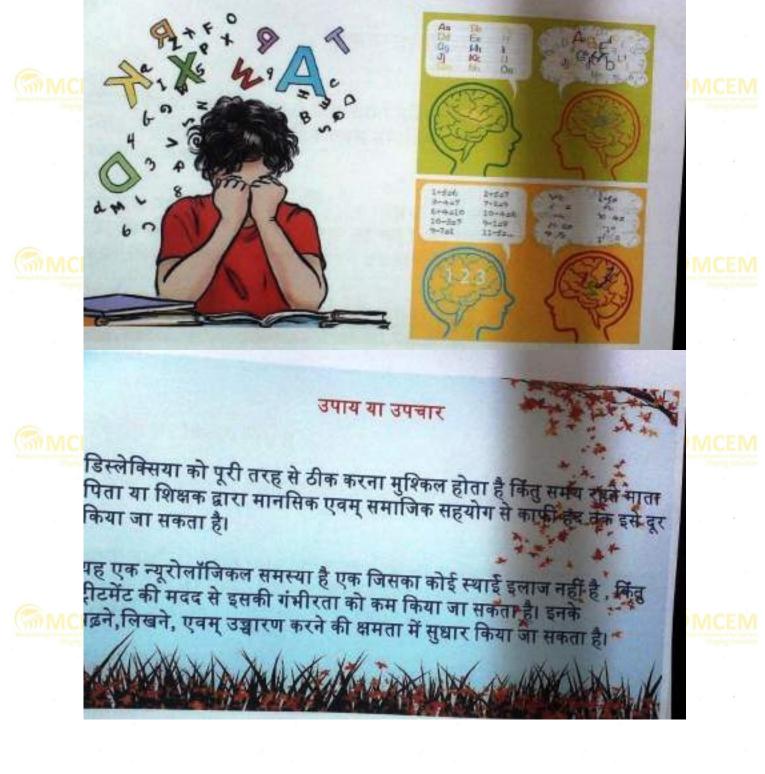








Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







MCEM

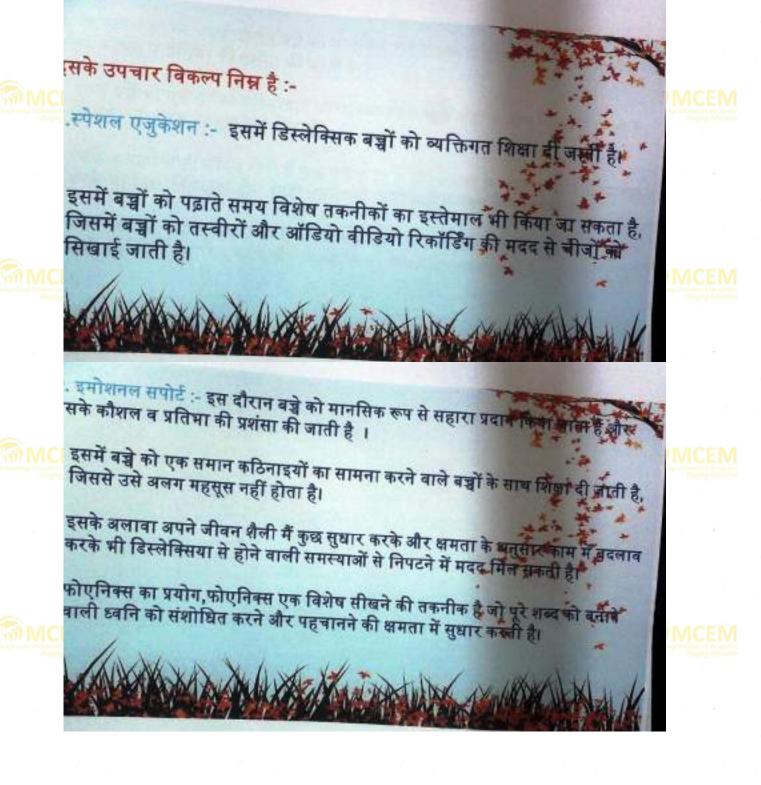








Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







MCEM









Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







MCEM

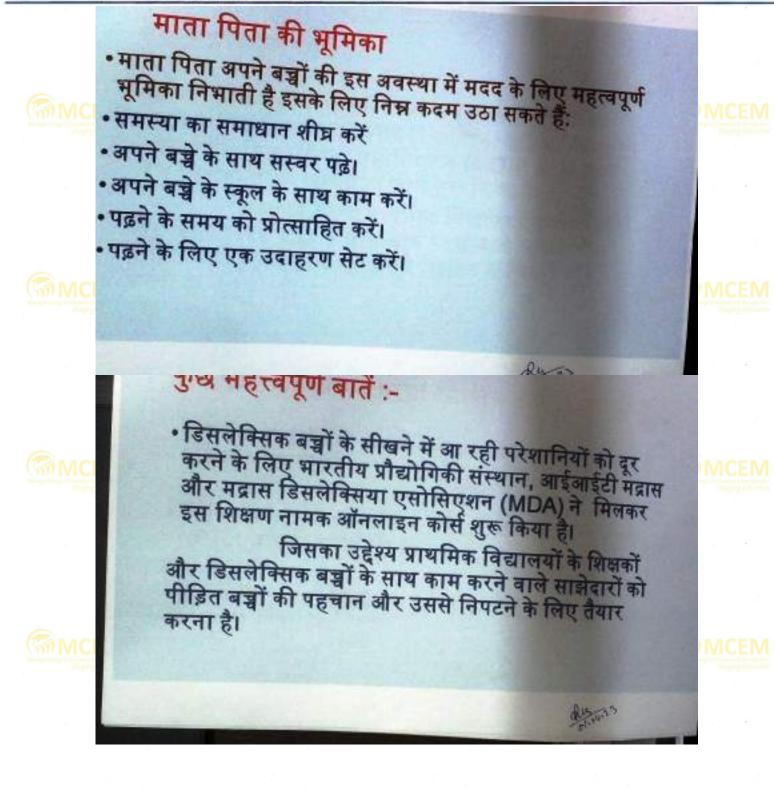








Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







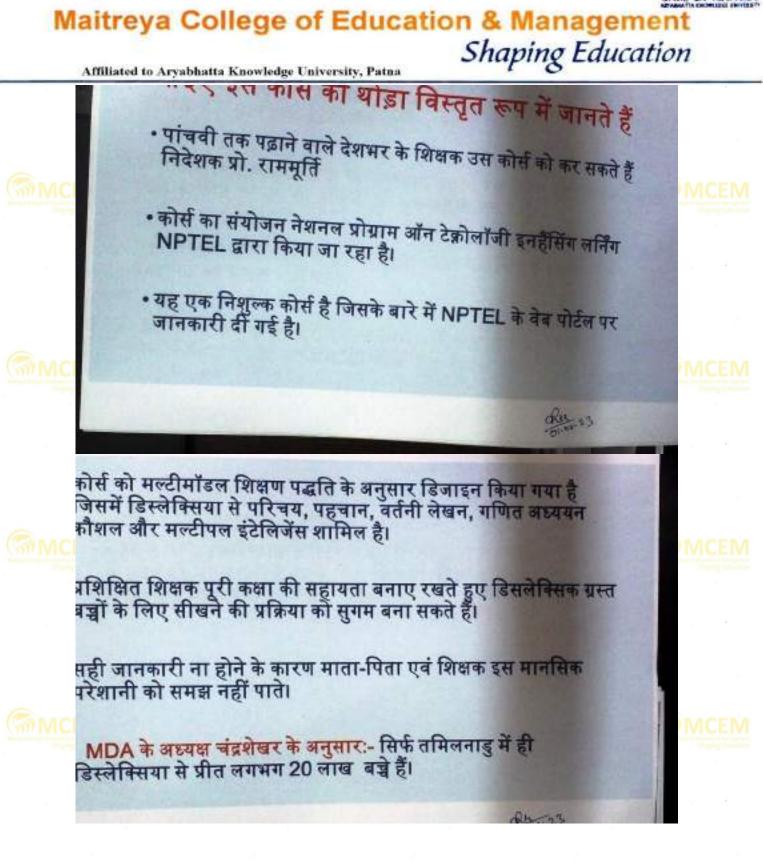
МСЕМ















MCEM

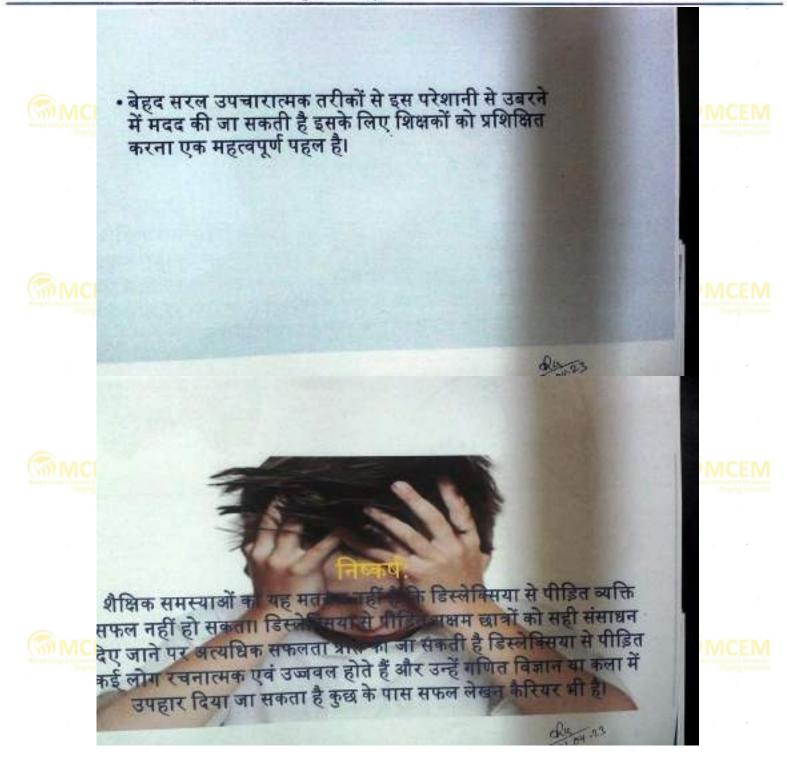








Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







MCEM









Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna















MCEN

Maitreya College of Education & Management Shaping Education

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

Session 2021-23 द्वितीय वर्ष

Assignment Questions

OC- 1.5 Understanding School Management and Leadership / विद्यालय प्रबंधन एवम नेतृत्व की समझ

 विद्यालय संगठन से आप क्या समझते है? इसके प्रमुख घटकों का उल्लेख करते हुए, विद्यालय संगठन से समुदाय का संबंध स्थापित करें।

What do you mean by School Organization? Write the components of School Organization and describe the relation of School Organization with community.

 विद्यालय प्रबंधन तंत्र का अर्थ स्पष्ट करते हुए विद्यालय प्रबंधन के आधारभूत सिद्धांतों का उल्लेख करें। Explain the meaning of School Management System. Write the basic principles of School management system.

 अपनेशक को प्रश्नों के प्रश्ने के प्रश्ने प्राप्त में स्थित के प्रति क प्रति के प्रत

 लोकतांत्रिक एवं विकेंद्रीत नेतृत्व का अर्थ स्पष्ट करते हुए, प्रधानाध्यापक के नेतृत्व क्षमता के गुणों एवं भूमिका का वर्णन। Explain the democratic and distributive leadership in school. Explain the leadership quality's role of principal.

अभिलेखों से क्या तात्पर्य है? विद्यालय कार्यप्रणाली के प्रबंधन में अभिलेखों की भूमिका का उल्लेख करें।
 What do you mean by records? Describe the role of records in school working system.

 विद्यालय के संसाधनों का वर्णन करते हुए इन संसाधनों के अधिकतम उपयोग का उल्लेख करें। Describe the school resources and their maximum utilization.





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

10-41 ISIGINI AN 2010-18 ASSIGNMEN CYNAMONS.

Shaping Education

- 1. मातृभाषा के रूप में हिन्दी भाषा की प्रकृति एवं संरचना पर प्रकाश डालें।
- 2. मध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण हेतु प्रयुक्त रणनीतियों का वर्णन करें।
- 3. हिन्दी शिक्षक के व्यकित्व एवं गुणों का वर्णन करें।
- हिन्दी भाषा शिक्षण की प्रमुख विधियों का नाम लिखते हुए किसी एक विधि का सोदाहरण विवेचन करें।

PC-7A अर्थशास्त्र एवं भूगोल शिक्षण

Unit-1

 Explain in your own words about the meaning, nature and scope of Economics / Geography Teaching.

अर्थशास्त्र / भूगोल शिक्षण का अर्थ,प्रकृति एवं क्षेत्र की व्याख्या अपने शब्दों में करें।

 How History ,civics ,Geography and economics an important subject of Social science are correlated with each other ? Describe.

सामाजिक विज्ञान के मुख्य विषय के रूप में इतिहास,नागरिकशास्त्र भूगोल एवं अर्थशास्त्र आपस में किस प्रकार सहसम्वाधित हैं वर्णन करें।

Unit -2

3. Explain in your own words about project Method ,Problem solving, Lectureo-cum-Demonstration method,

णेजेक्ट विधि, समस्या समाधान, व्याख्यान सह प्रदर्शन विधि की व्याख्या अपने शब्दों में करें।

4. What do you understand by lesson planning ? Describe its important ments





Shaping Education

Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

And types.

पाठयोजना से आप क्या समझते हैं? इसके प्रमुख गुणों एवं भागो का वर्णन करें।

टिप्पणी लिखे:-

- Aimes of Economics / Geography Teaching in middle school level. अर्थशास्त्र / भूगोल शिक्षण के उदेश्य माध्यमिक स्तर पर ।
- 2. व्लूम के जानात्यक पक्ष की व्याख्या Explanation of bloom's Taxanomy.
- 3. ब्लू प्रिंट Blueprint.
- 4. समप्रापि परीक्षण Aehievement Test
- 5. शिक्षण सहायक सामाग्री Teaching Aids.

PC-7A Pedagogy of social science इतिहास / नागरिकशास्त्र

- write Essay on maxims and theory of History / civics Teaching.
 इतिहास / नागरिकशास्त्र शिक्षण के सिद्धान्त एवं सुकिवमों पर निबन्ध लिखिए।
- Describe in detail of different skills of History / civics Teaching.
 इतिहास / नागरिकशास्त्र शिक्षण के विभिन्न कौशलों को स्पष्ट करिए ।
 - Describe charactivistics ,process ,micro teaching cycle of micro taching. सुक्षम शिक्षण की विशेषताए,प्रक्रिया , सुक्ष्म शिक्षण चक्र लिखिए ।
 - 4. Write ments and limitations of micro teaching.

सूक्ष्म शिक्षण के लाभ एवं सीमाए लिखिए ।

 Write Evaluation methods and achievement tests of History / civics teaching.

इतिहास शिक्षण / नागरिकशास्त्र में मूल्यांकन प्रविधियाँ एवं उपलब्धि परीक्षणों को लिखिए।







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

Home science

- Write importance of Home science Teaching in modern life style? आधुनिक जीवन पद्धति [Modern life style] में गृह विज्ञान शिक्षण का महत्व लिखिए ?
 Write went Laboratory, chart and model in curriculum of home science? गृह विज्ञान की पाठ्यचर्चा में प्रयोगशाला, चार्ट तथा माइल की उपयोगिता लिखिए ?
- Describe any two teaching methods in home science Teaching?
 गृह विज्ञान शिक्षण में प्रयुक्त किन्हीं दो शिक्षण विधियों का वर्णन कीजिए ?
- 4. Who do you understand my micro Teaching? Constment micro lesson Planning a based on any me Teaching skill? सुक्षम शिक्षण से आप क्या समझते हैं ? किसी एक शिक्षण कौंशल पर आधारित सुक्ष्म पाठ-योजना निर्माण कीजिए ?

Method of English

Unit-1

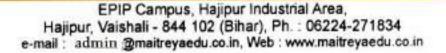
- 1. Explain the impontance of English at senion level.
- 2. Why English is called "window on the Modren World.
- 3. How can English be completed with othen cultural Development?

Unit-2

MCLIV

 which are the main method of teaching English? Devecible in detail about Any two method , justify the importance of those method for teaching English in Your State?

2. Evaluate the place of English language in school cumiculum in India.?







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

3. What is the meaning learning plan? Make a learning plan on any lopic of

English.?

Objective Question :- 2 x 2 = 4

- 1. Establish, How English is the most significant Window on the world.?
- 2. What is inductive method?

SECTION:-

- 1. what is primary objective of teaching English?
- 2. what is direct Method ?
- 3. How many tepo of lesson plan.?

PC-7A-5 Pedagogy of Mathematics

1. Explain the aims and objective of Mathematics teaching? गणित शिक्षण के

लक्ष्य तथा उदेश्य की व्याख्या करें ?

- Discuss the relationship between mathematics and other subject ?
 गणित के अन्य विषयों के साथ संबंध की चर्चा करें ?
- 3. Describe the meaning & nature of mathematics. What are the scope of Mathematics teaching in secondry level ? गणित के अर्थ एवं प्रकृति का वर्णन क करें ? मध्यमिक स्तर पर गणित शिक्षण की क्या उपयोगिता हैं ? स्पब्ट करें / उल्लेख
 - Discuss the contribution of following indian mathematician in the history of Mathematics

(a) Bhaskaracharya

करें ।

(b) Aryabhatta





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

गणित के इतिहास में निम्नलिखित गणितजों के योगदान की चर्चा कीजिए -

(a) भास्करायीय (b) आयांभइ

5. Explain the following approaches of teaching mathematics-

(a) Inductive-Deductive (b) Analytical - Synthetic

(c) Hewistic

गणित शिक्षण में विभिन्न उपगम का वर्णन कीजिए ?

(a) आगमन-निगमन (b) विशलेषन-संशलेषण

(c) इयूरिस्टिक

Shaping Education

6. What do you mean by evaluation? Explain the characteristic of a gard-lest? मूल्याकन से आप क्या समझते हैं ? एक अच्छे परिहण की व्याख्या करें ?

PC-7(a) pedagogy of Biological science -2

Assignment question

- Describe the nature and field of biology. जीवविज्ञान की प्रकृति और क्षेत्र का वर्णन करें।
- 2. Describe process and importance of project method. प्रोजेक्ट विधि की प्रक्रिया और महत्व का वर्णन करें ।

3. What is the importance of Biological Teaching in school curriculum. विधालय पाठ्यचर्धा में जीव विज्ञान शिक्षण का क्या सहत्व हैं ।

PC(7A) Pedagogy of physical science - 1

- 1. भौतिक विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य एवं उदेश्य का वर्णन करें।
- 2. पोलेक्ट विधि की प्रक्रिया और उपयोग का वर्णन करें।
- 3. इकाई योजना और पाठ योजना में क्या अन्तर हैं ? स्पष्ट करें ।











Shaping Education

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

INTERNSHIP PROGRAMME

स्कूल ईटर्नशीप प्रोग्राम के अन्तर्गत प्रशिक्षुओं द्वारा किये जाने वाले कार्य एवं प्रत्येक कार्य के आकलन हेत् निर्धारित अंकों का विवरण-

-	कुल चार माहः : पाँच घंटे प्रतिदिन	
कार्य	विवरण	आकलन हेतु निर्घारित अंक
01	स्कूल डायरी	10
02	कक्षा अवलोकन (सहपाठी अवलोकन)	15
03	विद्यालय अवलोकन (विद्यालय प्रबंधन या विद्यालय प्रबंध समिति सदस्यों से बात-यीत इत्यादि)	15
04	शिक्षार्थीप्रशिक्षु संवाद	10
05	वृत्तिगत आचार-विचार	10
06	प्रायोजना कार्य और क्रियात्मकशोध	40 (20 + 20)
07	शिक्षण—अभ्यास (Learning Plan)	50
-	बाह्य आकलन (प्रायोगिक परीक्षा)	50
- Inter-	कुल	200

NCTE द्वारा निर्धारित स्कूल स्थानबद्ध इनटर्नशिप कार्यक्रम के लिए दिशा निर्देश:-

- ० इनटर्नशिप कार्यक्रम का उद्देश्य व्यावसायिक क्षमता में वृद्धि, अध्यापकीय प्रभावशीलता और कौशलों में वृद्धि है।
- O B.Ed. पाठ्यक्रम के अंतिम वर्ष के प्रशिक्षुओं को सक्रिय रूप से शिक्षण में प्रवृत्त किया जाएगा। उन्हें उच्च प्राथमिक कक्षा (6 से 8) तथा माध्यमिक कक्षा (9 से 10) अथवा उच्च माध्यमिक कक्षा (11 से 12) जिसमें कम से कम 16 सप्ताह माध्यमिक/उच्च माध्यमिक कक्षाओं के लिए होंगे।
- इसमें शिक्षण अभ्यास के अतिरिक्त एक सप्ताह की प्रारंभिक प्रावस्था होगी जिस अवधि में प्रशिक्ष सामान्य कक्षा के नियमित अध्यापक के अध्यापन का प्रेक्षण करेंगे। इसके अतिरिक्त अभ्यास पाठों का समकक्ष (peer observation) प्रेक्षण भी करेंगे।
- ० विद्यालय स्थानबद्ध प्रशिक्षण के लिए अध्यापक शिक्षा संस्थानों तथा सम्बद्ध विद्यालयों द्वारा प्रशिक्षुओं को परामर्श देने, उनका पर्यवेक्षण करने, उन पर दृष्टि रखने और उनका आंकलन करने के लिए एक परस्पर सम्मत प्रक्रिया स्थापित की जाएगी।

प्रशिक्-विद्यार्थी संवाद

रकूल के प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत विभिन्नता को देखते हुए यह आवश्यक है कि प्रशिक्ष-शिक्षक इन विभिन्नताओं का पता लगायें एवं उन्हें स्वयं को समझने में मदद करें। इस कार्य हेतु प्रशिक्ष-शिक्षक प्रतिदिन एक शिक्षार्थी से सौहार्द्रपूर्ण ढंग से उसकी रुचि, जिज्ञासा, आदत, परिवार, उसका स्कूल, उसकी मित्र मंडली, पसंद-नापसंद इत्यादि पर बातचीत करेगा, आवश्यक सलाह देगा, प्रगति का निरीक्षण करेगा।



'n





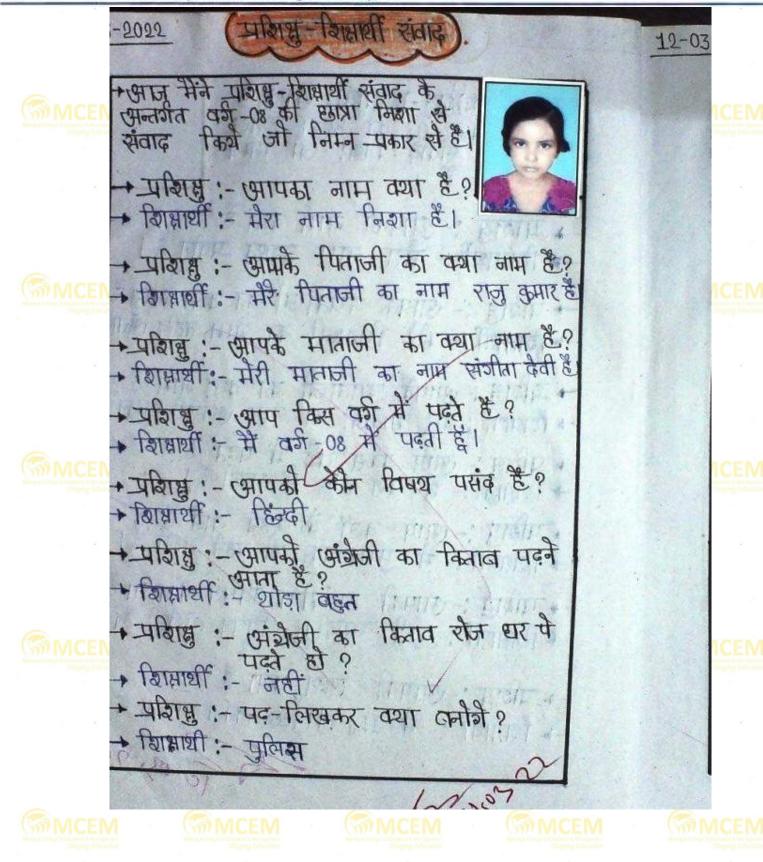


Maitreya College of Education & Management Shaping Education Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna 10-05-2012 1213121 माराध Kidia -आज, में पशिष्ठ-शिष्ठाधी संवाद के अन्तर्गत वर्श -08 की छात्रा इशस प्रवीन से संवाद किया जो मिम्न मकार से → मशिष्ठाः :- अगपका नाम कथा है? → शिष्तार्थी :- मैरा नाम इश्वारत - मवीन है। → प्रशिष्ठ :- आपके पिताजी का क्या नाम है? + शिक्षार्थी :- मीरे पिताजी का ज्यम तरीव आंसारी → प्रशिष्ठ :- आपकी माताजी का क्या नाम है ? → शिष्रार्थी :- मैरे माताजी का नाम आकवरी खावन है → प्रशिष्ठ :- साप किस वर्श में पढते है? → शिष्ठार्थी :- में वर्श 8th में पढती दूँ। + प्रशिष्ठ :- भाप कहाँ के रहने वाले हैं? + शिष्ठार्थी :- मैं मुकीन चक की रहने वाली दें। प्रशिष्ठ :- आपकी पसंदीता विषय कौन-सा छै
 शिन्नार्थी :- मीरी पसंदीता विषय अंग्रेजी है।

+ प्रशिष्ठ :- आपकी लध्य क्या है? - शिक्षार्थी:- में IAS Offices वनना नाहती है।

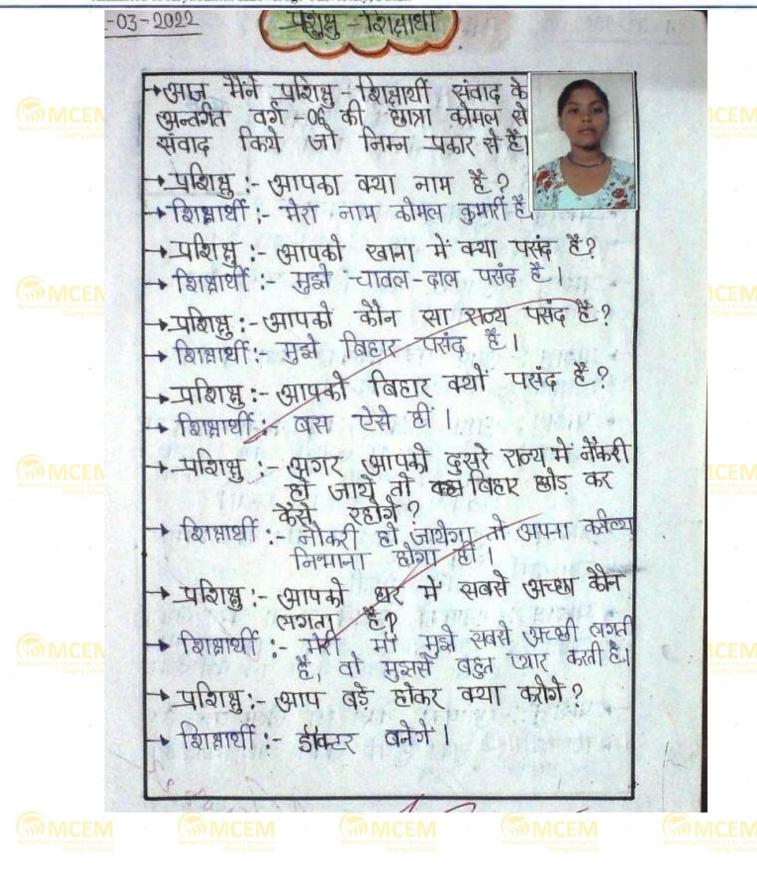






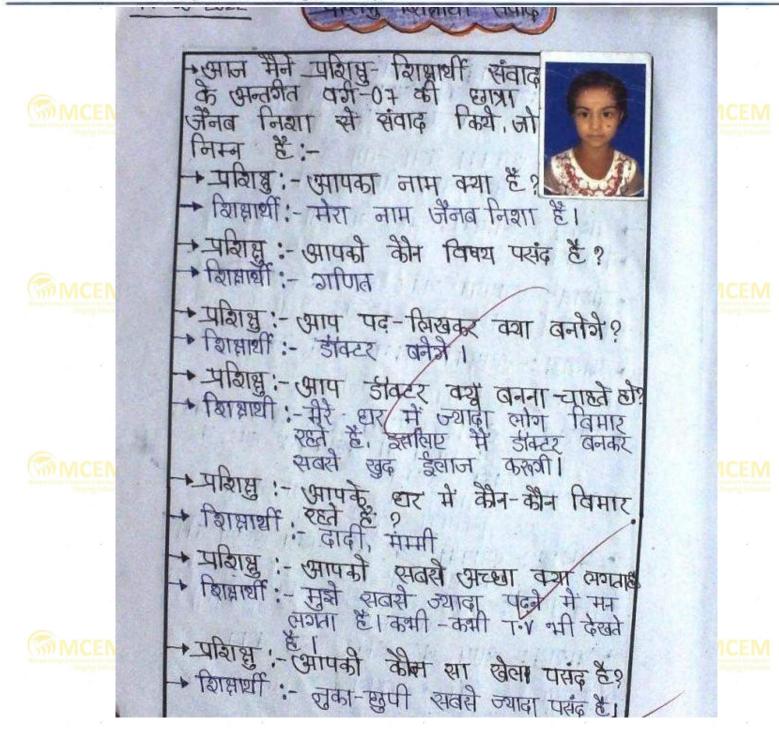




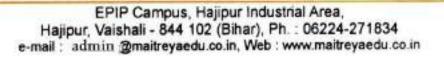






















पशिष - शिष्ठार्थी संवाद 16-03-2022 भितर्गत TCD मशिष्ठ :- आपका नाम वया है? > शिक्षार्थी:- २१६९ कुमार व्यवसे ज्यादा कीन विषय +पशिश् :- आपको शिमार्शी. पसंद विषय क्य *-परिवास:- आपकी रिजरी पढने में आच्छा लगता है किामार्थी :- वय कि इसमें कविता अन्टछा- आन्द्रा ह, और कहानि भी हिन्दी **753**9 विषय में रहता है :- आए हिन्दी में कविता लिखते हैं? + शिक्षाधी :- जहीं - वशुं नही सिखते हो? मित्रिय + - कविता शिखने नहीं खाता है। + दिामार्था: - हिन्दी का किमात पदने आता है? े- आता है :- बती आए वहें हीकर क्या वनीवे बिाम्राधी :- कवि





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna





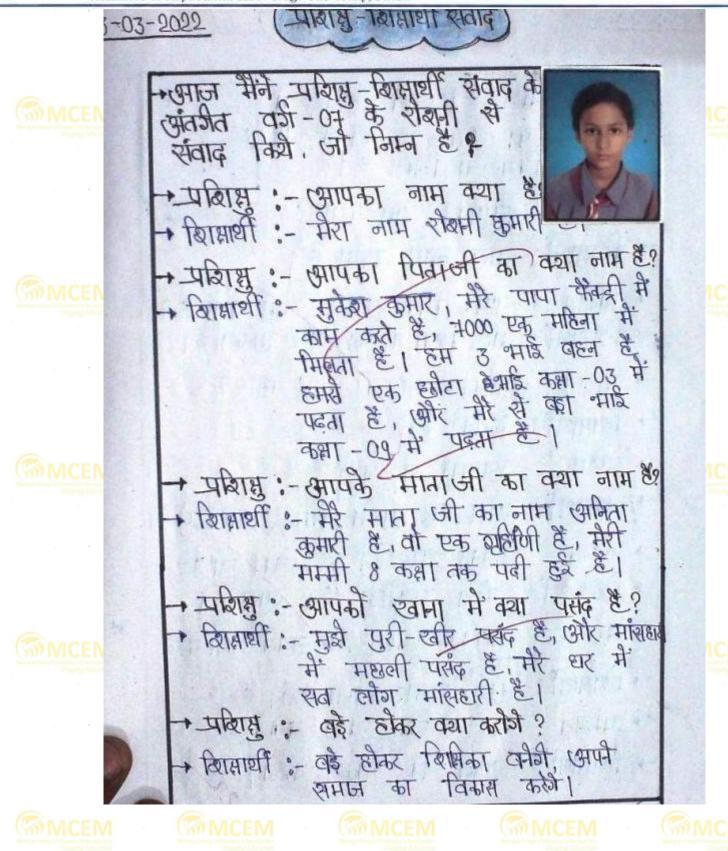


Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

परिषि- शिक्षार्थी सेवाद 23-2022 से रनि D-106 संतर्भत किशे, जो AID :- आपका नाम क्या है? -पशिष्ठ te मेरा नाम राजु विासार्थी :-+ महिामु :- आप किस वर्श में पढते हो ? पद्म मेंहम केशा-06 विासाधी:del બિચ 12 21 ल जि বিহাৰিয शेज आमे कुछ नया क्छ शेज कुछ न E सिखने की मिलता न विद्यालय का सवसे अच्छा लगते हैं? शिष्ठि शिषार्थी:- शहा ाभी विश्विक के सव E. विकिसि (सन्छ) सव लाग पदाते ty स्वसे ज्यादा कीन विषय आपको [अन्छ] लगता विासाधी - ञाणित 1800 :- और अंग्रेजी विषय अच्छा नही IPICID हैं क्या 9 त्मंगे का जुक पहने नहीं आता है।











4-03-2022 • आज मैं पशिषु - शिष्ठार्थी संवाद कें अंतर्जत दिपा कड़ा-05 रौल न०-19 से बात किये जो निम्न है। -→ प्रशिद्यु :- आपका नाम क्या है? → शिलार्धी :- मेरा नाम दिपा है। → प्रशिष्ठु :- आपके पिता जी का नाम केशा है? → तिराहार्थी :- मैरे पिता जी का नाम सुकेश है। + महिाहा :- आपकी मीं की नाम क्या है? + खिाझाधी:- दैवेती दैवी → प्रविामु :- आगम्ब घर कही है? + खिाझार्थी :- मोरा धर मुनीक चौक (कुआरी) में हैं। → परिवाहा: - आपका पर्यवीका रंग कीन साहे? > शिक्षार्थी :- मेरा पसंबीदा रंग लाल है। → पशिष्ठा:- आपकी खाना में सबसे ज्यादा क्या पसंद है? → विाहार्थी:- मुझे पनीर खाना पसंद है। + प्रशिष्ठ :- पद- लिखकर वशा क्लोगे ? + विरासार्थी :- रेलवे में नैकिरी करेंगे।





पशिक्ष-शिक्षाधी संवाद 05-03-2022 संवाद के शिक्षार्थी मशिम अंसारी केशा-8 दिलसाद भीतगत 21 से वात किये जो रील नए-महिल् :- आपक नाम क्या है? मिराधार्थी:- मेरा नाम दिलखाद अंबारी • पशिषु :- आपमी क्या पसंद है ? मुद्दी पटना पसंद है कोसिं की बहालय में अच्छा से समझा कर बया जाता है। वहीं के जिसम, ओर शामार्श विद्यालय जाता है। वहा क के साघ विशिश्वमुझी पदमी है आप पद-सिखकर क्या वनीजे? BIDIE में पट- विख्यकर विाधक वन्त्री क्यकि मझे कचीं की पटाने में विासार्थी :-याहार विश्वमि 8 कार्या प्रविद्वि:- आपकी खाना में क्या परंद है? मुझे सबसे ज्यादा वियानी पसंद है। जब भी वाघार जाते है, पापा के साथ तो में वियानी खाती है। विशिर्धार्धी पसंदीदा विषय वया है? - (भाषका सबसे अच्छा (अतु फ़्रे मुझे 8 लग्रा 917.83

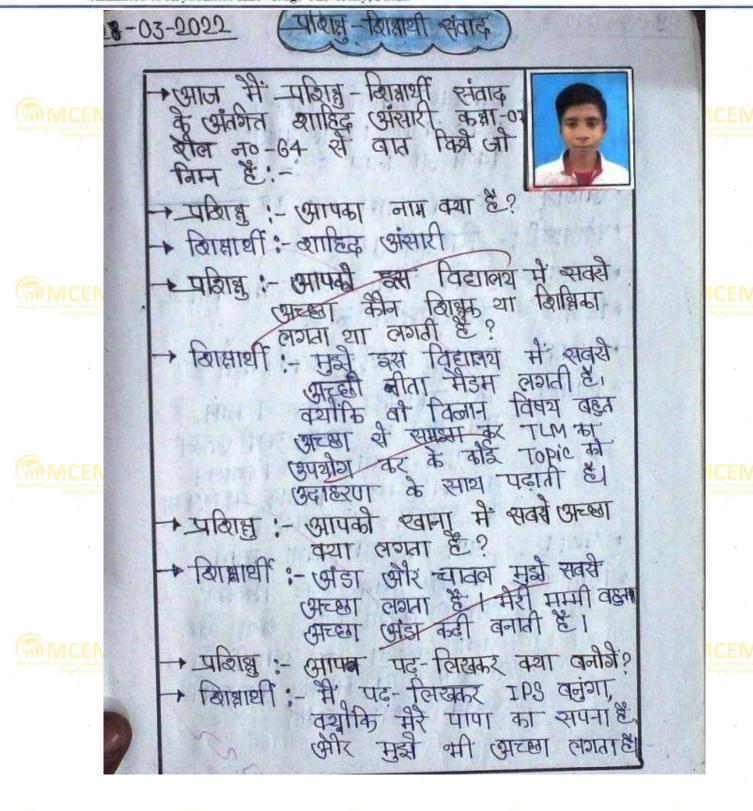




विशिष्टी संवाद 26-03-2022 माराज्ञ-• एमाज मैंने प्रकािमु - किरसार्थी संवाद के आंतजीत मौखमद्द आर्शिफ अंसारी सवाद कहा-07 शैल ना०-16 से वात किये जो जिम्न है:-+ पशिसु :- आपका नाम क्या है? + विाहार्थी :- मेरा नाम मोहम्मह आरीत खंवारी • प्रविामु:- आपका पसंदीका विषय क्या है? + बिासर्थी :- विज्ञान • परिाहा:- आपको चिंत्रांम विषय वयी पसंद है? शिवाधी :- असमें पैड़-पीद्या और के वारे में अच्छा हुआ रहता है। एक dor च्लता है कि सरिति तरत • पशिष्ठाः :- आपको विद्यालय आने में 19/201 लग्म खिाझार्थी :-0 8, 281 **T3Þ** 31-831 ORAL तुछा- ज संखिने 481 मिलता 8. मेडम [3/28d लहत 13D





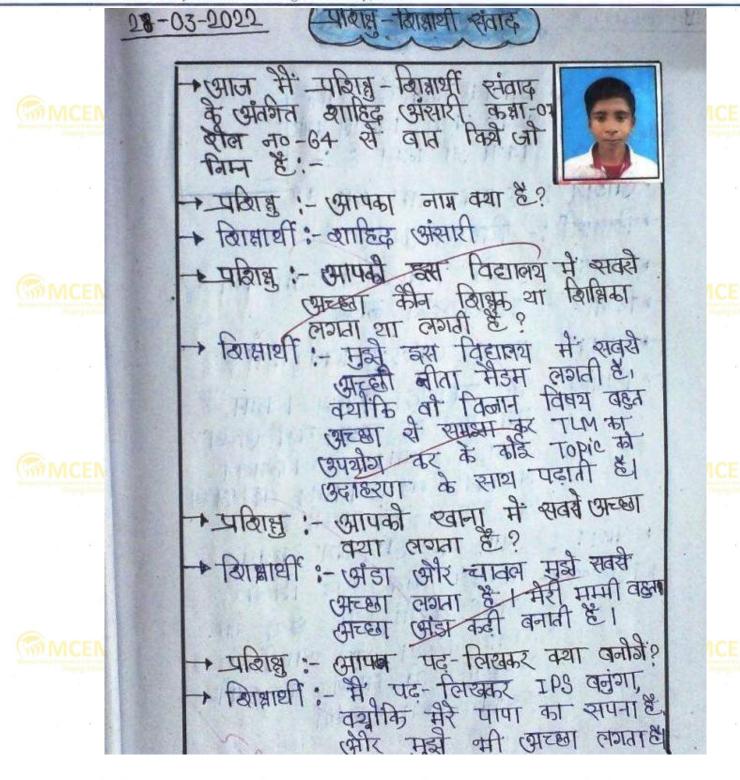








Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

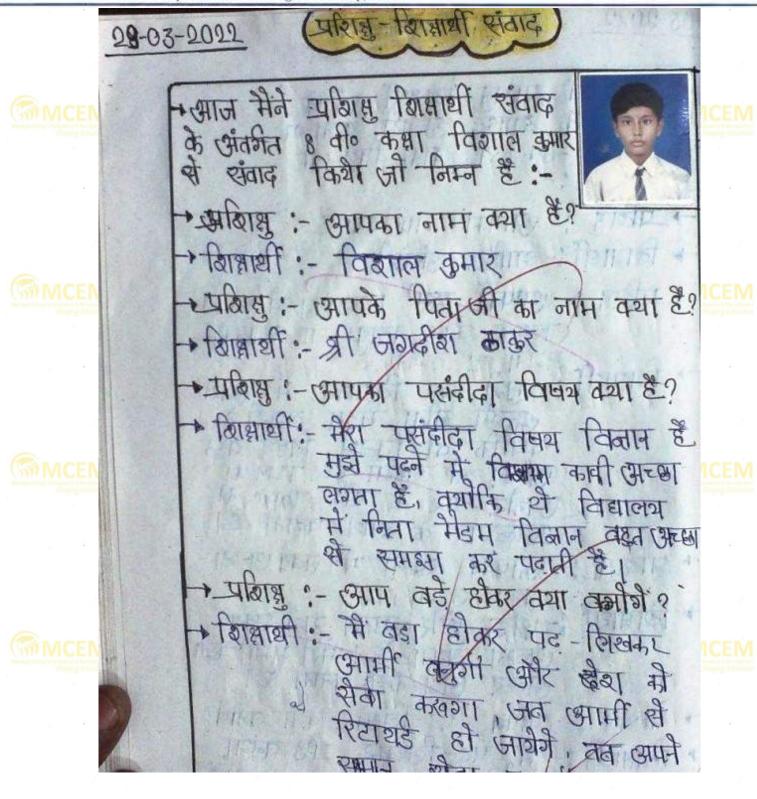








Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







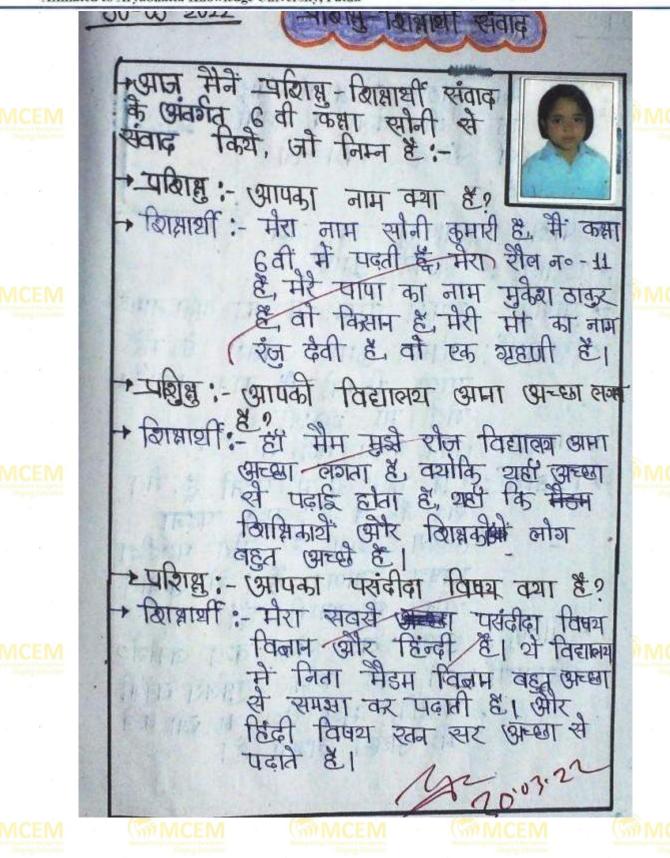






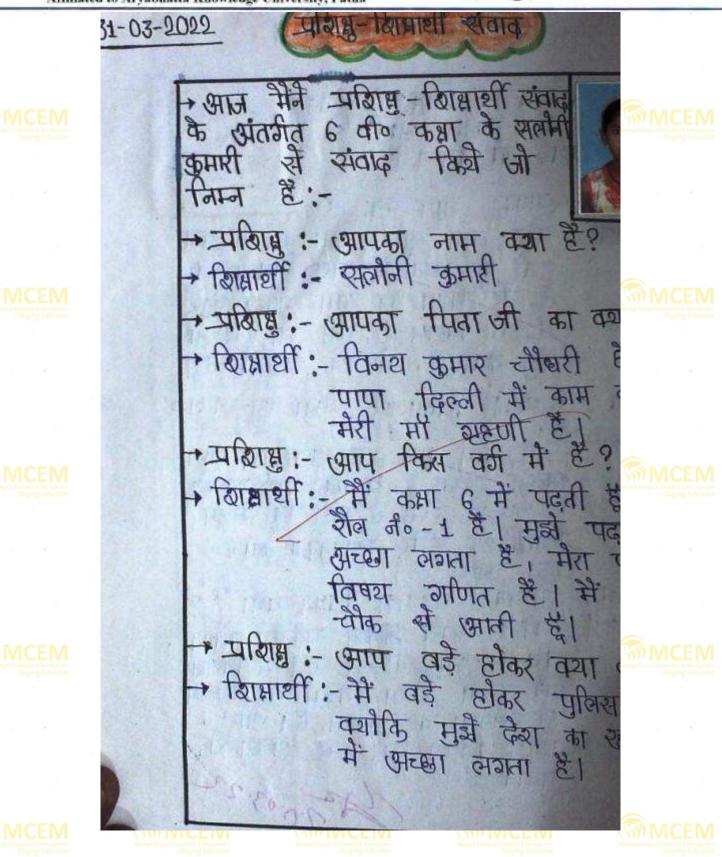








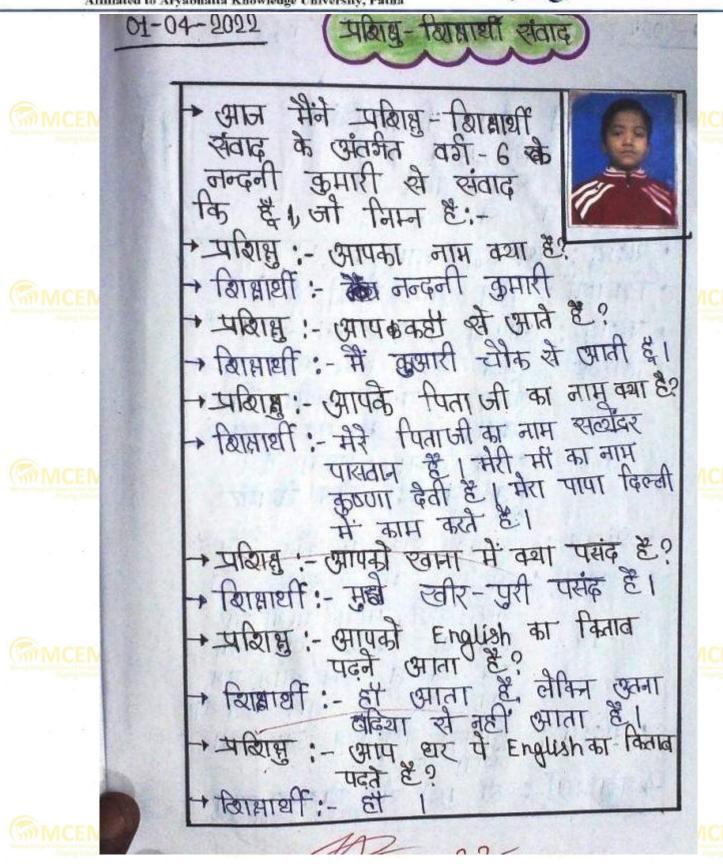








Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in





হাধাহা হলায मुहिमि KIB त्री ch त्रातगत GI **इ**तंताद \$ न्यकार - आपका नाम क्या R :- मेरा नाम पिंकी राक्षार्थी लगता है? वया अच्छा - आपको खेलमा (भारधा आरि मुद्दी पटना विाधाधी :-विख्य पसंदीत हे ।मिटल मेरा पद - लिखकर 8 विनान चाहती डीवरर बनना वैडमिंटर पर्यवीदा खेल में कीन- केन है आपके TN BIB EI सदस्य 513 मेरे विाधार्थी दादा-, दादी, पापा- मम्मी (भे भाई - वहन औ आने मन्न लोग हम चाचा इतन DA साघ रहते हैं। **GIS** DA (HIR) THE विद्यालय भागत 21010 रोल विद्यालय आसा







04-2022 TRAILER IN आज मैने प्रशिह्य - शिह्यार्थी संवाद के (संतर्गत वर्ग- 05 की शॅलना किर्य खंताद • पशिष्ठाः - आसका नाम क्या है? + शिष्वार्थी :- संजना कुमारी भ्यविाहु :- आप कही से आते हो? + शिक्षार्थी :- भी कुआरी -ीक से आती दें। + प्रविामु: - आपका पिताजी का नाम वया ह + शिक्षार्थी:- मेरा पिताजी का नाम जञादीया ठाकर है, वो टरेक्टर -चलाते हैं + प्रकािष्ठ :- आपकी मी का नाम क्या है? :- मेरी मों का नाम किरण देवी हैं, वो एक इडिणी है। वासाधी प्रशिद्य:- आपकी विद्यालय आमा अच्छा लगता मुद्धें रोज विद्यालय आमे उच्छा लग्नमा है। यहीं क्ष शिमक और शिषिका वहत सी लगती है। to (मन्छी लगती





UNA. 05-04-2020 - হিয়োহা প্রার भाषाय में साम ार्यतगीत सिफर सामिया से संवाद किये जी मिम्न है:-+ प्रशिन्न :- आपका नाम क्या है? + शिक्षार्थी:- मेरा नाम सिफर सानिया है + आपका पिताजी का नाम क्या है? + मेरे पिता जी का नाम शाहादत हुसैन + प्रशिषु :- आपकी मी का नाम क्या है? + शिवाधारि:- मेरी मी का नाम शबनम • प्रशिष्ठ :- सापकी प्यवंदीवा विषय क्या है + जिला मीयार जीट - विज्ञान औट जीवा हा की + महिषाः - आप विद्यालय का सहकार्य क → शिल्लाशी :- रात में पदने समय + यहित्र :- आप धर पे किनना समय ए उ धंटा पहते है। मेरे वादा प धार पे पहाते है। रिाधार्था :-खशिषु: - आप वड़े हीकर क्या कोगे? + शिव्राधी :- हम वड़े होकर अलिस दर्मगी





मंशिम् - शिसाशी संवाद 06-04-2022 अाज में प्रथिष्ठ - शिवार्थी र्थवाद के अंतर्गत नुरी फातमा से संवद किये जौ निमन है:-आपका नाम क्या है? + परिवास :-- शिवाधी :- नुरी फातमा :- खाप कीन सा की में पढ़ते हो? :- में तुर्ज - उ में पद्मी दें। मेरा शैल न०-2 है। मेरा पसंदीदा विषय तिाषार्शी teog विद्यालय आना अच्छा + पशिषि :- आपको :- ही म रोज विद्यालय आमा मुझै विाझार्थी लगता है, क्योंकि यहाँ अच्छा छोती है। और मधाहण पटर्डि न्मी भोजन के समय मिलता है। खमा मिलता विद्यालय नहीं कर शेन + पशिश्व :- आप आते रोन नहां कर अरि रिगमार्थी:- ही भी खा कर आती है। खाना पविषद्य :- सापकी खामा में क्या पसंदु है? मुझे सबसे ज्यादा प्रवात खाने विाक्षार्थ





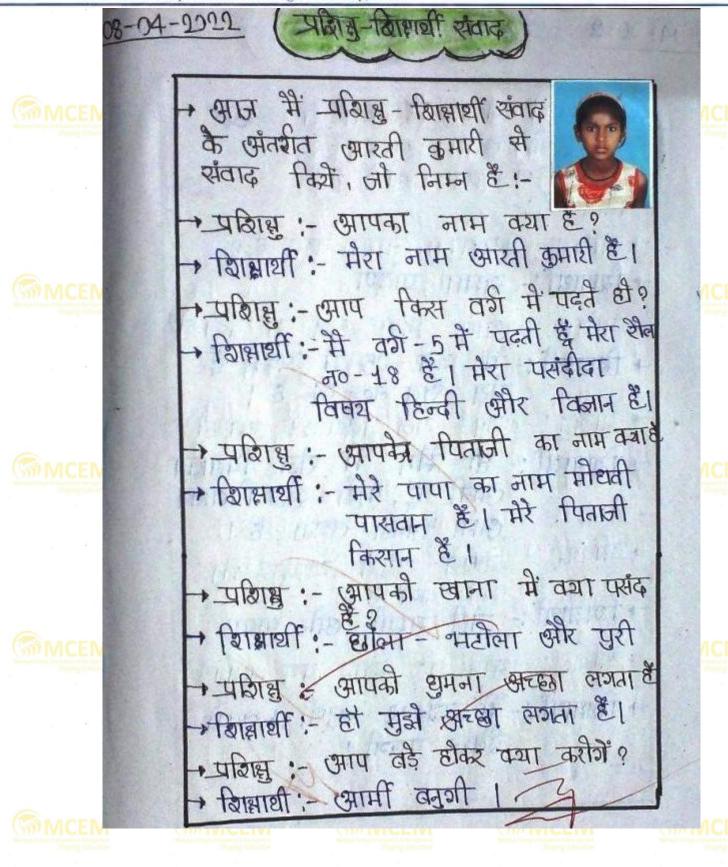
7-04-22 राशह 138 में पशिष्ठ मान BIBI do शंवाद भितंशत त्मपर र्श अंसारी संवाद 9 at 8 10 8 वया सापका नाम (अश राष्ठाष्ठार्थ ामप्राद नाम THT वर्श-05 FO-07 et 2151 मेरा पर विद्यालय त्यात 8 विषय - हिन्द 510 A -चलाना 281 लगता शिष्तार्था:-RY HE (अन्टका लग **GRA** पापा नही ल 8 218 TUIP dol -चरैक्टर -चल शिक्षाशी UIUT 1111 021 ds





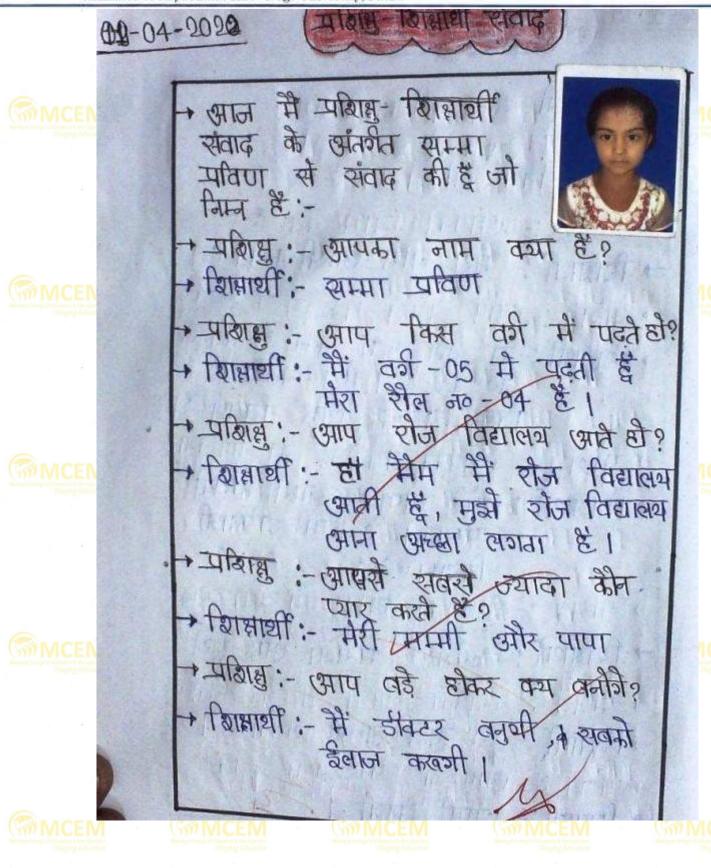






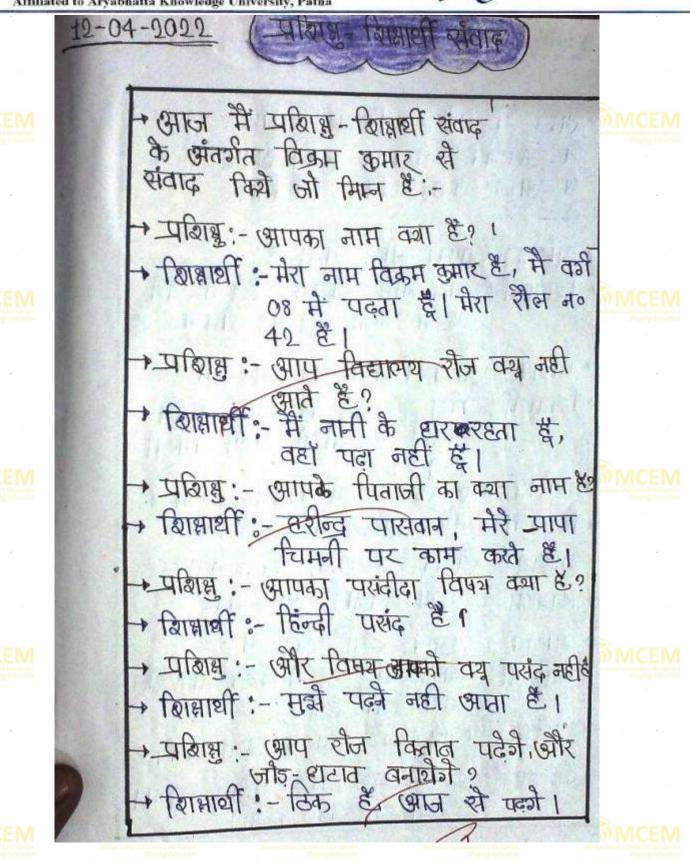






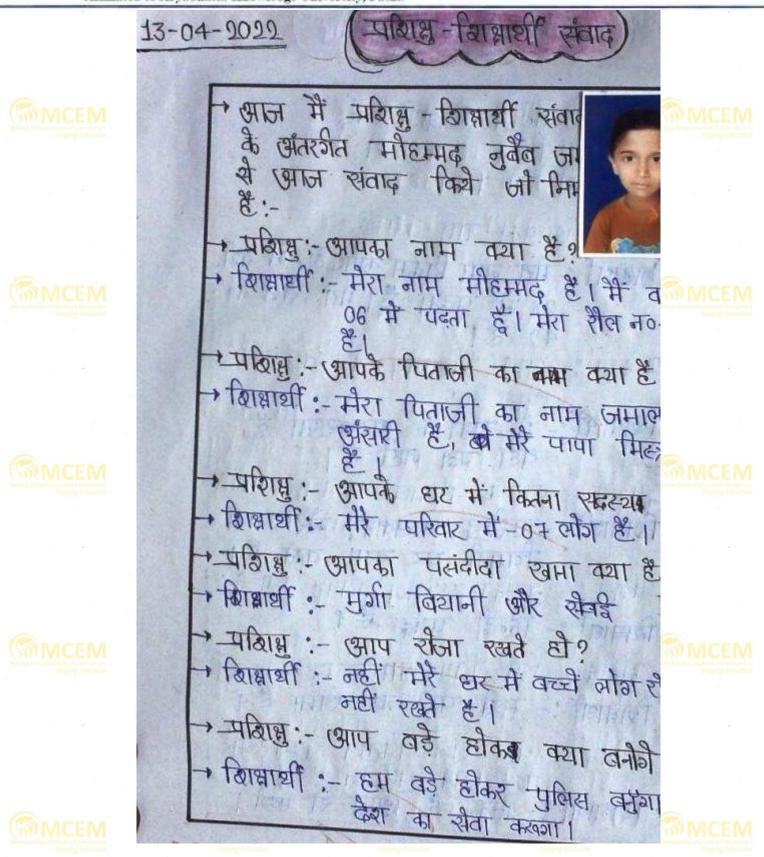








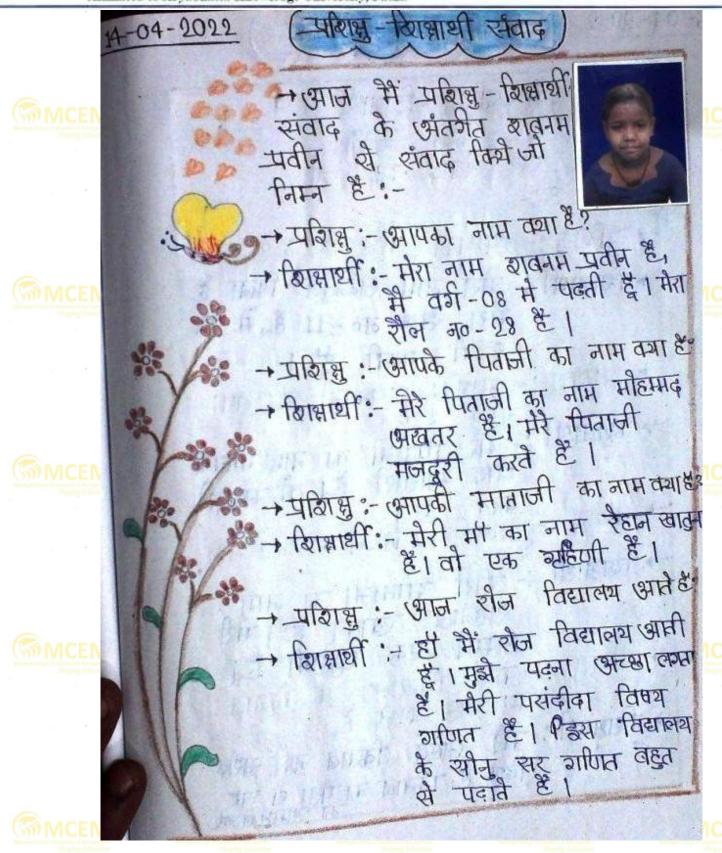








Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

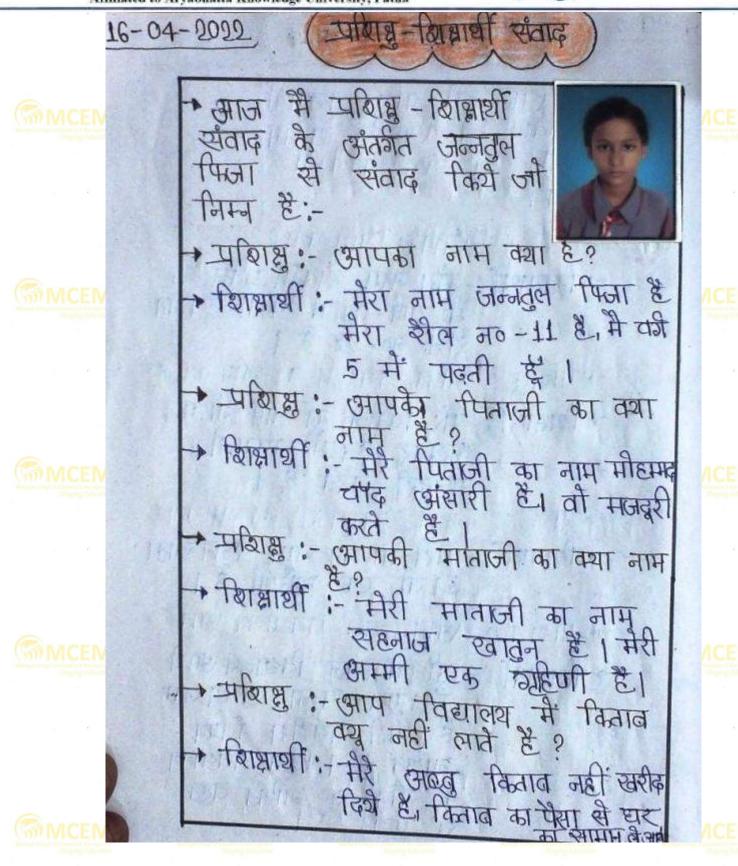


EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in





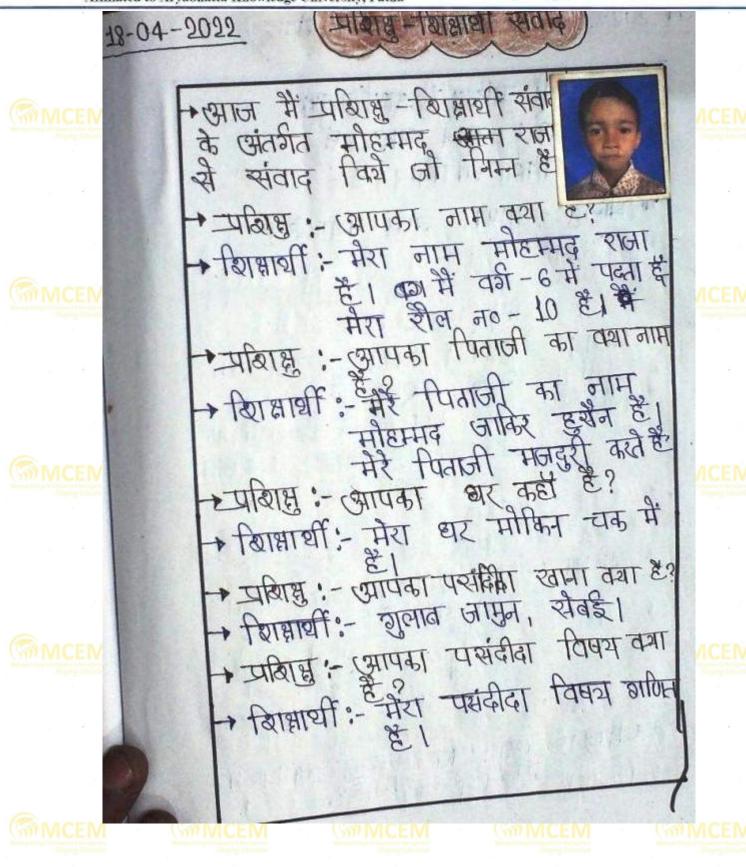
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in











रिश्राष्ट्री श्वंवाद प्रविश्व-14-2022 में प्रविद्य-शिष्ठाधी संवाद सास हरूने आरा से के संतर्भत संवाद किये जो निम्न है:-प्रशिश्व:- आपका नाम क्या F 3 हरने आरा मेरा नाम -- 19181 हूं, मेरा वर्ग - 06 में पढ़ती R ÌŚ ल नंग 9 रोज आना A 1dpl विद्रालिश सटका लगता JOSTE) 61214 **D3D** सम विद्यालय H पदाई off 19FEDT हीता र्वण 1315 मेडम SILAILE ाम्टरा THISD आपके AKI केशा--6 का 25 Q4 693 ईके िंगटे , होकिन किता 3121 1512/209 होहाविश dol US of all डेस आरि







महिास-चिराशाधी श्वाद 2022 आज मै -पशिम् - शिमार्थी संव अंतर्गत पायल कुमारी से निम्न है:-जौ पशिष्ठाः :- आपका नाम क्या 89 - मीरा नाम पाथल ऊमारी है। मैं वर्ञी 7 में पढ़ती है, मेरा शैल forsigit. FTO - 68 E1 :- अगपुका पिताली का नाम क्या है? खुबौध कुमार ठाकुर नाम है। पिता जी जाड़ी चलाते हैं हमलीज के साथ नहीं EI माता का क्या जाम है। रहते - एमापकी सीता देवी -जाम BIBIE है। हमलोग एक राष्ट्रिणी at समय पर खाना वना मेरी मां हमसे बहुत लिए 21 कुरती है। छेकर वया वनीने ? TZIZ आप de UQIS डीक्टर वनगी शिश्वार्थ में (प्राय R 9999 LUC





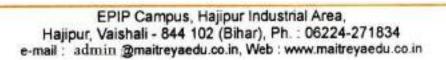


पशिश्व-शिवाधी - संवाद 21-04-2022 1218121 मैंने मशिव -शंवाद सम to अंतर्जत शासमिन Blda किये संवाद GT 6110 पशिष्ठाष्ठ - उनापका माह d211 89 मरा नाम शासग्रिन खातन है। + पशिष्ठ :- आप विद्यालय के पौशाख पहनार क्यू नही आते हैं ? :- मेरे पाप नहीं हैं, पापा नहीं होने के कारण पैसा का विाक्षाधी दिवकत है। जिसके कारण ड्रेस नहीं ल पार्थे। पुशिष्ठ :- आप आते हैं? विद्यालय शज शिष्ठार्धार्धी A रोज विद्यालय आती RT पदना पसंद है। मुझे Hapt पदना अन्छा मद्व में बड़ी होकर लगता &i पुलिश बनुभी * पशिक्ष :- आपका पसंदीदा खाना क्याह शिम्नार्थी :- मीरा पसंदीदा खाना सेवई, मीट और अंडा है?





-04-2022 भशिष्ठ -शिक्षार्थी संवाद • अज मैंने प्रिाह्य- विहाधार्थी संवाद के अंतर्गत रंबीना सातुन से संवाद किये जो निमन है? > पशिश्व :- आपका नाम क्या है? शिश्वार्थी :- मेरा नाम रवीना खातून है। मै वर्ज-06 में पदती है, मेरा शैल न 35 81 - पशिश्च :- आपका पिताजी का नाम क्या है शिव्वार्थी :- मेरा पापाजी का नाम मीर्टमद नस्त्रीब (अंशारी है, मैरे पापा राजमिस्त्री का काम करते है। * पशिष्ठ:- आपकी माताली का नाम क्या है सजदा खातन है। तो एक शिक्षार्थी :-- किताब तुम्हहेपानवम् नहीं है? :- मीरे पापा नहीं खरीकते हैं में वोलती हूँ फिर ग्मी नहीं शिवाधाधी + पशिश्व :- खाप तई होकर क्या वनीने ? + शिव्वार्थी :- में वरे होकर पुलिस बनुगी. देश का स्रोवा करकी।







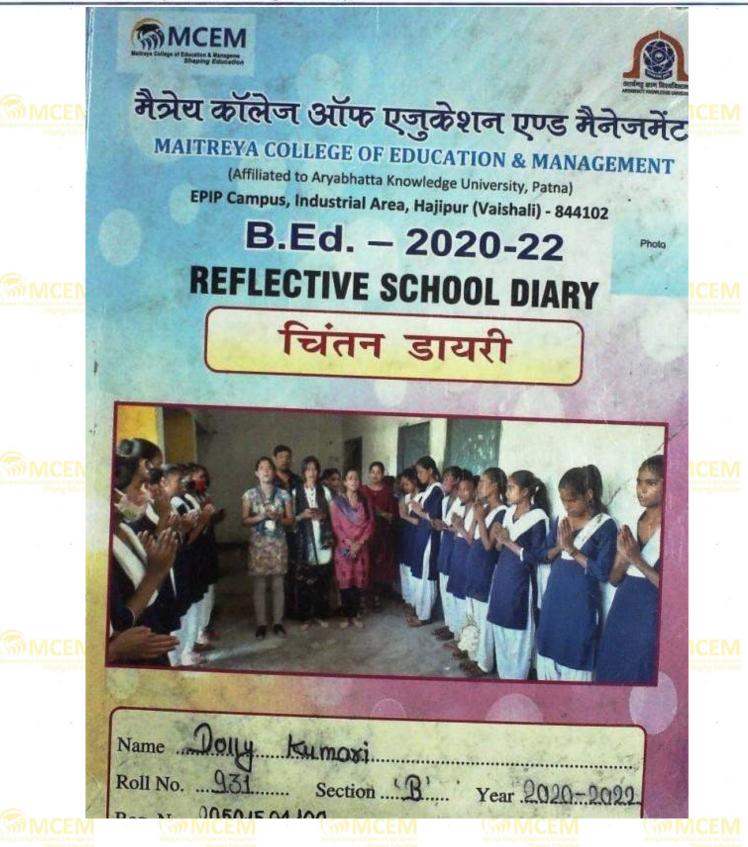






Shaping Education

Maitreya College of Education & Management





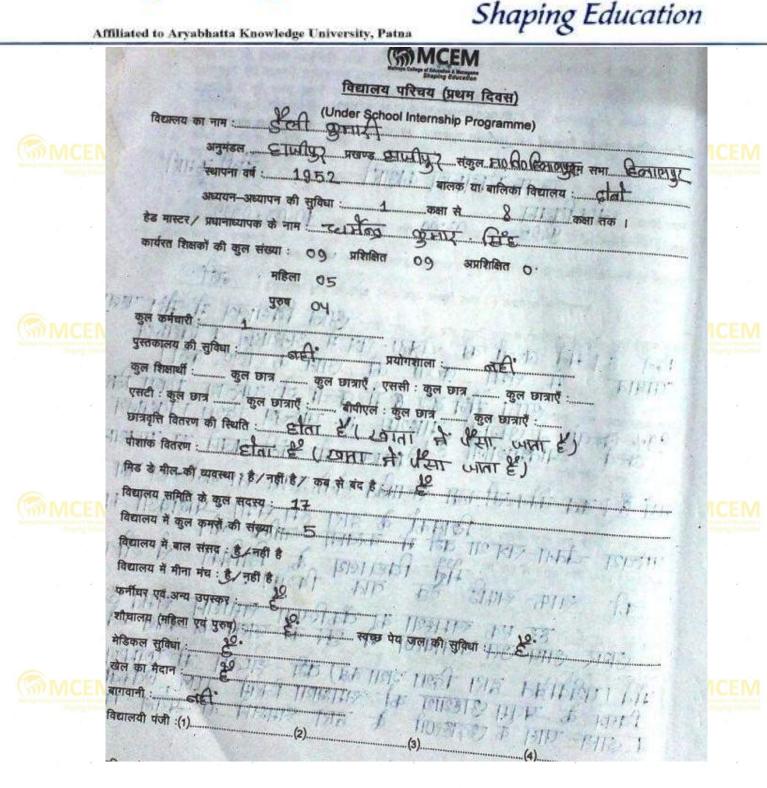


MCEM स्कूल ईटर्नशीप प्रोग्राम (School Internship Programme) विर्देश:-प्रशिक्षु निम्नवत बिन्दुओं से संबन्धित सूचनाओं को भी अपने प्रतिदिन के डायरी कार्य में शामिल करेंगे-डीली कुमारी Idellers To Ho बटित विद्यालय का नाम प्रशिक्ष का नाम Colle विद्यालय में उपस्थित रहा : 9:25 बजे से 03:00 तक ATE : 10.03. 9099 विद्यालय की जिन गतिविधियों में भाग लिया :- चेतना सत्र 🖓 कक्षा शिक्षण (У मध्याहन भोजन () सांस्कृतिक कार्यक्रम () कक्षा शिक्षण अवलोकन (८) अन्य कोई गतिविधि The अल आपने किनू-किल् गतिविधियों में भाग लिया और क्या- क्या किया : भाजा मेरा पहल विद्यालग do l OTT - 77 đ denau DIAIG ATT QZI मिए TRAD माज सबसे अच्छा क्या लगा अजि मैंने वर्श R Ц GTT 9 Gert का मावधान आज क्या अच्छा नहीं लगा चल पता ह नहीं TH सं केशा स्वामित 1613 dr मविाक्ष में का de भारके अनुसार आज क्या होना चाहिए था छिछिकी सभी हारा 8H 2111 पश्चिंग - चेतना- सत्र था वर्ग करवानी वाहिए Н 020 से शीचल आज आपने किन-किन लोगों से बात की : वामका वद्यालय a dr G21 2-14 वैकल्पिता समाधान शमत है। स्मास्था क एक आज जो आपने सीखा : . . . ज़ाली का मबास करते हैं। खुद की वातावरण में आप उस **SICHE** आज आपको आपको आपके द्वारा पर्यवेक्षित कक्षा को पढ़ाने को कहा जाता तो आप उस विषय को अलग ढंगू से कैसे पढाते राधा करा वर्ग USIDRUI यतम 621 Readers समभाय do DDT 921 1021 सम **U**21R RR 5 3618701 do. - UK अप्तर-Dave Kumpi





Maitreya College of Education & Management









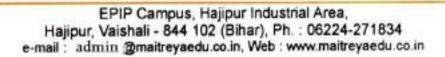






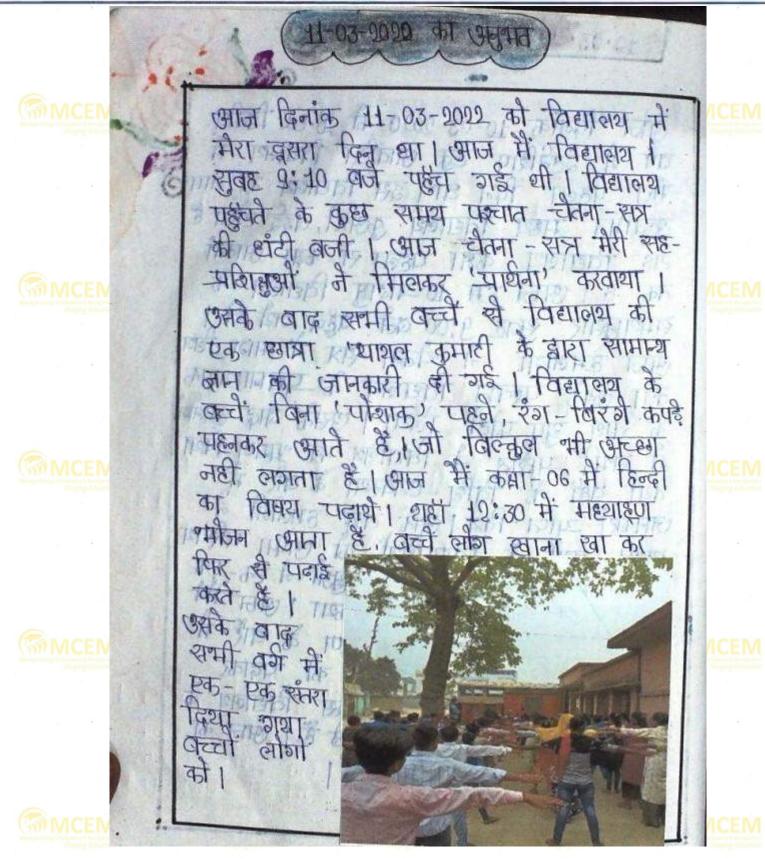












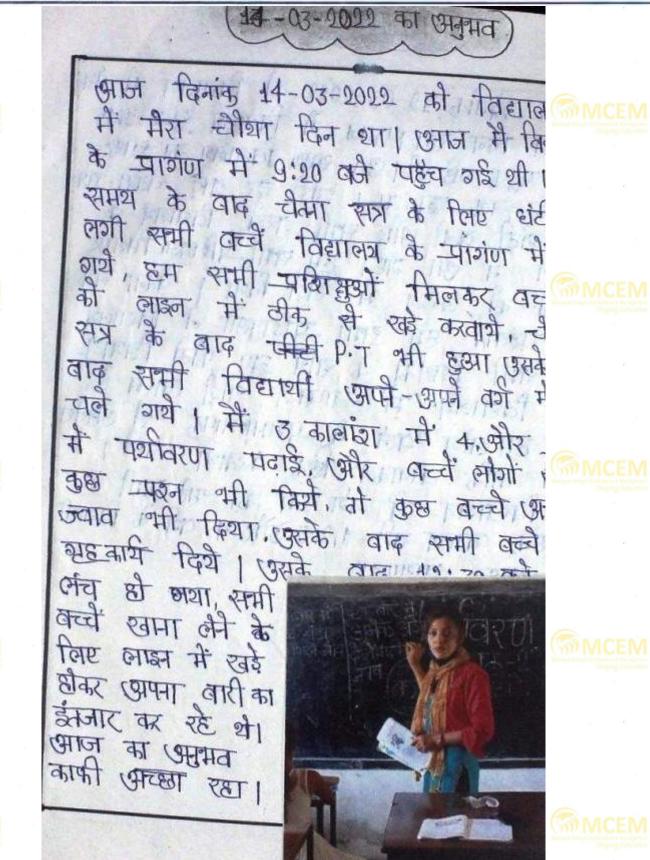








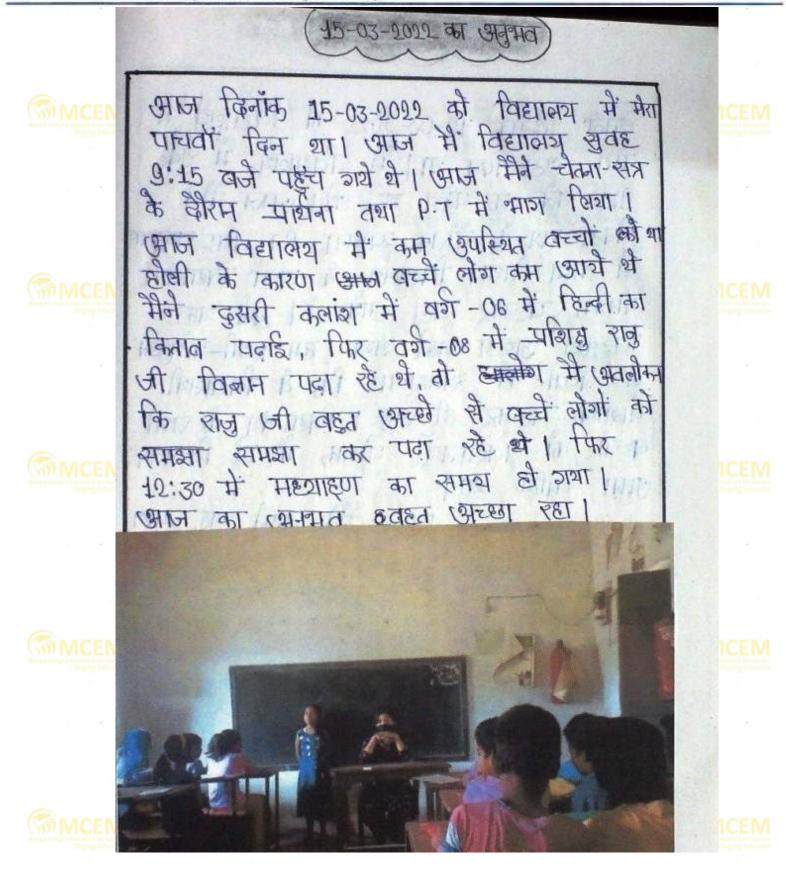








Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

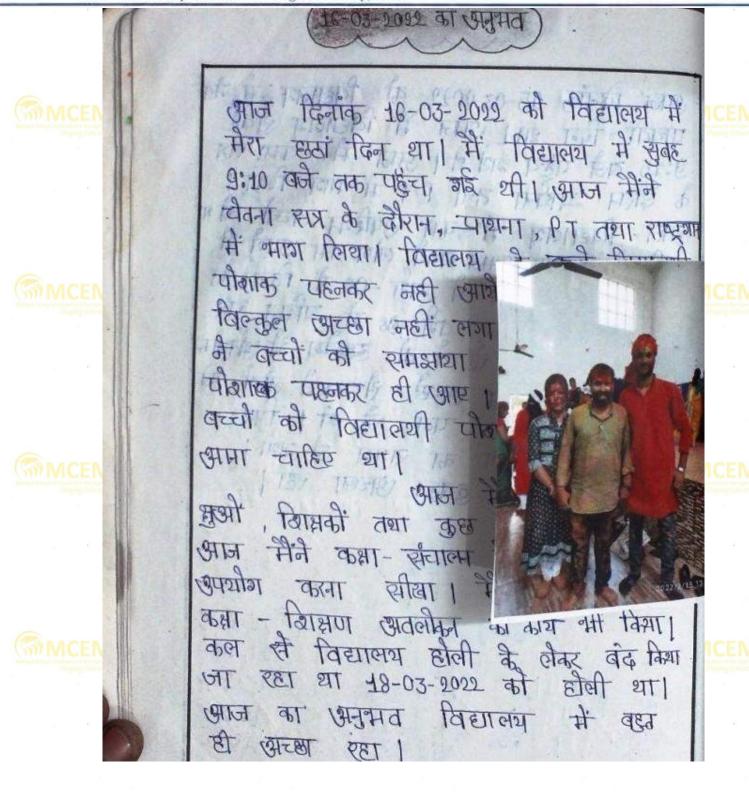


EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







MCEM





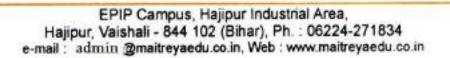
EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in





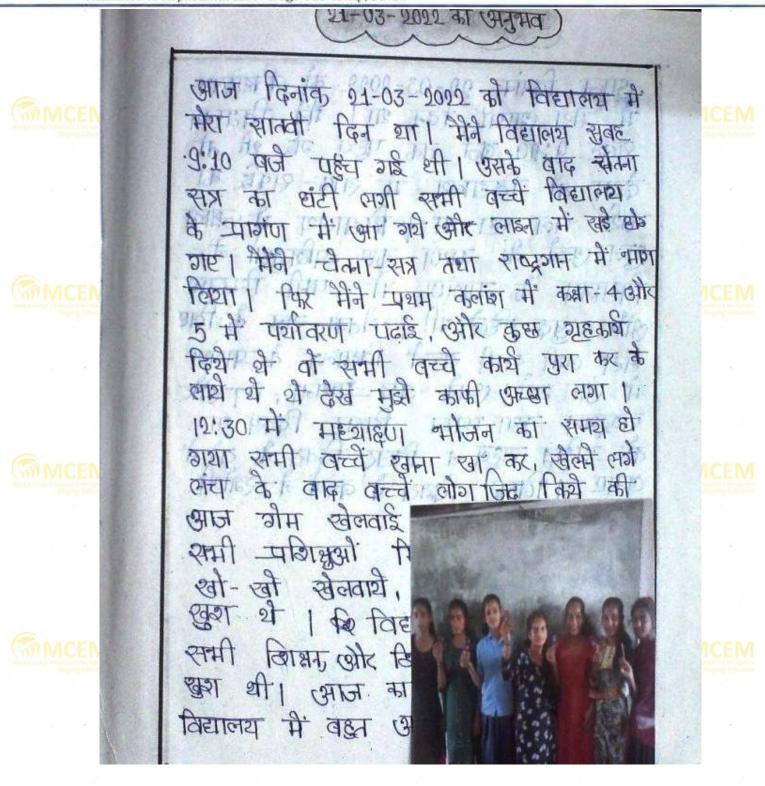
DHPHU 16 200 16-03-2022 को विद्यालय में आज दिनाक मेरा छठां दिन था। मैं विद्यालय में स्वह 9:10 वर्जे तक पहुंच कई थी। आज मिंने वेतना सत्र के दौरान, न्याधना, १७ तथा राष्ट्रजा में भाग लिया। विद्यालय के वच्चे विद्यालयी पोगाक ' पहनकर नही आर्थ थे। मुझे यह विल्कुल खाच्छा नहीं लगा । हम समी-पशिक्षओं ने जच्चों को समझाशा कि वे विद्यालयी पीकारक परन्तर ही आए । विद्यालय के समी कच्चों को विद्यालयी पोबास में ही विद्यालय त्ममा चाहिए 211 A.B 1. 1495 आज मेंने सापने सह -प्रांश मछा विासकों कुछ कचों वात किये। भी तथा मैंने कहा - संचालम के EIR, दौरम TLM का अपयोग वीखा । मैंगे कता कहा गा का कार्य भी किसा। खातलीकन विाशण daT 中 कल विद्यालय होली के लेकर वेद किया 139 UTT था 18-03-2022 की होनी 211 भाज अनुमत विद्यालय का it वस्त ষ্ঠ भिरष्ठा 139



















22-05-2012

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

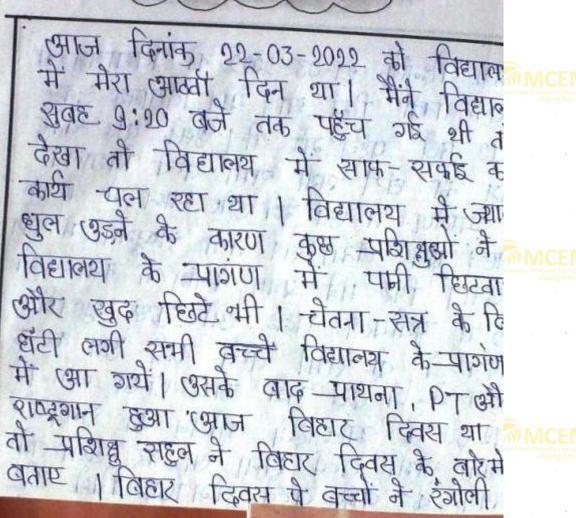












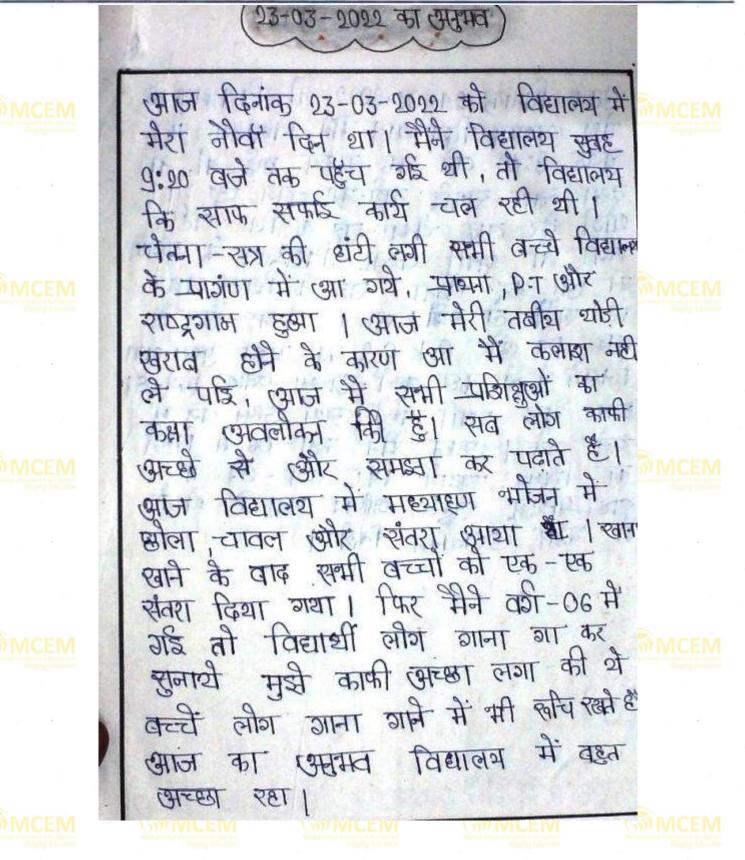
का उन्मात



EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

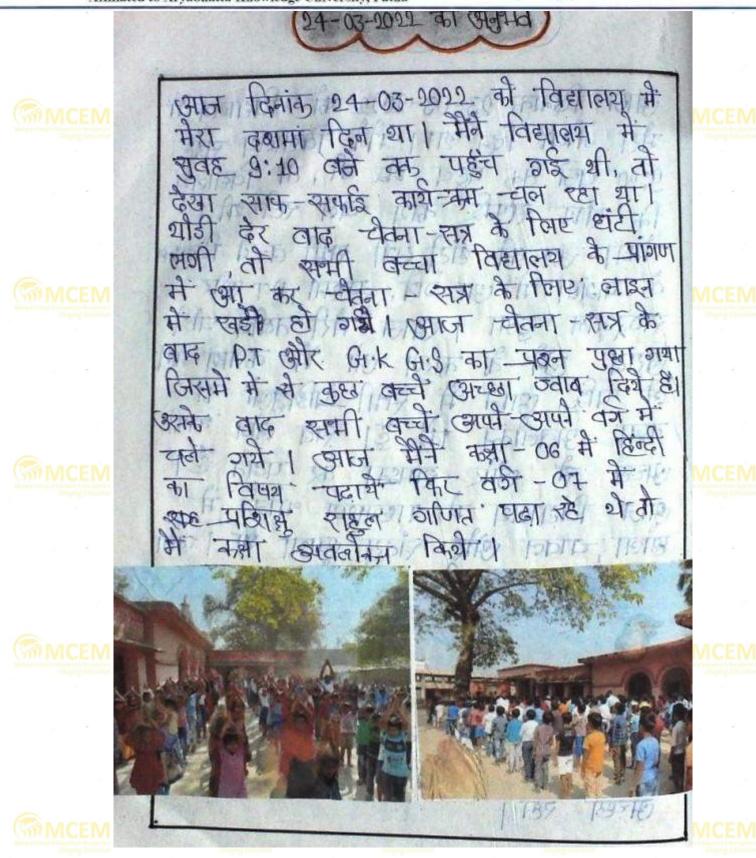












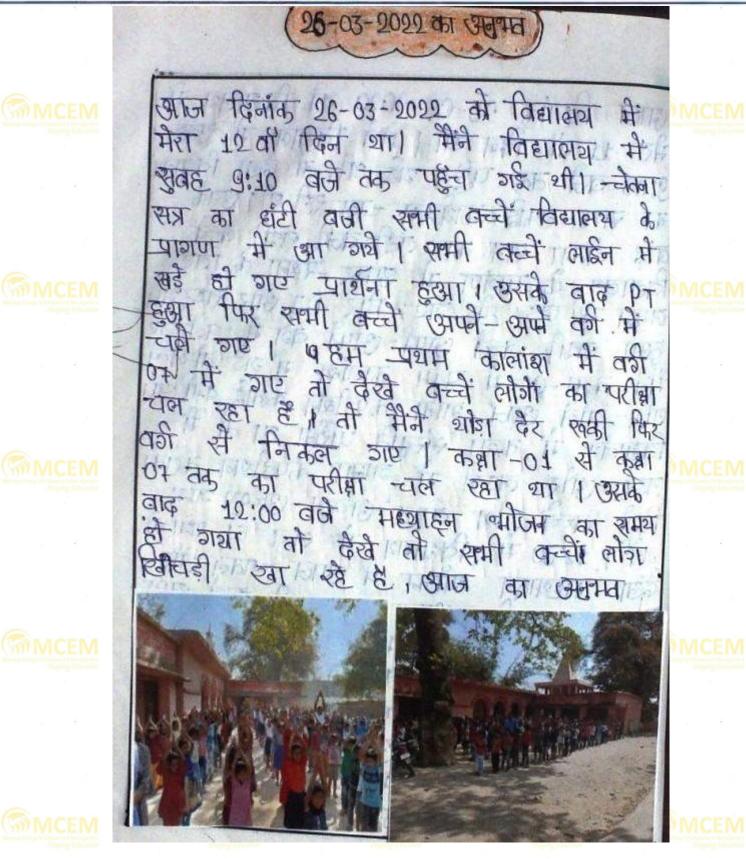








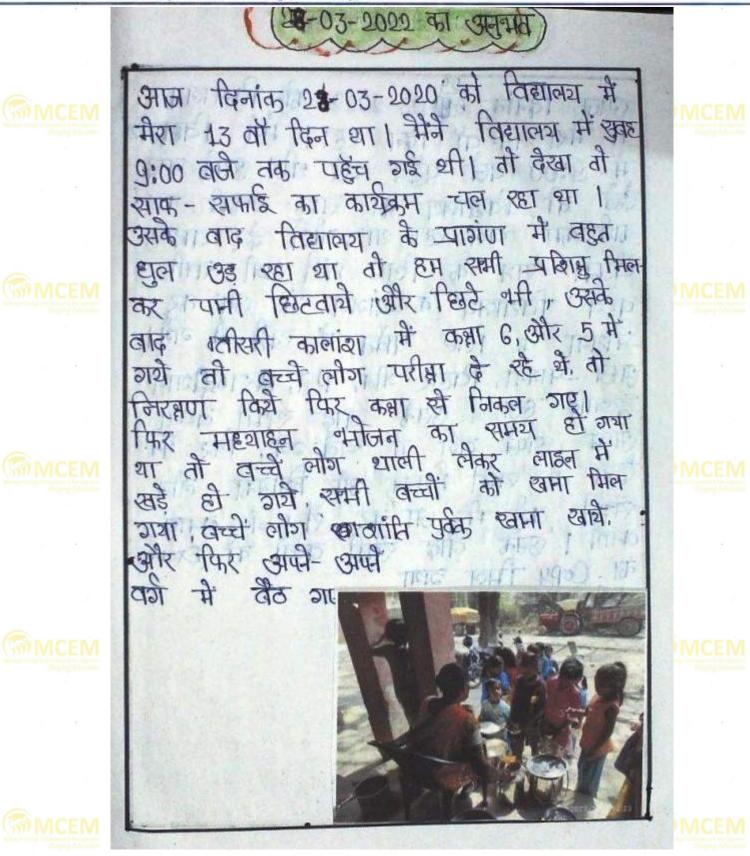








Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







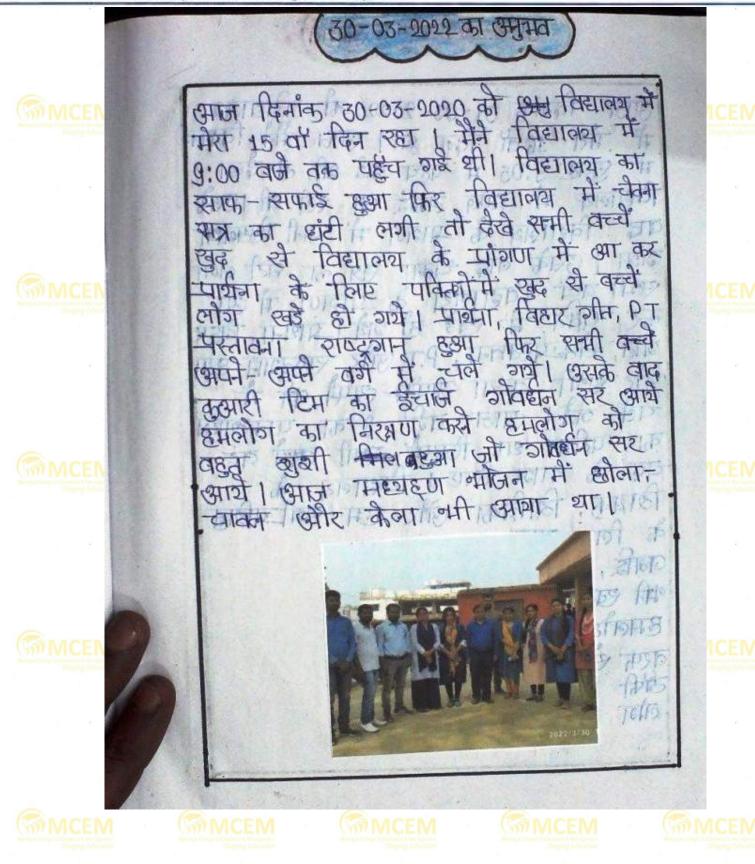
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna









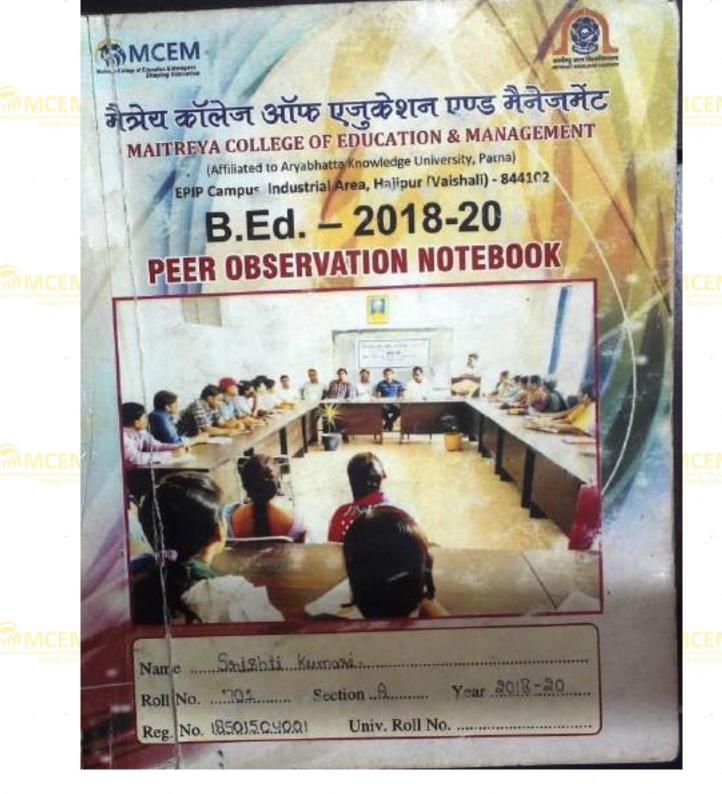








Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

















Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

		an ales	nship Progra					
3	मरिष्यु		A a A	राज्यम	हार्न	पर		
	विद्यालय का नाम	राउन उच्चतर माह्य	Heren te	THE NO.	11.5	1/1	A	
	minutest Q	در 10/19 ماند (Date) 12/10/19	तांश (Period) :	18t	अवधि (()uration):	45 1400	5 6
~	Automash 7	000	SHT HE	Tonick		जाट ाय	के निय	HI HI
	विषय (Subject):	भौतिकी आयापः उन्दे	Haper	t (inhore.	ake t			नाच
8.2	किंबाज जीजल नि	र्धारण मापनी (Teaching Skills Rating Sca	le)				/	
MCEN	and the second second	অ্যবস্থাৰ কথান	Excellent	V. Good	Good	Average	Weak (E)	ICE
ings (chap) it likes and the spectrum Shaping Educat	খনীয়ান		(1)	(6)	(C)	(0)	141	Veal (E)
11	A) प्रस्तावना	1. वासा से संबंध स्थापित करना	-	1-	-			400
1 12	M	2. पाठ में रुचि पैदा करना	~	~				
		3. पूर्व झान से जोडनेवाला	-	1.0000000000			1 States	
	the second	4. छात्रों को अभिप्रेरित करनेवाला		5		1000		1. Anna
	1 contraction	 पूछे गए प्रक्ष और उनका सार 						1
12		 विषय का अन्य विषयों से संबंध 	V	1	~			-
1	(8) उद्देश्य कथन		1	-	-		2	
	(द) प्रस्तुतीकरण	1.पाठश्वरसु की निर्धासित		1				T
MCEN 1	(c) we 2met a				1			
and the second second		समयानुकूलता 2.पाठ्यवस्तु के स्पष्टीकरण का स्तर		1 1 1				Shaping b
		3.शिक्षण-सहायक-सागग्री का प्रयोग	-	-	-			1
	1	4.प्रयुक्त खदाहरणों की विषय के साथ		12	1 million	-		
	S	समतता इ.स.च सहमागिता (Participation)	1	~	1	X		-
Sal	Mohan	CONTRACTOR CARDINAL INCOME	-		17		LU DE	11-12
	W I	- Caldis anicia	Sec. Sec.		1	PLE	1 CON	
1.1		A REAL AND A	and the second	1	1~	Section of	1	100
	80			11	A NY SA		V	100
1.5		a.स्यामपह कार्य		V	14		4	ICE
MCEN	1 1	C. Service Contraction						
MCEN	ander	इ.पुनर्दलन का झमोग	-		1x	1	- A	Contraction of Contraction















Maitreya College of Education & Management

	ALCEIN a Education & Managevel schapping Education	य कॉलेज ऑफ एजुकेश सहपाठी अवलोकन अनुसूची Under School Inter	I cci -		Schedu		AT A COLOR	
SP MCEN	प्रशिख लहम विद्यालय का नाम वर्ग (Class): 102	टाउन उच्चतर माट्या. काल (Date) 14/10/19 काल	নাহা (Period) :	1.84	अवाध (प	luration)	5. A.	ICEN Barren Branner Stagereg Estatoria
2	विषय (Subject): शिक्षण कौशल नि	अंग्रेजी अध्याय: The Bet	le)	V. Good	Good	Average	Weak	
	कौशल	व्यवहार कथन	Excellent (A)	(8)	(C)	(D)	(E)	
MCEN		1. कक्षा से संतंध श्यापित करना	Server Mary	V	1000	- And at		ICEN
Shaping Education	 A) प्रस्तावना 	2. पाठ में रुति पदा करना		Carl Sta	11			Shaping Educat
		3 पर्व ज्ञान से जोडनेवाला		1 and the second	~			
		4. छात्रों को अगिन्नेरित करनेवाला		1	5			
		5. पछे गए प्रश्न आरे उनका स्तर		-	-			1
		6. विषय का अन्य विषयों से संबंध		V				
	(8) उद्देश्य कथन	उद्देश्य कथन की स्पष्टता		an Gine	~		-	
BACEN	(C) प्रस्तुतीकरण			~	~	trailer.	4	
MIVICEN			10000			1		I ICCN
Shaping Lawrence		3.शिक्षण-सहायक-सामग्री का प्रयोग	E COL	-	~			A starting the second
	1 bunn	4.प्रयुक्त उदाहरणों की विषय के साथ संगतता		No. 1	~		-	
	Show	5.छात्र सहमागिता (Participation)	I Treaded	~	DO ST		5	TC .
		6.शरीर संचालन	1.1.1.1.1.1	e corda	1-	の生	R	155
		7.छात्रों से सहयोग (Co-ordiation)		~	in the second		8	1
		8.श्यामपट्ट कार्य						
MCEN	100			and second	181 - TO			ICEN
naya Comp of Calendaria & Davidge Shapsing Educat	ante	9.पुनर्बलन का प्रयोग			10		X I	Shaping Educat
		मणा/सुझाव- को अंग्रीजी विषम् न के मा १	लिए का	P Col s	ह./& सहपार्ठ	र्म्स्ट्रोप विषयव ो अयलोकन	कर्ता	





Maitreya College of Education & Management

Shaping Education Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर सहपाठी अवलोकन अनुसूची (Peer's Observation Schedule) **Under School Internship Programme** 115500 1914P पूजा कुमारी (712) प्रशिक्ष :.. विद्यालय का नाम टाउन उच्चतर माध्यामिक विद्यालम, दाजीपर अवधि (Duration): 45 मिनत वर्ग (Class): 9 1 दिनांक (Date): 15/10/19 कालांश (Period): IInd. विषय (Subject): जीवविज्ञान अध्याय: 01 प्रकरण मन्नायः कीश्रीका एक आचारञ्जूत ईकाई शिक्षण कौशल निर्धारण मापनी (Teaching Skills Rating Scale) Excellent V. Good Good Average Weak व्यवहार कथन कौशल (8) (C) (D) (E) (A) 1. कक्षा से संबंध स्थापित करना प्रस्तावना A) 2. पाठ में रुचि पैदा करना 3. पूर्व ज्ञान से जोड़नेवाला 4. छात्रों को अभिप्रेरित करनेवाला 5. पछे गए प्रश्न और उनका स्तर 6. विषय का अन्य विषयों से संबंध V उद्देश्य कथन की स्पष्टता (8) उद्देश्य कथन 1.पाठ्यवस्तु की निर्धारित (C) प्रस्तुतीकरण समयानुकुलता 2.पाठचवस्तु के स्पष्टीकरण का स्तर 3.शिक्षण-सहायक-सामग्री का प्रयोग 4.प्रयक्त उदाहरणों की विषय के साथ संगतता 5.छात्र सहमागिता (Participation) 6.शरीर संचालन 33 7.छात्रों से सहयोग (Co-ordiation) ८. श्यामपट कार्य 9.पुनबेलन का प्रयोग m सामान्य टिप्पणी / सुझाव- मीम आस-पास के पातावरण भीइना -गाहिए। E./ Snighti Kumasi सहपाठी अवलोकनकर्ता



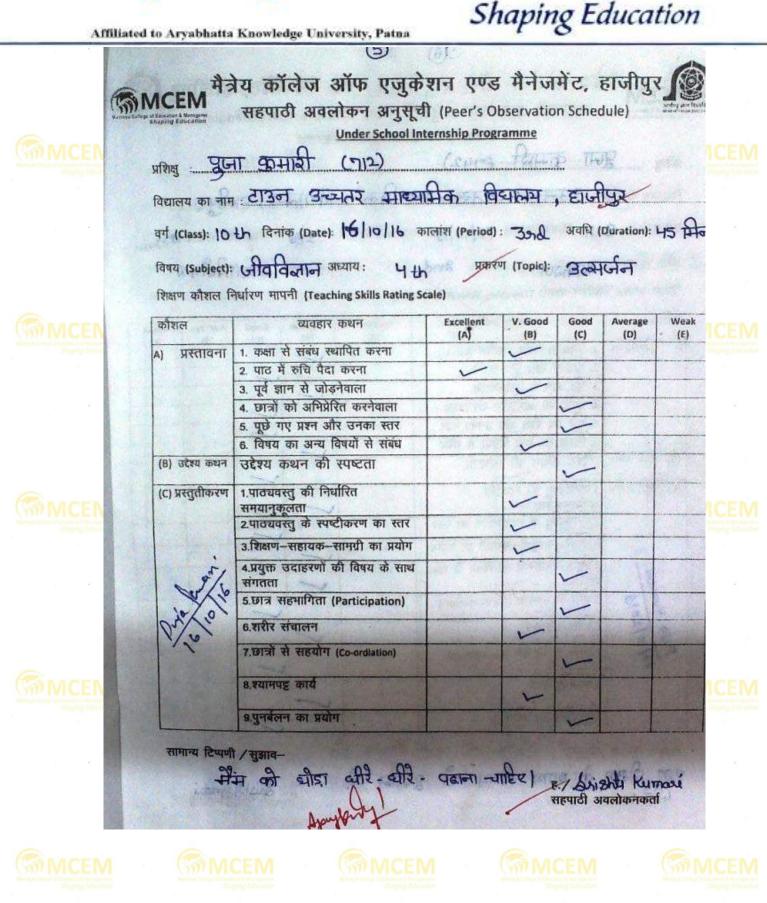


		bhatta Knowledge University, P: त्रिय कलिज आफ एजुव सहपाठी अवलोकन अनुसूर	त्रशन एण वी (Peer's)	Observati			. Tal	E
		Under School In	nternship Pro	gramme				
MCEN		and the second	C C	The second of		ug		ICF
	विद्यालय का ना	म टाउन उच्चतर माळ	वामेक वि	ाद्यालम् ,	, हाजी	नुर	ana para ana di	Shaping
	वर्ग (Class): 9	14h दिनांक (Date): 16/10/16 व	हालांश (Period	1: 300	अवधि	(Duration):	45 Min	
	All the stand					0.30(1)	1110	
	विषय (Subject)	CIICADUI		रण (Topic):	, Nou	n	-	
	शिक्षण कौशल	निर्धारण मापनी (Teaching Skills Rating S	cale)	-				
	कौशल	व्यवहार कथन	Excellent	V. Good	Good	Average	Weak	2
	A) प्रस्तावना	1. कक्षा से संबंध स्थापित करना	(A)	(8)	(C)	(D)	(E)	
MCEN	a states a	2. पाठ में रुचि पैदा करना		~	Same -	Sec. 2		ICE
Shaping Education		3. पूर्व ज्ञान से जोडनेवाला		V				Shaping
		4. छात्रों को अभिप्रेरित करनेवाला		14	100			
	and seal	5. पूछे गए प्रश्न और उनका स्तर		1 Contraction	1.11			2
		6. विषय का अन्य विषयों से संबंध		-	5			
	(8) उद्देश्य कथन	उद्देश्य कथन की स्पष्टता		5		1.00	100	
	(C) प्रस्तुतीकरण		1 2 2 2	1.145 1.140	-	No.	Arr N	
	let sedendst-t	1.पाठचवस्तु की निर्धारित समयानुकूलता					-	1
	C PUE CA	2.पाठ्यवस्तु के स्पष्टीकरण का स्तर		V	1999			3
MCEN		D	and the state	A CONTRACT	~	1000		Inc.
Shaping Laborat	: buman	4.प्रयुक्त उदाहरणों की विषय के साथ	63.00	1-		Contraction of the		Channel I
	Lavor Pur	संगतता						3
	T Internet	5.छात्र सहभागिता (Participation)		~		17	-	
		6.शरीर संचालन	NEW TO	- Alexander	~	-		
		and the second	14.4			1		10
					at include			100
	-21-20	7.छात्रौं से सहयोग (Co-ordiation)	/		States and a state	1000	and the second s	
					-			
	1	7.छात्री से सहयोग (Co-ordiation) 8.श्यामपट्ट कार्य			-			
					-			





Maitreya College of Education & Management







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

		ा कमारी (११२) टाउन उच्चतर माच्या	and the second se		and the second second second			
	STORESTO PROPERTY						0	8
		th दिनांक (Date): 16/10/16 क					45 मन	a
	विषय (Subject):	जीवविज्ञान अध्यायः ५ म	प्रकर	ण (Topic):	307	र्जन		
		धरिण मापनी (Teaching Skills Rating Sc	and the second se	Al anne da		A MILLING		
			Excellent	V. Good	Good	Average	Weak	-
SMACEN B	कौशल	व्यवहार कथन	(A)	(8)	(C)	(D)	- (E)	ac
	A) प्रस्तावना	1. कक्षा से संबंध स्थापित करना	Section 1	1-	ally of the	L BONKS		IL.
Shaping Charter		2. पाठ में रुचि पैदा करना	~		1 and		1.4	Shaper
		 पूर्व ज्ञान से जोड़नेवाला 	Contraction of the second	1				
		4. छात्रों को अभिप्रेरित करनेवाला	6.6450	S M M	~			
		 पूछे गए प्रश्न और उनका स्तर 	505 0012	10.00	~			
		6. विषय का अन्य विषयों से संबंध	1. 19 1 1 10	1	Sec. 18	-		
1.12	(B) उद्देश्य कथन	उद्देश्य कथन की स्पष्टता		10,195	1-	1.58		
	(C) प्रस्तुतीकरण	समयानुकुलता		~			2	
MCEN		2.पाठचवस्तु के स्पष्टीकरण का स्तर	90 1	1-	10.000			
Shaping Educat	5 (B) उरेश्य कथान (C) प्रस्तुतीकरण 2 5 7 1 2 2 3	3.शिक्षण-सहायक-सामग्री का प्रयोग		12		1.14	Sec. 4	Shape
	· F/2	4.प्रयुक्त उदाहरणों की विषय के साथ संगतता			~			
	1 1 10	5.छात्र सहभागिता (Participation)	Contraction of the	The Prints	1.			
	Or is.	6.शरीर संचालन		1				
	1/0	7.छात्रों से सहयोग (Co-ordiation)	the second second	F		and the second		
10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 1	A REAL	7.0131 H HE41-1 (Co-ordiation)	1 Same	and the second	1-	and the		
	A State of the state	8.श्यामपट कार्य			100			
MCEN	And And And		ne Beanne	12	all and all	1200 S		10
Shaping Line and		9.पुनर्बलन का प्रयोग		N PARTY	-			Shaper
	सामान्य टिप्पर्ण भी	1/सुझाव मं को द्यीहा दीरे- दीरे- Apertonia	पदाना -	माहिए।	स्त्र किंग सहपाठी उ	अर्थ Kun वलोकनकत	nasí	





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

MCEN	5	<u>Under School Int</u> त्रिण मीहन			The	â		
विद्यालय	का नाम	साउन उच्चतर माद	मामक	विद्यालः	ч, е	ाजापुर		
्रवर्ग (Clas	s). 0.1	h दिनांक (Date): 17/10/19 क	ालांश (Period)	: 1.84	अवधि ((Duration):	45 Ak	A
विषय (S	ubject):	अग्निनी अध्यायः उन्हे.	प्रकर	ਗ਼ (Topic):	वल त	াথা সাম	d lb	4
शिक्षण व	गैशल नि	नेर्धारण मापनी (Teaching Skills Rating Sc	ale)	poper de				
कौशल		व्यवहार कथन	Excellent (A)	V. Good (B)	Good (C)	Average {D}	Weak (E)	
A) प्रस	तावना	1. कक्षा से संबंध स्थापित करना	~					
		2. पाठ में रुचि पैदा करना	1	1-				and the second
		3. पूर्व ज्ञान से जोड़नेवाला		1-				1
	4 5 (B) उद्देश्य कथन ए	4. छात्रों को अभिप्रेरित करनेवाला	CON-Sec	~				
		5. पूछे गए प्रश्न और उनका स्तर		~				1
1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1		6. विषय का अन्य विषयों से संबंध	(SPA	1.000	1-	100 Martin	Service and	
(B) उद्देश		उद्देश्य कथन की स्पष्टता		-		The second	5.57	
(С) प्रस्तु	तीकरण	1.पाठ्यवस्तु की निर्धारित समयानुकूलता		-				
WICEN		2.पाठचवस्तु के स्पष्टीकरण का स्तर	27 71 10	1	1-	- 1 A	s /1/	ILC.
Shaping Lakers	5. (B) उद्देश्य कथन (G) (C) प्रस्तुतीकरण 1. सा 2.7	3.शिक्षण-सहायक-सामग्री का प्रयोग	PAGE STOP	12	-	5	18	Shaping
matam.		4.प्रयुक्त उदाहरणों की विषय के साथ संगतता		-		1 .	No.	
10		5.छात्र सहभागिता (Participation)	P. Markan		~	2.2	1	
2	5)	6.शरीर संचालन		1.			TTO THE	
	-	7.छात्रो से सहयोग (Co-ordiation)	Contraction and Print	1V			the second second	
The second		T.OTAL & HEALT [CO-DIMATION]	and the states	1 1 1	~	- Andrews		
g	Ë				the second second second	a strend more than the second second		£11
the	111	8.श्यामपट्ट कार्य		RE	2 Martin			
MCEN	111	 8.श्यामपट्ट कार्य 9.पुनबिलन का प्रयोग 		-				IC











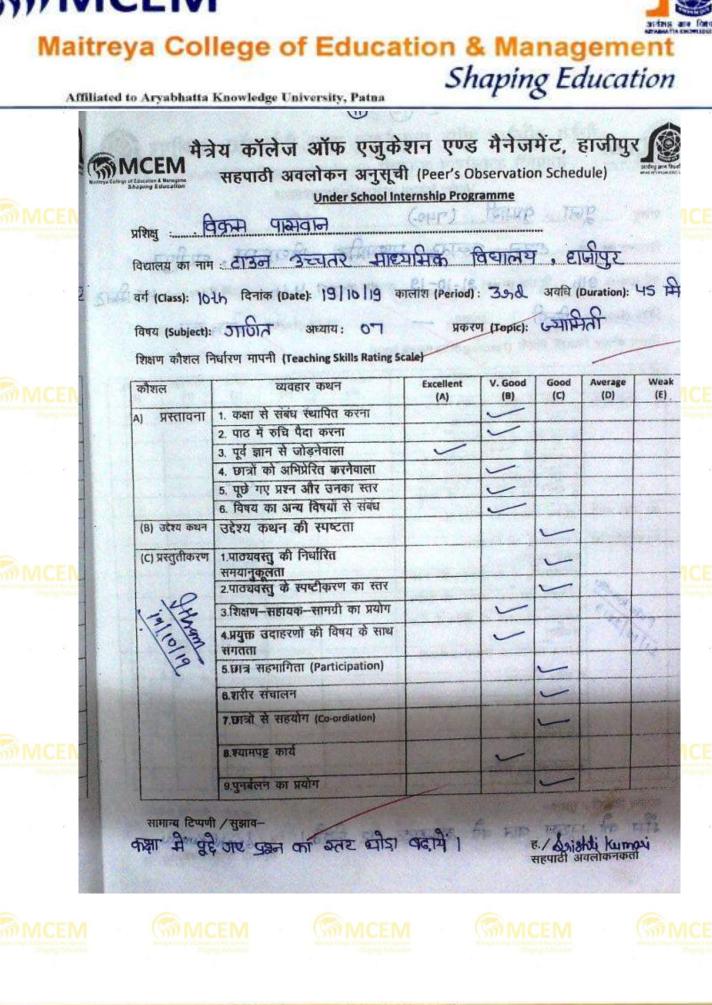


Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

	प्रशिक्षः	Under School Int ज्वण -मीहन	CITISTING PTOR		100 P	the second		
Shaping bilarat		राउन राउट्यतर म	त्याधिक	विया	लम ,	दाजीपर		
					and the second		-	
		भे दिनांक (Date): 18/10/19 क						
	विषय (Subject):	आतिकी अध्यायः उडवे	्र प्रकर	ण (Topic):	वल (VEIT D	Ad	
		भर्धारण मापनी (Teaching Skills Rating Sc			Az			
			Excellent	V. Good	Good	Average	Weak	
MCEN	कौशल	व्यवहार कथन	(A)	(B)	(C)	(D)	(E)	
Shaping Laboration	A) प्रस्तावना	1. कक्षा से संबंध स्थापित करना	and the second	~			i Salary	
	1. 1 2 M	2. पाठ में रुचि पैदा करना	~	01978	199	1		
	A Standard	 पूर्व ज्ञान से जोड़नेवाला 		1-	13 105			
		4. छात्रों को अभिप्रेरित करनैवाला		-	E IL			
		5. पूछे गए प्रश्न और उनका स्तर	S. J. M.	1 - 1 - 1	-			
		6. विषय का अन्य विषयों से संबंध		~	1	Constant.	No.	
	(8) उद्देश्य कथन	उद्देश्य कथन की स्पष्टता			~			
MCEN	(C) प्रस्तुतीकरण	समयानकलेता			~			
a Comp of Constant & Star Spec	Se Su desantes	2.पाठ्यवस्तु के स्पष्टीकरण का स्तर	at a se	1-	1		In the second	
-	A PARTY AND A	3.शिक्षण-सहायक-सामग्री का प्रयोग	12.76	~	1			
	Mahaun	 मयुक्त उदाहरणों की विषय के साथ संगतता 			~			
1	510	5.छात्र सहमागिता (Participation)	The West	12	1.2.2.1	The ch	1.28	
	192 151	6.शरीर संचालन		1	-	L'ALLE		
	0118	7.छात्रों से सहयोग (Co-ordiation)			-	1 3/	25-2	
MCEN	faitshara 181	8.श्यामपट कार्य		in	Lag unt			
24	1 1/	9.पुनर्बलन का प्रयोग	ALL ALL	1-			THE ATER	











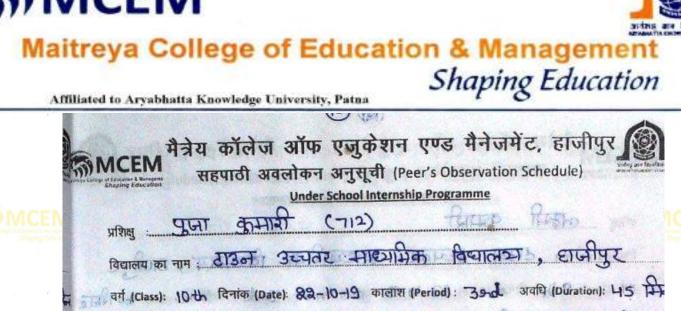


Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

MCEN	उत्तमहता कुमारी	nternship Prog	Guine	Reg	To		
्र त्रियान् द्र द्वारा प्रसिक्ष :		- Contraction	वियालय		Aus		
	ना नाम राउन उच्चतर माह				C.S. C.S.	•	
वर्म (Class): 10th दिनांक (Date): &1-10-19	कालांश (Period)	: 39d	अवधि (Duration):	454	Ť.
			0			च्चा	
विषय (Sul	bject): जाणित अध्याय: 07	प्रकर	T (Topic)	पत्रिः	मभ क		
शिक्षण कौ	शल निर्धारण मापनी (Teaching Skills Rating	Scale)					
कौशल	व्यवहार कथन	Excellent	V. Good	Good	Average	Weak	
WICEN		(A)	(B)	(C)	(D)	(E)	ICE
A) प्रस्त			1-				2 Shaping La
	2. पाठ में रुचि पैदा करना			-	and the second second		
	3. पूर्व ज्ञान से जोड़नेवाला		~				-
	4. छात्रों को अभिप्रेरित करनेवाला		1 Contraction	5			-
	5. पूछे गए प्रश्न और उनका सार	and the second second		-			-
	6. विषय का अन्य विषयों से संबंध			~		-	
(8) उदेश्य	कथन उद्देश्य कथन की स्पष्टता		1-	12.4	Sec. 2		
(С) प्रस्तुत	ीकरण 1.पाठ्यवस्तु की निर्धारित समयानुकूलता	-	1-	and the			
VICEN	2.पाठचवस्तु के स्पष्टीकरण का स्तर	The second second	1-	C. C. C. L.			TCE
Shaping Edition	3.शिक्षण-सहायक-सामग्री का प्रयोग	and the second se	1	Protection	0		Shaping Edi
e l	4.प्रयुक्त उदाहरणों की विषय के साथ		15		130.2	JII WARE	
Kunaa)	संगतता		12	The seal		144	
	, 5.छात्र सहमागिता (Participation)	The second second	11.1.10.0	-	1. 1997	to Tim	
5	2 6.शरीर संचालन			and the second		-	-
4	And the state of the	A Contraction	1 BELLEN	1-	Section 1	-	
	7.छात्रों से सहयोग (Co-ordiation)	a substant	A A A A A A A A A A A A A A A A A A A	1-	Sections		
1 00		and the second second				ter and the	
100		ALL ROSEANWARDING	CONTRACTOR OF THE OWNER OF				
EN I	B. श्यामपट कार्य			M		1	ICE







विषय (Subject): जीवविज्ञान अध्याय: 04 प्रकरण (Topic): 2वा२२२२ रंव रेगा

शिक्षण कौशल निर्धारण मापनी (Teaching Skills Rating Scale)

कौशल	व्यवहार कथन	Excellent (A)	V. Good (B)	Good (C)	Average (D)	Weak (E)
A) प्रस्तावना	1. कक्षा से संबंध स्थापित करना	100	~	100 M	ALSON A	
	2. पाठ में रुचि पैदा करना	1.0	~	Stella	Concession of the	
	3. पूर्व ज्ञान से जोड़नेवाला		~	1000		
	4. छात्रों को अभिप्रेरित करनेवाला	in menefities	~			te yet
2 10 10	5. पूछे गए प्रश्न और उनका स्तर	0.2.01	~	193		T.
Contraction of the	6. विषय का अन्य विषयों से संबंध	1000	1 2 3 3	-		
(B) उद्देश्य कथन	उद्देश्य कथन की स्पष्टता	1000		-		
(C) प्रस्तुतीकरण	1.पाठ्यवस्तु की निर्धारित समयानुकूलता		12.7.3	~		
	2.पाठ्यवस्तु के स्पष्टीकरण का स्तर	The Good of		-	R. Was	
	3.शिक्षण—सहायक—सामग्री का प्रयोग		~	1200	100	
24	4.प्रयुक्त उदाहरणों की विषय के साथ संगतता			-	Sugar Ly	
Parte Peran	5.छात्र सहभागिता (Participation)	press guilt	~	Store .		ant.
03/2	6.शरीर संचालन	and the second	~	S. See.	1000	0.0
12	7.छात्रों से सहयोग (Co-ordiation)		1	-	-	
C.S. Martin	8.श्यामपट्ट कार्य		turner and	-		
1 Alt	9.पुनर्बलन का प्रयोग		100	-	The second	
सामान्य टिप्पर्ण मैंस को -्पार्टिए	ा/सुझाव- आस-पास वे वातावरण या ।	को भी	इन्छ 🕫	ह./ क्रि	the Kun	nosi





MCEM







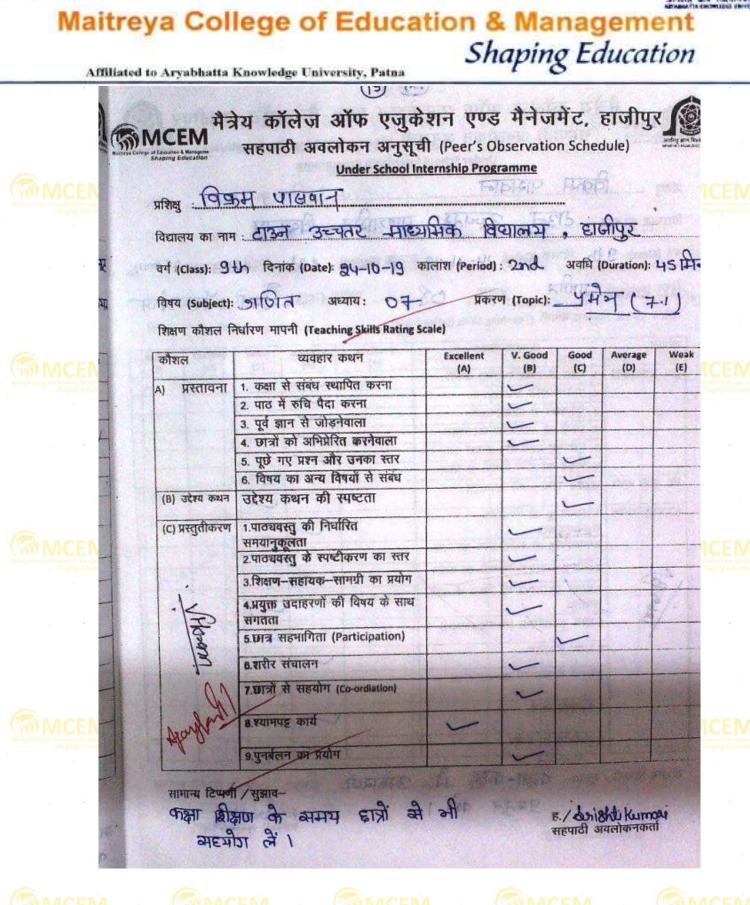
-



N मैठे	य कॉलेज ऑफ एजुके सहपाठी अवलोकन अनुसूच					S 1
W understand actions						
ation		i li cci a a	bservatio	on Schee	dule)	striding and filter and a filter to the
	Under School In					
8	का प्रास्तवाल		নিয়িল	1.27	PLL.	
11-11-12-0		0	NOCO T	-cne	0	ALC: NO
का नाम	राउन उच्यतर माह	भूमिक ी	वेधालय	, 2	जिपुर	
. 9	th print put 97-10-10 7	Colly (Period)	Hth	अवधि ।	Duration):	HS F
Subject):	जाणितं अध्यायः 08	हु प्रकर	I (Topic):	वल	MOIL	
हौशल) प्रस्तावना 1. व 2. प 3. प 4. घ 5. प		rale		en relar		
पगराल ।		The states	Turnet	I ford	1	Mark
गक्षण कौशल निर्धार जैशल प्रस्तावना <u>1.</u> <u>2.</u> <u>3.</u> <u>4.</u> <u>5.</u> <u>6.</u>	व्यवहार कथन	A CONTRACT OF A	(B)	(C)	(D)	Weak (E)
2. 3. 4. 5. 6.	1. कक्षा से संबंध स्थापित करना		~	a contra		
			~	Carlos .	1	
			5	144	and a	Sec. Car
	A second se Second second s	Sec. Sec.	~	1 Alat		18 A.
			1. 5. 10	-		1.223
		- And And		~		Carlos and
श्य कथन	उद्देश्य कथन की स्पष्टता		~		1 Section	
तुतीकरण	1.पाठ्यवस्तु की निर्धारित समयानकलता		6.40	-		-
	2.पाठ्यवस्तु के स्पष्टीकरण का स्तर			~		
0			1-	5.94	Sec.	
Kan	4.प्रयुक्त उदाहरणों की विषय के साथ		~			
°/X	5.छात्र सहमागिता (Participation)		No.	~	1. 200	
K.	A REAL PROPERTY AND A REAL		1		Contraction of the	The second
		-	1-			No. 1. And
	7.छात्रा स सहयाग (Co-ordiation)	-	1	-	1	Sale of
	a.श्यामपट्ट कार्य	1 Augustin				
	I have a start of the second of the	The state of the state	With Street	Pire Tone		
and the provesting of	9.पुनर्बलन का प्रयोग	O REAL PROPERTY AND INCOME.				
	। का नाम ass): 9 Subject): कौशल नि स्तावना	ass): 9 की दिनांक (Date): 23-10-19 व Subject): 5107 अध्याय: 08 कौशल निर्धारण मापनी (Teaching Skills Rating Sc व्यवहार कथन स्तावना 1. कक्षा से संबंध स्थापित करना 2. पाठ में रुचि पैदा करना 3. पूर्व ज्ञान से जोड़नेवाला 4. छात्रों को अभिप्रेरित करनेवाला 5. पूछे गए प्ररन और उनका स्तर 6. विषय का अन्य विषयों से संबंध रय कथन उद्देश्य कथन की स्पष्टता 1.पाठ्यवस्तु की निर्धारित समयानुकूलता 2.पाठयवस्तु की निर्धारित समयानुकूलता 2.पाठयवस्तु के स्पष्टीकरण का स्तर 3.शिक्षण-सहायक-सामग्री का प्रयोग 4.प्रयुक्त उदाहरणों की विषय के साथ सगतता 5.छात्र सहमागिता (Participation) 6.शरीर संघालन 7.छात्रों से सहयोग (Co-ordiation)	का नाम राउन उठातर माटमप्रीक ass): 9 फे दिनांक (Date): 23-10-19 कालांग (Period) Subject): STIDIA अध्याय: 08 प्रकर कौशल निर्धारण मापनी (Teaching Skills Rating Scale) कौशल निर्धारण मापनी (Teaching Skills Rating Scale) प्रितावना 1. कक्षा से संबंध स्थापित करना 2. पाठ में रुचि पैदा करना 3. पूर्व ज्ञान से जोडनेवाला 4. छात्रों को अभिप्रेरित करनेवाला 5. पूछे गए प्रश्न और उनका स्तर 6. विषय का अन्य विषयों से संबंध श्य कथन उद्देश्य कथन की स्पष्टता तुतीकरण 1.पाठयवस्तु की निर्धारित समयानुकूलता 2.पाठयवस्तु की निर्धारित समयानुकूलता 2.पाठयवस्तु की निर्धारित समयानुकूलता 2.पाठयवस्तु के स्पष्टीकरण का स्तर 3.शिक्षण-सहायक-सामग्री का प्रयोग 4.प्रयुक्त उदाहरणों की विषय के साथ संगतता 5.छात्र सहमागिता (Participation) 6.शरीर संवालन 7.छात्रों से सहयोग (Co-ordiation)	का नाम राउन उच्चतर माह्यमिक विद्यालय ass): 9 th दिनांक (Date): 33-10-19 कालांश (Period) : 4 th Subject): STIDIA अध्याय : 08 प्रकरण (Topic): कौशल निर्धारण गापनी (Teaching Skills Rating Scale)	का नाम राउन उच्चतर माह्यमिक विद्यालय , ट ass): 9 th दिनांक (Date): 23-10-19 कालांश (Period) : 4 th अवधि Subject): STIDIA अध्याय: 08 प्रकरण तठांदा: जिस कौशल निर्धारण मापनी (Teaching Skills Rating Scale) स्तावना 1. कक्षा से संबंध स्थापित करना 2. पाठ में रुचि पैदा करना 3. पूर्व ज्ञान से जोडनेवाला 4. छात्रों को अभिप्रेरित करनेवाला 5. पूछे गए प्रश्न और उनका स्तर 6. विषय का अन्य विषयों से संबंध श्य कथन उद्देश्य कथन की स्पष्टता तुतीकरण 1.पाठयवस्तु की निर्धारित समयानुकुलता 2.पाठययस्तु की निर्धारित समयानुकुलता 3. प्रिंताण-सहायक-सामग्री का प्रयोग 4. प्रयुक्त उदाहरणों की विषय के साथ संगतता 5. छात्र से सहयोग (Co-ordiation)	का नाम राउन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय , टाफीपुर. ass): 9 फी दिनांक (pate): 33-10-19 कालांश (Period) : 4 फी अवधि (Duration): subject): 51107 अध्याय : 08 प्रकरण तर्काटी: क्रिंगे 1077 कोशल निर्धारण मापनी (Teaching Skills Rating Scale) त्यवहार कथन <u>Excellent V. Good Cood Average</u> (A) <u>V. Good Cood Average</u> (A) <u>V. Good Cood Average</u> (B) <u>CO</u> (D) स्तावना <u>1. कक्षा से संबंध स्थापित करना</u> <u>2. पाठ में रुचि पैदा करना</u> <u>3. पूर्व ज्ञान से जोड़नेवाला</u> <u>4. छात्रों को अभिप्रेरित करनेवाला</u> <u>5. पूछे गए प्रश्न और उनका सतर</u> <u>6. विषय का अन्य विषयों से संबंध</u> त्रय कथन उद्देश्य कथन की स्पष्टता प्रातकिरण <u>1. पाठयवस्तु की निर्धारित</u> समयानुकूलता <u>2. पाठयवस्तु के रपष्टीकरण का स्तर</u> <u>3. जिल्ल-सहायक-सामग्री का प्रयोग</u> <u>4. प्रात्रों से सहयोग (Co-ordiation)</u>









-



Maitreya College of Education & Management

MC	EM 书言	रेय कॉलेज ऑफ एजुके सहपाठी अवलोकन अनुसूच	ी (Peer's O	bservatio			New Parts	
MCEN					-			
प्रशिक्ष	I - I	ना कमारी (742)	<u>914</u>	137 180	Dieg	(and the second se		
विद्या	लय का नाम	. टाउन उच्चतर मा	ध्यमिक	विद्यालग	Ŧ			a i
। वर्ग	Iclass)- 9	th दिनांक (Date): 14-11-19 क	ालांश (Périod)	and .	अवधि	Duration1:	usmi	ìn -
- विषय	I (Subject):	हिन्दी अध्यायः -	प्रकर					
		तेर्धारण मापनी (Teaching Skills Rating Sci	in the second	appent for	44.225			
MCEN कौश	ল	व्यवहार कथन	Excellent (A)	V. Good (B)	Good (C)	Average (D)	Weak (E)	ICE
A)	ण कौशल निर्धार ल प्रस्तावना 1. व 2. प 3. प 4. प 5. प 6. र्र उदेश्य कथन उद्दे रस्तुतीकरण 1.पा सम्	1. कक्षा से संबंध स्थापित करना	1150	1.000	-			Shaping b
		2. पाठ में रुचि पैदा करना	The second	Ref. HAY	-			
	1.20	3. पूर्व ज्ञान से जोडनेवाला	-	-	1. N. 1			
	5.	4. छात्रों को अभिप्रेरित करनेवाला	- Papers		-			
		5. पूछे गए प्रश्न और उनका स्तर	1.4	1-				
		6. विषय का अन्य विषयों से संबंध		1-	1900			
(8)	उदश्य कथन	उद्देश्य कथन की स्पष्टता		1-				
(C)	प्रस्तुतीकरण	1.पाठ्यवस्तु की निर्धारित समयानुकूलता		-				
MCEN	noui	2.पाठ्यवस्तु के स्पष्टीकरण का स्तर			-			ACE
Shaping Education	1 Jai Kum	3.शिक्षण—सहायकसामग्री का प्रयोग		E			-	
		4.प्रयुक्त उदाहरणों की विषय के साथ		Y	-			
		सगतता 5.छात्र सहभागिता (Participation)						
_		6.शरीर संचालन	Contraction of the second seco	and the second s	-			
		7.छात्रौं से सहयोग (Co-ordiation)	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		5		1	
MCEN		8.श्यामपट्ट कार्य		-			-	ICE
Shiper Land		9.पुनर्बलन का प्रयोग				The state of the s		Shapeng to
साग	मान्य टिप्पणी	/ सुझाव- कच्ची की बीच-	बीच में	£ 4.7	entre la contre		and a	
a P	पुनबंत	नन देना - पाहिए)			/ हेर्डा हपाठी अ	प्रि वलोकनकर्ता		



-



शन एण्ड ो (Peer's O ternship Prog गमिक वि गमिक वि	bservatic ramme • रद्यालय	on Sche	dule)	R Service
ो (Peer's O ternship Prog गुमिक दि गुमिक दि ालांश (Period)	bservatic ramme • रद्यालय	on Sche	dule)	A A A A A A A A A A A A A A A A A A A
ो (Peer's O ternship Prog गुमिक दि गुमिक दि ालांश (Period)	bservatic ramme • रद्यालय	on Sche	dule)	soley art
iernship Prog মার্মিক বি মার্লায় (Period)	ramme • আলম্		8	uine -
ग्रामिक दि Intii (Period)	ন্যালয		the second s	uint"
ग्रामिक वि Inniश (Period)	আলম		the second s	
লোহা (Period)		, हान	Aur	
	7-0		inge	
	. 746	अवधि।	(Duration):	US Y
You man				
УФК	ण (Topic):	of the	jadeca	-
ale)	The state	-	,	
and the second second	1	1		
Excellent (A)	V. Good (B)	Good (C)	(D)	Weak (E)
10 1 10 AV	-		100	
1. Ser.	Sale of the	-		1
and and	NAME OF ST	-		a des la de la adamó -
Contra a	12200 12	-		
AND SALES	1.			
Mark Control	0.008.10	1-		
1000	19.00		1200	
	15			
	5	1-1-1		
100 20 20 20	1000 - 50			
Trace of the second	10-10-10	-		
		5		
		-	(sall	1
entrentes	NY MARKED	T GUN		10000
	Contraction of the second	5		Part .
	5	-		
	Contraction of the	-	the second	
	the second second	a la contra de la co	ALC: NO PORT	in a second
	ALCONTRACT OF	AND A	1000	
		-		
	SACK IN	1		10
	Excellent	Excellent V. Good (A) (B)	Excellent V. Good Good (A) (B) (C)	Excellent V. Good Good Average (A) (B) (C) (D)





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

	म्हाहद्व मित्र	19101 - 0 - 0 - 0 - 1	ramme	fies	are		
					0		
विद्यालय का नाम	ताउन उच्चतर मा	ह्यामक	विद्याल	9, E	ाजीपुर		
				1		1. Tale	
451 (Class): 10	th दिनांक (Date) 18-11- 19 क	iciti (Period)	121	जनाम	Duration).	45 114	
ठोग विषय (Subject):	उर्दू अध्यायः 03	राष्ट्र प्रकर	ण (Topic):	21124	c	400	
				TTT CLOB	J. mark		
शिक्षण काशल नि	ार्धारण मापनी (Teaching Skills Rating Sc	aicj				4	
MCFN के कौशल	व्यवहार कथन	Excellent (A)	V. Good (B)	Good (C)	Average (D)	Weak (E)	
A) प्रस्तावना	1. कक्षा से संबंध स्थापित करना		1-	1-1			Shaping
	2. पाठ में रुचि पैदा करना		1	1.4.4.1			
	3. पूर्व ज्ञान से जोड़नेवाला	-	14 Carlos	-		No. No.	
	4. छात्रों को अभिप्रेरित करनेवाला	No.		-			
	5. पूछे गए प्रश्न और उनका स्तर		1-	1.20			
	6. विषय का अन्य विषयों से संबंध		1		Lipe V 24	S. Contraine	
(8) उदेश्य कथन	उद्देश्य कथन की स्पष्टता		19.018	-			
(C) प्रस्तुतीकरण	1.पाठ्यवस्तु की निर्धारित समयानुकूलता		-				10
Shaping Liker	2.पाठचवस्तु के स्पष्टीकरण का स्तर		-			No. C.	Shaping
	3.शिक्षण-सहायक-सामग्री का प्रयोग	14 A. 4	-	-			
	4.प्रयुक्त उदाहरणों की विषय के साथ संगतता		1.2	-	(May		
-	5.छात्र सहभागिता (Participation)		192.8	1-	AN AL	may 1	
(ala	6.शरीर संचालन		1-			Con Con	
- Fair	7.छात्रों से सहयोग (Co-ordiation)		1.	Contraction of the second		-	
Care.		and the second of	1 - Maria		-		
MCEN	8 इसामपट्ट कार्य		1-		and and		ICE
	9.पुनर्बलन का प्रयोग		1			AND ME	Shaping L
					Concerning of the local sector		





A	मैत्रे	खा य कॉलेज ऑफ एजुके	शन एण्ड	मैनेज	मेंट, ा	हाजीपु	R R	
	LEIVI Later & Manageria	सहपाठी अवलोकन अनुसूर्च	t (Peer's O	oservatio	on Scheo	dule)	scolog gen faval and art reasonance	
Shap	ing Eastanos	Under School Int	ernship Prog	amme				
MCEN	रास वित	कम पारुगवान	(212)	04.44	Baadd	4,E	Series -	
				0	CTL .	-0	40	
वि	द्यालय का नाम	राउन उच्चतर म	ाध्यामक 	विश्वा	लथ,	दार्जापु	52	
15m m	f (Class): 0	3 दिनांक (Date): 18-11-19 क	Terial (Period)	ber :	अवधि (Duration):	45 m	
1				and the second sec		1000		
वि	ाषय (Subject):	जाणित अध्यायः 08	प्रकर	키 (Topic):	रचा	ओर	काण	
		र्घारण मापनी (Teaching Skills Rating Sc	alel					
15	विश्व-काराल ।	a contraction of the second		T	1			
MCEN III T	जैशल	व्यवहार कथन	Excellent (A)	V. Good (B)	Good (C)	Average (D)	Weak (E)	
A	प्रस्तावना	1. कक्षा से संबंध स्थापित करना		-			100	
		2. पाठ में रुचि पैदा करना	Same and the state	-				
111		3. पूर्व ज्ञान से जोड़नेवाला		-	-			
		4. छात्रों को अभिप्रेरित करनेवाला		•	~		5-1-1-1	
		5. पूछे गए प्रश्न और उनका स्तर		-	1 Sec		S-12 (/	
		6. विषय का अन्य विषयों से संबंध		11/1-13	-	Contraction of the second	3: 6	
	B) उदेश्य कथन	उद्देश्य कथन की स्पष्टता		-				
MCEN	C) प्रस्तुतीकरण	समयानकलता		-				
Shaping Education		2.पाठचवरतु के स्पष्टीकरण का स्तर		-		100		
		3.शिक्षण-सहायक-सामग्री का प्रयोग		-		Jack Mark	100	
- +	Regard	4.प्रयुक्त उदाहरणों की विषय के साथ सगतता		-	and a			
-	K	5.छात्र सहमागिता (Participation)	1.000	1.08.1	L	See A	-	
_	E La Cal	6.शरीर संचालन			2.7.7.7.11	A STREET	Real Providence	
		7.छात्रों से सहयोग (Co-ordiation)		The second			C. Salar	
		7.0131 & HEALT (Co-ordianon)		1~		12 12	- The State	
		8.श्यामपट्ट कार्य	-			2		
		9.पुनर्बलन का प्रयोग		1-				
	सामान्य टिप्पणी वीन्ज	/ सुझाव- सर को आज - वीन्य में प्रबन पुछना	बिच - बि 	erre -	ह./ & 91	shti Iacilatat	nf	





1	MCEM Process Shaping Education	. प्रम य कॉलेज ऑफ एजुके सहपाठी अवलोकन अनुसूर्च Under School Int	l (Peer's O	bservatio				
	प्रशिक्ष विद	क्रम पासवान		61920	143			
		राउन उच्चतर माह			51	CIL AU	,	
and a second								1
S my	वर्ग (Class): 91	Lh दिनांक (Date): 19-11-19 क	ालाश (Period)	: and	, अवधि (Duration):	45 min	r '
		-						
ONT	विषय (Subject):	जाणित अध्यायः ०४	प्रकर	ण (Topic):	La	आत ९	Part	
	षिण्यण कौषाल नि	हारिण मापनी (Teaching Skills Rating Sc	ale)				tine fail and	
	TENT I STRICT I			T contractions	-			
MCEN Wea	कौशल	व्यवहार कथन	Excellent (A)	V. Good (B)	Good (C)	Average (D)	Weak (E)	ICE
Shaping Education	A) प्रस्तावना	1. कक्षा से संबंध स्थापित करना	14	101	101	101	iel	Shaping b
	A) ATTIG	2. पाठ में रुचि पैदा करना		-	- maria		201	
		3. पूर्व ज्ञान से जोड़नेवाला	The state	E	a gain			
		4. छात्रों को अभिप्रेरित करनेवाला	1 PROPINIES	HORAL IN	~			1
	and the second second	5. पूछे गए प्रश्न और उनका स्तर	The ships	1	177			
	A CONTRACTOR	 विषय का अन्य विषयों से संबंध 	1997 18 14	-	6000	10.00	122	1
	(B) उदेश्य कथन	उद्देश्य कथन की स्पष्टता			I USOD	19-34	10121	
				1-	-		and the second	
MCEN	(C) प्रस्तुतीकरण	1.पाठ्यवस्तु की निर्धारित समयानुकूलता	37 1785		-			ACE
IVICEN		2.पाठयवस्तु के स्पष्टीकरण का स्तर			PRESENT OF			IUC
Shaping Land	A SHALL	3.शिक्षण—सहायक—सामग्री का प्रयोग	The set of	1-	10 contraction			Shaping L
1 and	12	and the second			-	-	-	
	THROWING	4.प्रयुक्त उदाहरणों की विषय के साथ संगतता	and to blog	1	THE	Mary 1		
All and a	3	5.छात्र सहभागिता (Participation)			-			
	Hand Starley	and the second sec	and the second	1 marchine	5		2	
		6.शरीर संचालन	-	Carl Carl		ALL ANES		
		7.छात्रों से सहयोग (Co-ordiation)			N. W.B.			
				1 North	-	and the second		5
MCEN		अस्यामपट्ट कार्य		- College				1CE
Shaping Laker	. /	9.पुनर्बलन का प्रयोग	Y		LER SAL	-	Sale Line	Shaping b
		Sadda di Nela	The second second	14	1 Carlo	13 100	and the second	
	सामान्य टिपाजी	/ सुझाव- भीरे की अपादन	10					
· · ·			वा प्रक	P.C			-	
	chart	- पाहिए।	Provide State	the second s	9	ishti acitantan		
1000	Ulder							



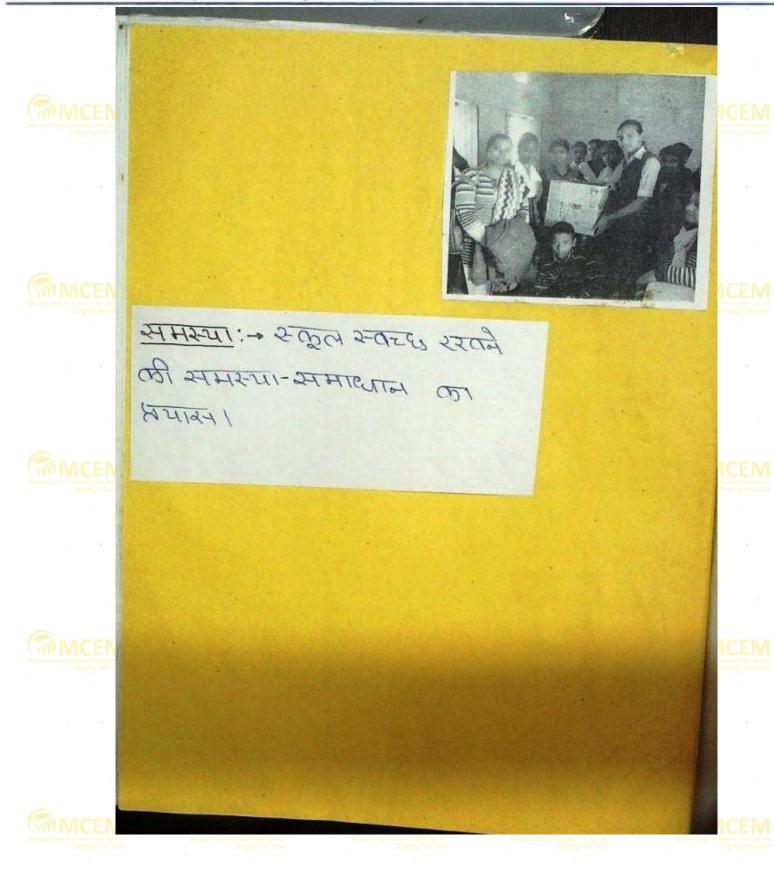


अवग्रेल देवते प्रशिक्ष :		62717 3	Tel Ha	包 和	1		
	कुव्या मीहन	0	0		1		
विद्यालय व	ा नाम : टाउन उच्चतर माल	ध्यमिक	वेचालय	015			
भSn वर्ग (Class)	9th दिनांक (Date): 20-11-19 व	मलाश (Period)	18\$	अवधि (।	Duration):	45 mi	IT
	ject): भौगताका अध्याय: 03						
शिक्षण कौ	तल निर्धारण मापनी (Teaching Skills Rating S	cale)					
MCEN कौशल	व्यवहार कथन	Excellent (A)	V. Good (B)	Good (C)	Average (D)	Weak (E)	hCE
म् । प्रस्ता	वना 1. कक्षा से संबंध स्थापित करना		1-	200	1.900		and the second
	2. पाठ में रुचि पैदा करना	1		-			
	3. पूर्व ज्ञान से जोडनेवाला	1000		-			
	4. छात्रों को अभिप्रेरित करनेवाला	Contraction of the second	TANG. NO	-			
	5. पूछे गए प्रश्न और उनका स्तर	24 287 2	1-	1. 18 2			
	6. विषय का अन्य विषयों से संबंध	1. 1. 1. 1. 1.	10	1999 B	1000		1
(8) उरेश्य	कथन उद्देश्य कथन की स्पष्टता		1		10.0		1
МСЕК (с) प्रस्तुती	करण 1.पाठ्यवस्तु की निर्धारित समयानुकूलता 2.पाठ्यवस्तु के स्पष्टीकरण का स्तर		-				1CE
Krishon			1-				Shaping
Mo	3.1141-1 (10144) (1113) 4/ 9411		1	-			
+	संगतता		1		1		
	5.छात्र सहमागिता (Participation)	A COMPOSI		1-	m VS		
T	6.शरीर संचालन	-	E			- and - and -	
T	7.छात्रों से सहयोग (Co-ordiation)		N. ANT	-	Ser P	5 · · ·	
	8.श्यामपट कार्य		No.				ICF
		11		ALL HEALTH	and Clean	ell' 200	ICE
MICEN	9.पुनर्बलन का प्रयोग		A CONTRACTOR	A case of the	and the second s	and the second second	Sharring (





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

100 LICHO HAZierty (Action Research)

STEPS OF ACTION RESEARCH

Anderson के अनुसार :- क्रिया अनुसंधान की प्रणाली में

1) समस्या का आन 2) कार्य के प्रति प्रस्तकों पर किनार- किमरी 3) योजना का जायन क उपक्रणना का निर्माक 4) तरप- संग्रह करने की लिप्पियों का निर्माक 5) भोजना का आपत्विपन क प्रमाकों का संकलन 6) तण्पों पर आधारित निरक्छ 4) प्रसरों को परिणानों की रनूचना

· 274241001 atra





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

तिदालय में एक भी Dustbin नहीं हैं। तब मेर्स कहा कया. Dustbin (क्रहापान) कव में नहीं हैं? उसने कहा कया. Dustbin (क्रहापान) कव में नहीं हैं? उसने कहा जात किनी-भी विद्यापी में देंह लिकिए सब मही कहेंगे कि यहा हमने हाफ से ही Dustbin नाम की कहे बहनु नहीं देखी ! <u>विद्यालय में Dustbin का नाहोना</u> एक ब्रह्म समाम्या की अरहम भूमिका ही मिर्ट 1 जी क्रहा कि प्रकार में नहीं हैं। विद्यालय की साफ-मुद्याहा महन कि प्रकार में नहीं की अरहम भूमिका ही मिर्ट 1 जी क्रहा कि प्रकार हैं। इस नहीं हो की क्रहा कि प्रकार महने का मुद्दे हुमा।

· (DEN & ארח שבחוםי עו וסעור- דמאשל "

२ममस्या को भती-मॉग समस्य के बाद मॅंसे इस स्वर्भ सि मार्ग कि माम्स्य कि वाद मंस का को खं वियालय की समादि भिममी स्वर्ग कि माम्स्य के के कि क्रिये सिम कि प्रायति कि मार्ग के के उन्होंने पही कहा कि Dustbin की प्रायति के उन्होंने पही के स्वय कि प्रायति की प्रायति के का के स्वर्ग के प्रायति कि प्रायति के स्वयेक कहा में के इसके कि प्रायति कि प्रायति के स्वयेक कहा के कि स्वर्ग के प्रायति कि प्रायति के स्वयेक कहा के कि स्वर्ग के प्रायति कि प्रायति के स्वयेक कहा के कि स्वर्ग के प्रायति कि प्रायति के स्वयेक कहा के कि स्वर्ग के प्रायति कि प्रायति कि स्वयेक कहा के कि स्वर्ग के प्रायति कि प्रायति कि स्वयेक कहा के कि स्वर्ग के स्वयेक कि प्रायति कि स्वयेक कहा के के स्वर्ग के स्वयेक कि प्रायति के स्वयेक कहा के के स्वर्ग के स्वयेक कि प्रायति के स्वयेक कहा के के स्वर्ग के स्वयेक कि प्रायति के स्वयेक कहा के के स्वर्ग के स्वयेक कि प्रायति के स्वयेक कहा के के स्वर्ग के स्वर्ग के स्वयेक कि प्रायति के स्वयेक कहा के के स्वर्ग के स्वर्ग के स्वर्ग के स्वयेक कहा के के स्वर्ग के प्रायति के स्वर्ग के स्वर्ग के स्वर्ग के के स्वर्ग के के स्वर्ग के प्रायति के स्वर्ग के स्वर के के के स्वर्ग के स्वरेक के स्वर्ग के स्वर्

5मारा उपाय करती है किन्तु आपकी अपना गर

1116 8 1676





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

2नहफोग हमें देना हीगा। अन्हीने अपना रजा मंदी SETUL Egg1 WANDER TO BE THE TO BE TO "योगना का ज्यान ख्वं उपकल्पनाका निमार्ग" > विचार-विमर्श के परचात मेरे मन में कई विचार STIP TOS ER at Craft Work STATE al and a ET TE ETTERI CLART MORK WORK OF I ST Anna Man & ETTY MCEM A'OS abore Aut जिक गामी मनक हैन कि माल ह का म में ग्लीम् ह की Technique 27ीरवासी हैं गई हैं। अच्छति, उनके साद्य यह कोरेगल स्वीरवने की किला है। जिस्तक लाखा हमें दीलागाह ाउक कि किन्ने कि आगाह स्टास कह at barrow za' louran a asarsi'à tre Dusto वनाना में स्वयं बताउँगी 1 यह मनवर करने भी ITEL FORD SAL FORTING ON HELD ETERON ON इस जात का जाम होनी पर उन्हें भी बहुत रहनी दिखा. हुई। Dustbin जमाने की देकनिक की कल्पना मेरे ancicant and इस्र मला मेरे मन में समास्या ן דרכי הוש ייסוא אין אייט דאויט דעי איין אייט בע לע में मोता वियालय के हत्ये कालक कालिका रहं हिसिक एवं वियालय इसाही स्तिहि स्तिराजी की वियालय में या कही भी जन्दी होने में क्या नक्यान हैं भीर हमारे अगितन में सामन्सपाई का लगा सहत्ता है। आगि पह PTENSIN OF LEE MOO WELSTON OF THE HER जिसकी स्टार मानमा जनाना की उन्ही की H'STIGTI DIEI BOUTON of





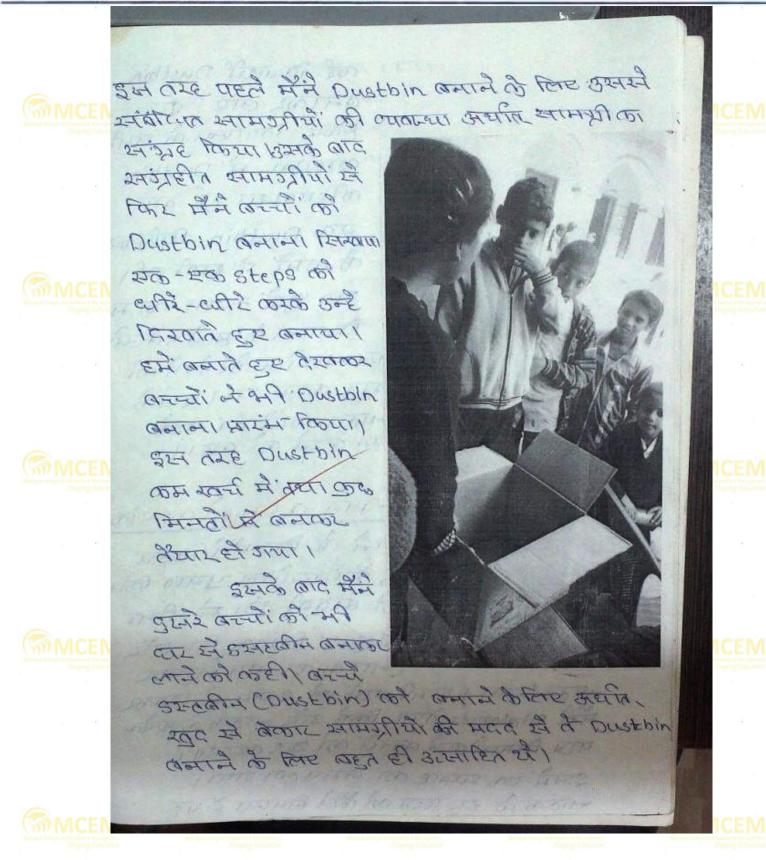
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

	"inver 1 Per add as mit & this Att	
	ALL READEN to A Ranny A' Dustbin anny	
	सीरताऊँगी पर उसने पहते में एक भारत प्रया	
. ×	मार र्याह 13 फिडाम (मार्यसम् कि कन उम्द क्वाउर	
	в изпол вся инное в напина ва изпо	
	माराज्य हैं। दिर्ग दि ही ही ही दे दे त्रीमार हिर हाग	
MCEN	होता इसमें अपना भोगता देने की दिया होगा।	
- Shujing Linute	BUDGE RO (BO POR PARE POR PARE POR DE LAND DICK	
	האתרום ביב ו הנה ביב האתרות יה ובדי וההלי גם	,
	and wins on presse for iferentiants 2005	
	भी हुई। उन्होंने भी साल, स्तर्फ पर व मान पेना प्रायंभ कर लिया। इस तरह ममरणा	
	AND LA TOLA ON STILLE LO AJON LA	
Shaping Ediator		
	A	2
	ימדבע- אוזוני של א הרבתו הל מביתוא ישו שאונייו ישואנייו ישואנייו הל מביתוא ישו שאונייו לי יווב	
	ATTEN WELL THE THE THE TO THE TON THE TON THE	
MACEN	STUTE, WELL TO DUST TO	
s a Colomp of Colombia & Maring Schuren	Erry for the of a love of a some forme	
	Gift of denoted to for a contract of contract and	
	a catalical Ferrical and and and and and	,
	लाने को कहा ।	
	तन्में खाली आदन केलीकोंक उपत्राद Chiff Wraper उत्तपने स्वाह्य लेकह उठाली किंग साम	
MCEN	The state same same the	





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



ALTON PLEND 200 ALTON OTEN 200 ALTON OTEN 20 ALTON OTEN 22 ALTON DUSTON PLEND ALTON MUTCH SE ALTO ALTON MUTCH SA LADO ALTON MUTCH SA LADO A - MOLING ALTON A - MOLING ALTON

रिक मिल्मा हो स्टान , आग्र , लग्न हो , मिल्ला ही , मकाई ही माड मजक रहुगाल में आवंग्र के रेगमाई लिए में ने बच्यों की ज्याहर करने स्व करके 1 1 उद्य कि म्यल जर्मा आग्र का रियाल

• योजना का कार्यान्वरान व समावरों का संवद्य अपनी भोजना की बहुरने के लिए मेंने (माट्य 12) कर्द मेरे कर्मा का भारत किला गमीन हि रहे किक्रान कि हान 5% Dialogues Forsate AD STIL MCEN 2000 1 ATTA TON 00 2110 / 1900 ात्मार के माम्रे के मान हिल मान हिला es stan lost atte alte a seria I wondo and to inrea and 1 (1) मार त्या मार का आहम का मेसद -ताटक के हर तान की किसी निभारत है भार





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

2-ALOR H' WEREN EVAN (MOTT) SHO are At Pouten A. स्तम् सिराकी कामीर) (भीमती टांगीता भी), विदा कड की कि गिर क में ही कि 1300 हि atten d'an no 2011 à loren 18.01.2019 and उपालकी के रेग्राम्स कडाम रमाउँ के साम 1माठटरी and fore d'en land an 1 3757 18.01.2019 (370002) 007 वच्यों ने नुकल् नाह के लिखा । जिस देखने भीड 13130002 PH- NON & FITTE - FITE I DIE SIPE ाममार दियार हे गराय के काल भिम्द 1 डाव angal Parties (april 365 apressort faco 57H3 10156 210 0158 Mayor and ALIANS १ मिकर्मिक सम्बद्ध गाम 19 Jak क लगान कि लाहन के STAT GEITUI JTAT 1 लगाम स्टेट निर्दाण मा की म्याई लि

> त्र राज्य के समस्ती / गावडक कि उनका के राज्य के राज्य के स्वाय के स्वाय के स्वाय कि स्वाय कि स्वाय के स्वाय का स्वाय के स्वाय के स्वाय का स्वाय स्वाय स्वाय के स्वाय स्वाय का स्वाय स्वाय स्वाय के स्वाय स्वाय का स्वाय क स्वाय का स्वाय का





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

ALLE O THE FILL AT A DIA ON ON THE Partien of are and and the toma the Al Economian 1 200 site is lacerary and मितियार दिग्र खाडी हो के कि का मिल हर मीन्दी मिलालने से आहा पड़ोंटन के लोग औ Ration of aner and a farer and the and the लगा रखे थे तो हत्वापा | इस मार्ग में कच्यों मे STIP DE MEMORY & PRONTE 1. THE HISTH AS I STREPS formant to itely AR AR AF H. HIDI RIVELL RUMM STHO AL POTEROBARA FOO 159 300 ATTA 255 / BEALD िमार्ग्र मार्ग्र परीक मिला and and and i and interes arean etal and 89 मिल्लों भे कराडा साम, कर कार 1 असा | इस אסור באור אודיניו שו ETAL STEDA INTES MILLING ROMOTINED! 115135 भाराह काउट गाउ हे कार to trees for more D Fore and the off are HI MIDIA ETA EN न्दिरत रहे गरे । स्तास ही





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

Brette Broch Pier Starbit Bull and the Error Anno 1300 the restant 59 MCEN · devi az manten totacoa " Sat Alle Presed & Presere by astrong मंद्र लिया निमार की ालकानी हार मेका कि ममस्या की दूर करने का किस्तर कर विद्यालय to inter (Pring a pring 1811 - FILE to उन कारी की जगह परिंधी (तरह- तरह कुलें के मार्गाजन (मार्गाद) होगाल कि रिजीम के 1 दिली मार कार मा मारा हे . हाम का जान आ मे Po Per inficies that le But for uninos रुवां प्रत्येक कहा में जाका रुवरक असत 1 Ban hte Corres and ID FILMETES Fils-E MIKESTE CONSIG Partiny of Eni effect annor tour 1 sectos TET A' Dustbin gra riddend for ant STC for for the rap refurie rap परिवारी भें पानी अरले 1 months FERS Land and theman sitan und Sames Peo 10300 man उत्ते जाद धीवते मे (S) MCEN



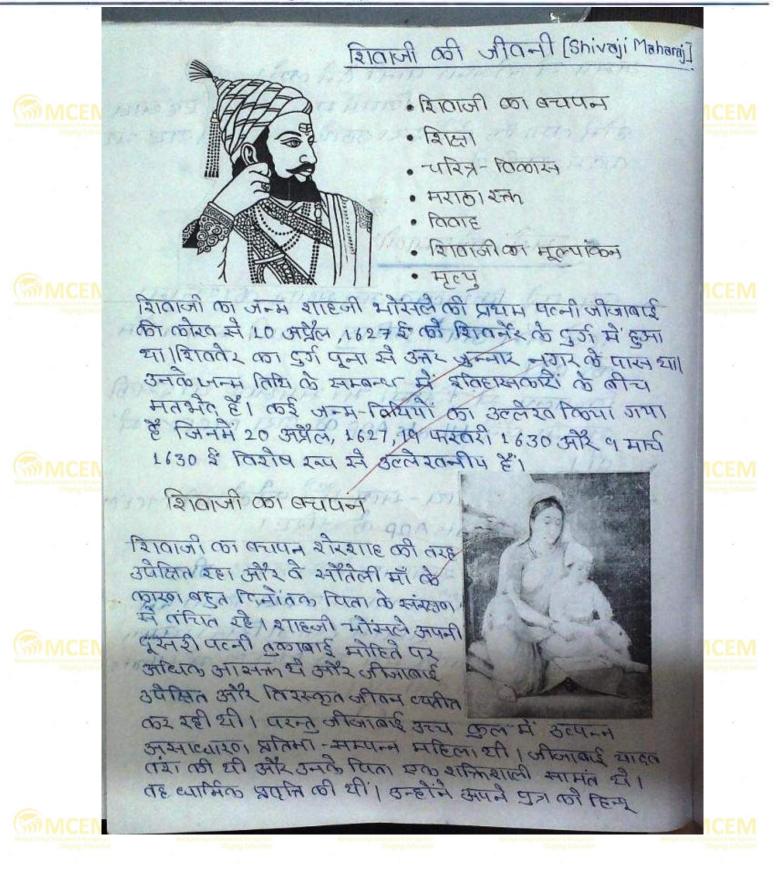


Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

ारिक मेरी निगग गानाह हि गमनड जिन्ही मुझ्मे इलका एह आ तिम आह अन्हरू क्राइट गाय देने की गय निने प्राह म्हिक क्राइ गाउट देने की गय निने
• प्रसरों को लगानी की मून्यना > इस पूरे कियालन अनुसंधान की मूर्यना (CEM
में तीत्र जित्रम मार्ग्स में के कर कि में के का कि कि निर्म कि कि निर्म कि कि निर्म कि
- मिलालप के जिसमें मारे Moess App के इसा MCEM
में मेरे भाषा मार्ग मार्गमें ने गर्म का मार्गमें में मार्गमें में मार्गमें में मार्गमें में मार्ग मार्ग के मा
परे वातों की स्तुप्ता में (सान्ता रियन्ट) से (CEM स्तमप से स्वापि में से स्वं MCEM से Hora CEM
ICEM Sugar Lavata Sugar Lavata Sugar Lavata Sugar Lavata Sugar Lavata











Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

साम के आदर्श प्रतीं की गाया मानाकर करापन में में मणान्स (में) कि मिला मार्ग में माँ ाता गणाडी सामास में मेडता गगेसनी - हरीन गता हा 13 किडिकाकी उँगम किई 1 गय गमकी माठा

121211

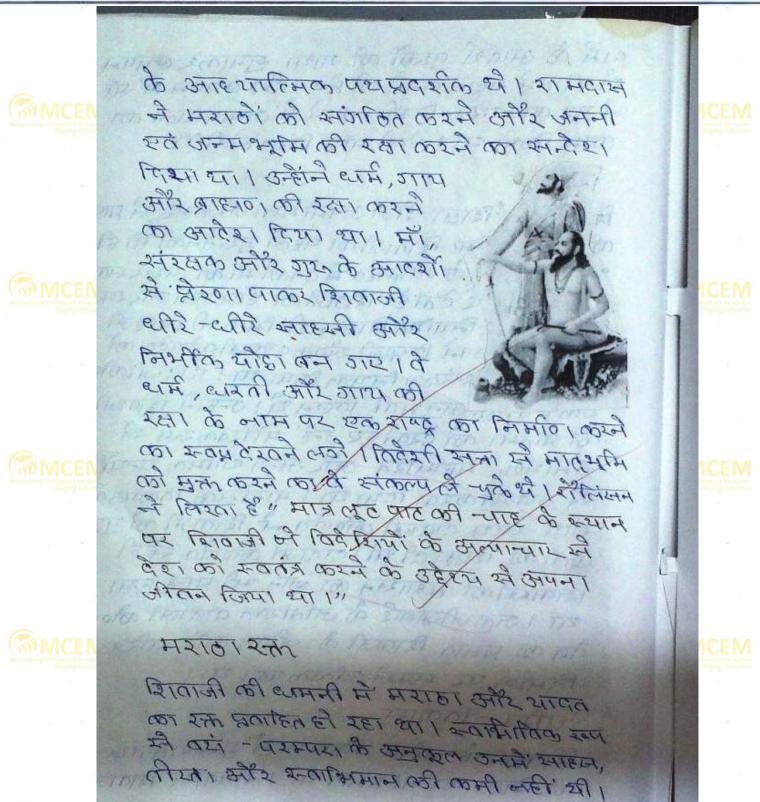
स्मास हें देखालीर तामन दिगम (हारी)-1 छाद्री के रिग्राइ की थी इसलिए हिलाजी की पहली गुरू उनकी मां ही थी। हिराताजी के त्यकिरत में उनकी मां का असर स्वरी ज्यादा दिरवाई देता है। दिलामा को हैतर अली और रगजी रिग्ह की तरह जिसी क्रिका जाही मिस्ती थी। शाहजी ति वर्त्रावील किरायान कार्यास्त्री दियास्त कि नियम्ह कि नियम्ह विकासायाय । यहा आयता क्रायां दा दादासी कार्यादी रियणही केंडिन्छ। दि लाइजी फिल्ल् दुर्गीम कड कि भार कार्योधन हेन्ह उन्हें मरिवक स्वय स्ते रामायण, महाभावत अहि सन्य वागमिल ग्रन्थों ENTERDA ONSTATIA I ITS INTA IDEONALONE FS साथ -साथ तादाजी कोगलेव भी बिरागती की मह-BE E obroios REIDIN PEPDIENER POINTO ודש היות אי היוע וש היווגע לס העותובן 211 1 उत्ता तराजास के आतारकत दादाजी कोन हरीए और 100 की किरामारी जामद 100 मी परित्र - विकास्त

BIONA of MAR FROMIER ES DIL ZIMPIEN किर्णही म्हानमार । गान नगरम मिर रक महारही कि





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



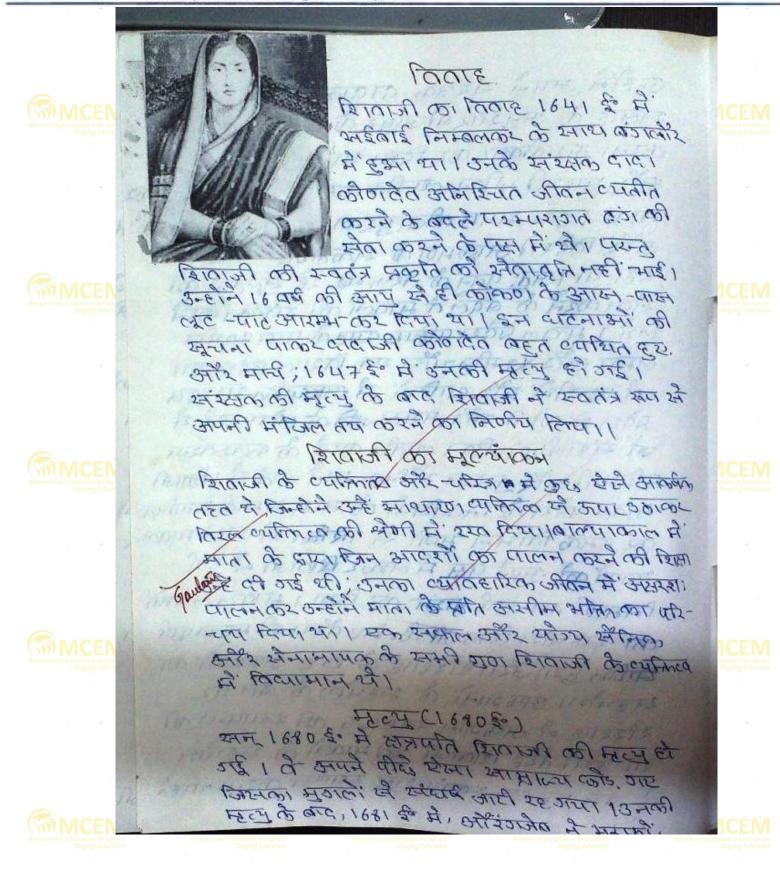




Ro obiota Rapio appie ENTE Fizze स्ताह के अनुसार बीजापुर के स्तान की सेवा ERT CEM (52-11 312-01012 (52 FGUI 211 1 3-ET = 2017 aID सीर साहरी भीतन त्यतीत करना आहेता भेयत्कर माना 1 321 समय लीजा पर का राज्य आपरी संवर्ष SETCH MICHON & STONOTHE ALTON रहा या 1370, पतन के तरफ कह, रहे स्लतान की न्डिक त्रकार्टांद्र दिक मिल्लास के सित्रक के निडका करि लमिवि मार्ग के आय मार्टी 12 में लाम 1 दिल लाम्बा अर्थे 19 मील-पीडा एक विशाल प्रदेश था। भी पहाडीयों आहे पाहियों से आह्यादिन था। इस कि क्रिड रही के क्रिस र गरा हा दे कि क्रिक में रही हो menerge of Fire altres rate of wire is the तिराही। हि मिल मिम लागीह आहल ही ही हिराही MCEN/ मावल प्रदेश के निलमिलों के साथ समयक स्थापित लगम 1 पार जि तामे मा हिला हा भीवी केन्द प्र - दिन् भिरायादी उलाल में मार दिन लियादा וההווני א נודא ו ווהא בתו הבדוג ליותו וה לסואדה का स्तहमोग हिम्ला के लिए तैरना ही महत्तपूर्व सारित हमा मेरा होर्टाह के लिए अफगानी' का 27 PAD & COLUBER & IFAIRCAPAS II COLUBERS Ro CHANIES RO HUTHIE HIR PROPER & SITESTS 1 dress to imont for Paratel 335 Par for ham us to mannes sois kinnes and us an a do 211



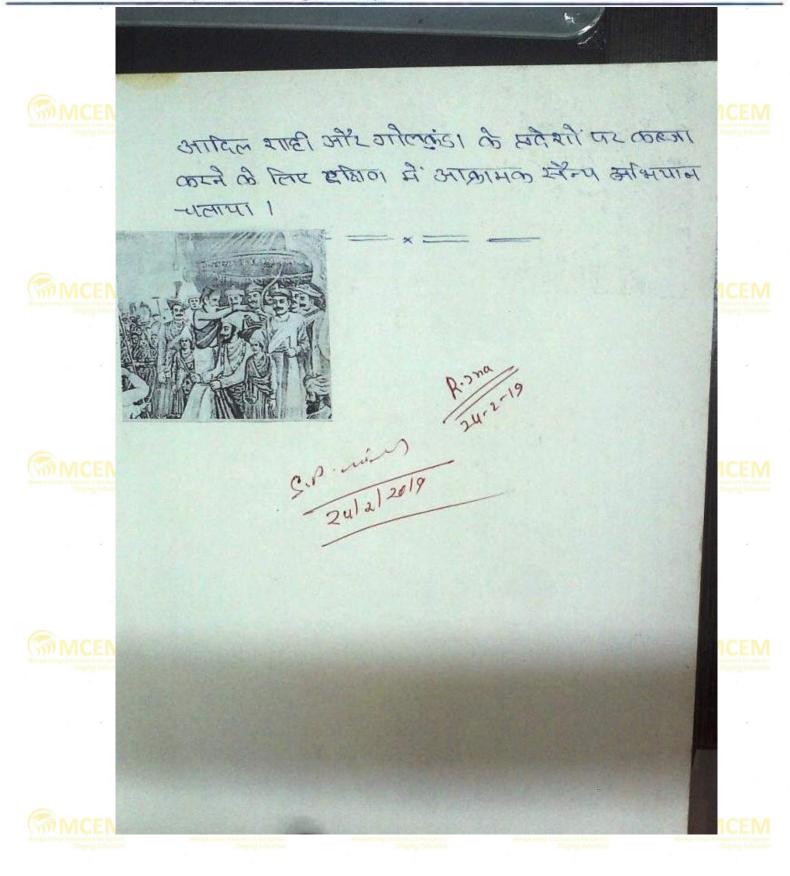








Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







क्रियात्मक शीख 米 : ACTION RESEARCH TOPIC :- "कहा 9th" के विद्यार्थियी 4 गाणित विषय के प्राप्ते अक्रान्ये का दीना । शोधकर्ता जाम :- स्टाप्ट कुमारी भील :- 701 मत्र :- 2018 -20 वानिक्टेशन नः :- 1850150400 कॉलेज :- मेंत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंत, हाजीपर





प्रकार के प्रमावना हैं कि कि हैं गड़ांक आषा में "सीरवने" बीतन्पाल al सामान्य अर्घ ाडीक्षा = 001 की जाने À विदालम विश्वा का अर्घ अल्यान जाता वन्नी जै ्रमाया দিন্দী আৰিন কি গ্ৰীয়িক क्षमता को जानने के लिए ब्रीझा का प्रयोग करते है। जब हम। किसी जान की भीखते हैं, ती उसे " ही हा" कहा जाता है। इस शब्द की उत्पति संस्कृत आषा के अवद " विश्व" धात, की दुई है, जिसका अर्घ A 221 व अीरवाने भीखने काल में बिषा में प्राचीन TOSDINIP 6.8 माम जिम a तात्पर्य जतम प्रकाश ऊतम न्ताल तमा राजनीतिकं , शारीरिक , की प्राचीन मुख्यतः हिन्धि and मीमित तक ही माज्ञाझेक, अग्रीतेक तथा सीन्दर्भ भुनेने दोन वल्कि भैनिक केवल बीसा का उद्देश्य भी, उस ममम् श्चीमा। आजीवन - प्लन आचानिक 3cyou 1 9200 कंबता भाष a जीवन 9 निवंतर है. व्यक्ति वाली प्राफ्रिमा SP आयामी all भीवजीपमौञी ार्श्वाक्षा आतिविक्त ार्श्वीक्षा a विद्यालयी न्माध्य व्यक्ति, अमाज, अपनी 러 ाधीम्ला à. SIAT chad Hatt (h) 2211 DISTINCT ्रमानांतवित chadl न्नस्वी জী पोल उर्वते Van. 221





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

ाही हा के संकुचित अर्थ से आहाय उस हिहा से है, MCEM Tail जी एक निक्रियत स्थान अर्थात विद्यालय कॉर्तेज 211 में दी जाती हैं इसमें बिझा की एक निबिचत योजना En विधियों से जान हीती हैं। यह एक मिक्रियत दिमा जाता हैं, जी कुछ विषयों तक ही सीमित सहता हैं। अवाकि हिम्ना के व्यापक अर्घ का आश्चाय -1007kg " जी ही हा आजीवन - पलती है ।" यह ाबी झण बातनक के जन्म में प्रांचम होकर उसकी आवश्यकताओं इन्द्राओं की प्रति कारते आयू बढ़ने के आध्य - साध मृत्यू तक 'पलती बहती है। अतः हीसा के वास्तविक अर्घ के अनुसार वालक को अनियांत्रित वातावरण में न वहकर उसके क्रतमाविक आह्यात्मिक, भामााजिक विकास प्र बल दिया जाघे, हीझा मानाझेक आकित तथा व्यक्तित्व e ab OT विकास करती है। ही झा के आपार पर ही बात्नक पर्मावरण की आमंजरूय जम्मापित कवने में अफल arten होता है। विक्वा का मानव में विश्वीष 1 2 623 -HEed भीवन में MCEM विभिन्न विषयी की ाडीक्षा का महत्व होता है। इस वैज्ञानिक युज में विनान के क्षेत्र में हिसाब-किताब ইনু গাড়িন में, आषां - वादन, नाटक आाप के मिए hart आषा विश्वण देनि विषमों न लेकर निराशा m अन्भव कवते





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

बालक आणित की अंक्रियाओं को अम्मझाने में विश्वेष कार्च नही दिखाते हैं। इसका प्रमुख कारण कक्षा श्रीक्षण का प्रभावी न होना तथा बालकों का विषय के प्राप्ते विश्रोष अपनि न लेना हैं। कर्तमान मुग में विाक्षित तथा प्रतिमावाली ाबीक्षकों প্লাহা विधियों À कारके उगणत विवय म्या२ ब्रीक्षण कवामा आ वहा है। परन्तु अभी इस विषम m में वांद्रनीय/ अधार संभव न ही सका है। कार्या उत्तर होते के हिंदी मह रहे के उत्तर माध्यामें के उत्तर माध्यामें के अन्यतर क विद्यालय के कझा 9 के विवार्धियों में "आणीत विषम्" के प्रति अकार्च पर " शोध कार्य "प्राहीष्ठ, मानि कि मैरे किया द्वावा जामा । 1. Thisith Fo to former & tremute -उद्देश्य :-* प्रक्तूत- किये गमे क्रियात्मक क्रीच के निस्नालीखित उद्देश्य है। =) हात्रों में अपनी कहा। के अनुरूप आदीराम के प्राप्ति होना। व्यवहार में परिवर्तन लाकर आणीत विषय m ikis (11 a प्रज जान 1 मिटले 115(2) 15 H 16 1913 संक्रियाओं का बीच जाणतीम मि हिंदाउ (गा विषम् किंग्राना तथा संपूर्ण जान किय्याना । गण 999201 mì a र्राष्ट्र के म्यूकी रुणित IV ţ 3514 **IFI3** वान्द्रना । **FIGH** की আগীন কা उनके जीवन में प्रमोग करना . V) मीखना । Incounter 50 Batharace 15TP State-TORENES THEFTER FEMALES FATERIE FORE











* अमस्या के कारण :- > अमस्या के क्रष्ट कारण विमन है:- > गणित विषम में इर्जने का न होना। > गणित विषम में इर्जने का न होना। > विषार्धीयों का विषालय में प्रतिदिन अपस्थित न वहना। > विषार्धीयों का विषालय में प्रतिदिन अपस्थित न वहना। > विषार्धीयों का विषालय में प्रतिदेन अपस्थित न वहना। > विषालय में उत्तित घिरण सामार्ग्रियों का न होना। > इग्री के क्रम अच्यत ग्राणित विषय की अच्यास पुत्रितका तथा विषम से संवोधित लेखन सामग्री का न होना। > ग्रिक्त तथा विषम से संवोधित लेखन सामग्री का न होना। > ग्रिक्त दासा विषम से कावोधित लेखन सामग्री का न करना। > ग्रिक्त दासा विषम के प्रावित्र उपित प्रैं उर्गते प्रैव्राण प्रतन न करना। > वार्क्त की काव्या व प्रावेक्या में प्राविस्थाति न प्रावेक्या का न होना। वार्क्या की काक्या व प्रावेक्या का न होना।
> अछित विषम में कम्चे का न होना। >>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
> गणित विषम में कम्चे का न होना। >>> >> >> >> >> >> >> >> >> >> >> >> >> >> >> >> >> >> >> >> >> >>
॥) विद्याप्रियों का विद्यालय में प्रतिदिन उपस्थित न ब्हना। ॥) विद्याप्रियों का विद्यालय में प्रतिदिन उपस्थित न ब्हीना। ॥) विद्यालय में प्रतित प्रधिन्न सामाग्रीयों का न होना। ॥) दियालय में प्रतित प्राणित विषय की अञ्चायन पुष्टितका तथा विषय की अञ्चायन न होना। ॥) दात्रों के क्स अच्यत प्राणित विषय की अञ्चायन पुष्टितका तथा विषय की प्रावन की प्रति त्रेचन सामग्री का न होना। ॥) द्वित्रका तथा विषय की प्रान्त के प्रति उपनित प्रेवन सामग्री का न होना। ॥) श्रिक्क द्वारा विषयी कान के प्रति उपनित प्रेवना प्रवन न करना। ॥) श्रिक्क द्वारा विषयी कान के प्रति उपनित प्रेवना प्राप्त न करना। ॥) श्रिक्क द्वारा विषयी कान के प्रति जमित प्रेवन्ति का मियंत्र न करना। ॥) श्राव्यक्त के काला ति प्रावर्ग की मियलय के काला ति व्यक्तिकन के द्वारा न होना।
॥) विषालम में अपित घ्रीघण सामाग्रीयों का न टीना। आ) इत्रिंग के क्रम अपित ग्राणित विषय की अञ्चायन पुन्नितका तथा। विषय की संबोधित लेखन सामग्री का न होना। भ) इत्रिंग के क्रम अपित ग्राणित विषय की अञ्चायन पुन्नितका तथा। विषय की संबोधित लेखन सामग्री का न होना। भ) जिप्तल दाया विषयी बान के प्रति उपित प्रेयन सामग्री का न करना। भे जिप्तलय में व्यास्या के कार्य्या का विद्वत्वेषया **- भाष्टम तथ्म व अव्वलीकन शोधकर्त्त का स्रियंत्रण प्रेयालय में व्यास्याति का स्राया व आव्यापित शियकर्त्त की मंत्रा की स्निमित का अव्वतीकन के झरा
MCEM () इन्हों के क्स अधित जाजित विषय की अञ्चाम पुनिस्तका तथा विषय की संबोधित लेखन सामग्री का ज होना। () शिश्वक द्वारा विषयी बान के प्रति उम्पित प्रैरू ज करना। () से समस्या के कारणों का विद्यतेषपा ;; () का का विद्यतेषपा ; () का का विद्यतेषपा ; () का
पुनिस्तका तथा विषय की कांबीधीत लेखन क्सामग्री का ज होना। भे होक्कि द्वारा विषयी बान के प्रति उप्ति प्रैरत प्रैरणा प्रकान ज करना। <u>भे क्समक्या के कारणों का विद्वलेषपा भे</u> <u>का कारण काहम तथ्य आधारत का नियंत्रल</u> <u>विद्यालय में उपार्थियाति तथा तथ्य व अवलोकन आधारत का नियंत्रल</u> <u>1 उपार्थ्यात का अवलोकन के द्वारा</u> व आधारित नियंत्रण मे ज देना।
पुनिस्तका तथा विषय की कांबीधीत लेखन क्सामग्री का ज होना। भे होक्कि द्वारा विषयी बान के प्रति उप्ति प्रैरत प्रैरणा प्रकान ज करना। <u>भे क्समक्या के कारणों का विद्वलेषपा भे</u> <u>का कारण काहम तथ्य आधारत का नियंत्रल</u> <u>विद्यालय में उपार्थियाति तथा तथ्य व अवलोकन आधारत का नियंत्रल</u> <u>1 उपार्थ्यात का अवलोकन के द्वारा</u> व आधारित नियंत्रण मे ज देना।
न होना।) शिक्षक दासा विषयी बान के प्रति उम्पित प्रेरणा प्रदान न करना। न करना। <u>**- र्भममस्या के कारणों का विर्वलेषपा **-</u> <u>No कारणा श्राहम रण्म श्रोष्पकर्त्ता का नियंत्रण</u> <u>विद्यालय में</u> उपार्श्रियाति <u>दात्रों की निर्मामत</u> <u>1 उपार्श्वियाति का</u> अवलोकन के द्वारा <u>म रागारित</u> <u>श</u> ाव्याति का न रोना।
न करना। <u>२२२ कामक्या के कारणों का विद्यतेषपा</u> <u>२२२</u> <u>२२२</u> <u>२२२</u> <u>२२२</u> <u>२२२</u> <u>२२२</u> <u>२२२</u> <u>३ोष्पकर्त्रा का नियंज्ञ</u> <u>विद्यालय में</u> <u>इराजे की नियमित</u> <u>३पारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>इराजे की नियमित</u> <u>३पारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>३पारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्पति</u> <u>वा</u> <u>उपारिष्ति</u>
े प्रालम में अगरुगते का विस्तेषपा रे- <u>भिन्नालम में अगरियाति का सिय व अवलीकन</u> शीयकर्ता का नियंत्रल विन्नालम में उपारियाति का सम्प्र व अवलीकन शीयकर्ता का दात्रों की निममित शनिस्टर व 1 उपारियाति का अवलीकन के द्वारा न होना।
MCEM No काञ्रण आहम तण्य आविकर्ता का नियंज्य विद्यालय में उपार्थियाति हात्रों की निममित शनिक्टर व 1 उपार्थियाते का अवलीकन के हाश न होना।
विद्यालय में उपारेष्याते त्य तेष्य व अवलीकन शीद्यकर्ता के हात्रों की क्रिमसित शकिस्टर व 1 उपारेष्याते का अवलीकन के हारा पत्र आचारित सिर्घत्रण में न न होना।
1 अपस्थित का अवलीकन के द्वारा पत्र आवारित सिर्घत्रण में न न होना।
1 उपस्थियाने का अवलीकन के द्वारा पत्र आधारत मिर्घत्रण में न न होना।
व जेखन कि हात्रों के पास अवलोकन दारा किमंत्रण में।
अन्नाव हीना। का अज्ञाव है।
199104 H BAD D BAD
अभाव होना। विद्युकर की आधारित नहीं थे।
4 अञ्च्यास तथा उचित हरिसण विषियमें का जन ही पाना दारा जावारित अनुमान वारा दारा दारा दारा





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

े क्रियात्मक प्रतिकल्पनार्थ ::- आर्थ कहा में हात्री की जिसमित उपक्रियति में मुखार हैतु कच्चों ⇒ आधा - आधा आभिजावकों को अप्रपर्क कबके उपनिष्याति में di I THE सुपार किया जा सकता है। विपालयं में हीटी कन्नाओं में हात्रों की कांचेयों की ध्यान में बरवते दुए तथा उनकी कानी विकासित करने हेतु उपित विधियों असे - खेल विधि , फियाकलापों धारा , अमण धारा आदि के दारा क्रीक्षण प्रकान किया आये। जाणित विषय में कारी हेतु भोजियाओं को खेल दारा भीखाया आये। ाडीक्षण सामार्ग्रीयों तथा अञ्चास पुस्तिका की उपलविद्य में सुदार हेनु आदीगम सामजी तथा पुबितकाओं के साथ - साथ पेंसिल आपि की भी व्यवस्था की आर्ये। the international contraction - प्रिकल्पना प्रवीक्षण हेतु कप्रवेखा रे विचालय में होटी कझाओं के हात्रों तथा बडी कझाओं के इात्रों को क्रियात्मक आतिविधिमों तथा खेल प्रविद्यि SISI गाणित विषय का ाद्वीझण किमा आमे। मानि हाजों में वहित आचेगम कतर की आदि ही काके। आणतीम को क्रिमाओं को असान तबीके को व्यमझकर आविजम क्तर Sale there are and the शोई की जा न्मकती वार कालाव कर जाहाजान गर I HATCH STP FR. SHAT





Shaping Education

	अ फ्रीयाएँ जी आवंग्न की विधि अपीक्षित लामय
Shiping Coloration	1 ही साली दाल्लों की उपश्चिम्नाति अपश्चिम्नाति अपश्चिम्नाति अपश्चिम्नाति अपश्चिम्नाति अप्रिम्नाति अप्रिम्न
2 - X	
	अर्जित विषय जाइ, घराव, गुणा, सरायक तालिमा, अर्जे आर्थ सांक्रियाओं का स्थामज्जी सींक आदि प्रतिषिन तीली द्वारा क्रियांकलाप द्वारा द्वारा द्वारा
Matry & College of Handrace	MISIN
	अतापन उन्ह पान्तापपा पक्तुआ प्रत्यक्ष कान वय 5 टापा 3 के साथ जाणित विषय को पढाना दैना पास्त- सॉफरी, प्रतिदिन जैसे शेक का आयतन या क्षेत्रफून विकता के आईसक्रिम निकालना है तो हम उनके सामने साथ
	4 अग्नित के कठिन व आसान अञ्चास कॉपी एव अञ्चनों का समिसालित रूप से पुरितका अस्मादित राष्ट्रकार्य पिमा जाना एवं कार्यकलाष में जिसको अतिषिन जान्या जमा। विद्यि में
	अणित विषय की कार्बाधित कांकी वार्तालाप, जिलायाओं तथा कामकयाओं का काम्प्राधिक वातान्वित प्रतिदिन इसमाधान करने हेनु वार्तालाप पर्चा विाधि
	6 जिम्न आयिगम कर के बालकों की अतिबिकत कर की जाणित विषम का जान वैना तथा उनकी समारुवाओं का समायान कर आयिजम कर में प्राष्ठ करना।
MCEM	





Shaping Education

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

सहायक कामग्री :-× विक्रिण आदियाम सामग्री (पार्ट, आकृत्रि, तीलियां आदि) = विधि :-1 THANS * की सहायता क्रिमात्मक पविकल्पना हेतू प्राह्यीझू नै अन्य = आणित विषय में Fasmula की याद करवाया, उन्हें आकृति से मंबादीत प्रधनों की करवाया। इसके लिए सरल की जरिल की और वहते- इए क्रमानूसार पहले संक्रिया कर्वामा भिर का जीन **MCEM** R आधेगम स्तर की कठिनता को बदाकर क्रम्झा: बीजगाणित के क्षेत्रफल के आम्पतन के सीरवामा । न्मूत्र याप करना वामक्याओं **d**II तथा उनकी क्षममें इात्रीं ने कार्न A FETTE गमा। जिससे हात्रों में जाणित विषम ममाधान किया की बदाया गाउद्दी कीए की मबने गम्क ईक मिर के जाया । जमे। ाजिसके उतर किमे कै उपभक्त मवाल 99201 ुक्स 521 ¥. मार हात्रों ने आमानी व अग्रत and विक्रीना - विक्रिना योजना का तक फियान्तयन प्रते माट परिणामीं का मुल्यांकन प्रकवणी 914 तमा किमा जमा वयमं के आचार पर जामा । किञा





МСЕМ









Shaping Education



2-2115			
S.I No.	और्च के पूर्व की विश्वति	शीष्य के पञ्चयात् की विश्वाति	
1	जाषित विषय के प्रांति आदीक निरम्तता दिखाना ।	विधियों दाबा निबसता कम की जयी	SPINCEM Stephy (decetor
a	हात्रों की अपनी कक्षा में उसके अनुसार निपुण न टीना।	अभावी विवियों तथ्या सही जान हावा आधीञम क्तर में दृष्टि की आभी। ाजीससी वे आणित विषय में आधीक निपुण बने।	MCEM
5 3 4	गणित पिषय की काठेन संक्रियाओं को न व्यमञ पाना ।	उाचित श्रीक्षण विाचि धारा आठीत के प्रबनीं की आसान तरीके की समझाया जम्म।	
3	जौड़, धराव, भाज, गुणा आपि भाक्रियासीं का झिपुण न होना।		
5	न होना ।	मिर्मिन्न प्रक्रों के हल प्रारा वे	MCEM
	विभि म लेला।	अचित मार्ज दर्शन द्वार्थ हात्रों में आणित विष्णम के प्रति कराचे जाग्रात दुई तथा उनका आधिक मन लग्रना ।	MCEM







The first when the former of पार्वणामः -* में आणित विषय के प्राप्ते कामी का विचार्थमी शीख के पश्चनात 7 आधिक प्रभावी ढंग के जाणित आदीक विस्तार दुआ । **FT3** प्रमास करने लगे। जिससे उनका रामझने m विषय की बहा तथा दे जाणित के कठिन प्रवनी m A आचिंगम क्तर करने में पक्ष हुए। भी आसानी मे EA क्षमा कामस्य उत्तर चारू के हिंदि में भी वृद्धि दुई । भीड़, घटाव, गुणा, भाग आदि के भोफ़ियाएँ हुआ । साथ ही बीजगणित का जान FIE \$ व्यूत्रों , क्षेत्रफल निकालने वाले व्यूत्रीं तथा 90 आयतन निकालने and डुआ । फिनका क्त के याप अन्य নি দি দি দি দি उपयोग प्रबनीं में भी 150 करना सीरव आये। मूल्यांकन :-× परिणामीं भी हात्रों = मह To I के 3046 इआ À शोदा उसके सभी पक्ष तमा कौंशल उपवांत अँमे :- जान , बीद्य à वांद्रनीय पार्ववर्तन विषम् के जामित आमा तथा **ET3** आदीक एकाग्रता के लगे। समझने न्माम a जामित के पहली आदीक पडनों ont की अपैक्षा अीपता की समझने लगे।





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

	-: 1000 8 6000
	* परिणामों का नवीन पारिसिम्पतियों में प्रयोग :-
	अप्रोक्त पविणामों का माद प्रत्येक विद्यालय में ™MCEM
	वण्णीम किया भाषी तो उनका जानि आधक
	क्यामित्व होगा। तथा दे और भी प्रभावी दंग मे
*	allos and i so a so a for the source of
	अगव्य पायांग । इस समस्या का निराकरण भी पूर्णतः
	किया जा सकेगा । विद्यार्थियों का जान आदिक
	रूणायी व बोधारामय्ता को धारण किया दुआ "MCEM
	होगा । हात्रीं के न्यूनतम आध्ीगम क्रतर की
	भी मुद्याहा भा सकता है।
	The second of the second states and the second seco
	and a second for the second the second second the
	the white far the series and the series and the series and the series of
	to the set , talk -: talk top flore free since
	THE FILLS KTB TED HETE EDDEN HETEND A
	The second state of the second
	A Me aside the hase the frame the solute the
	I have betalling the tradition of MCEM
R.	







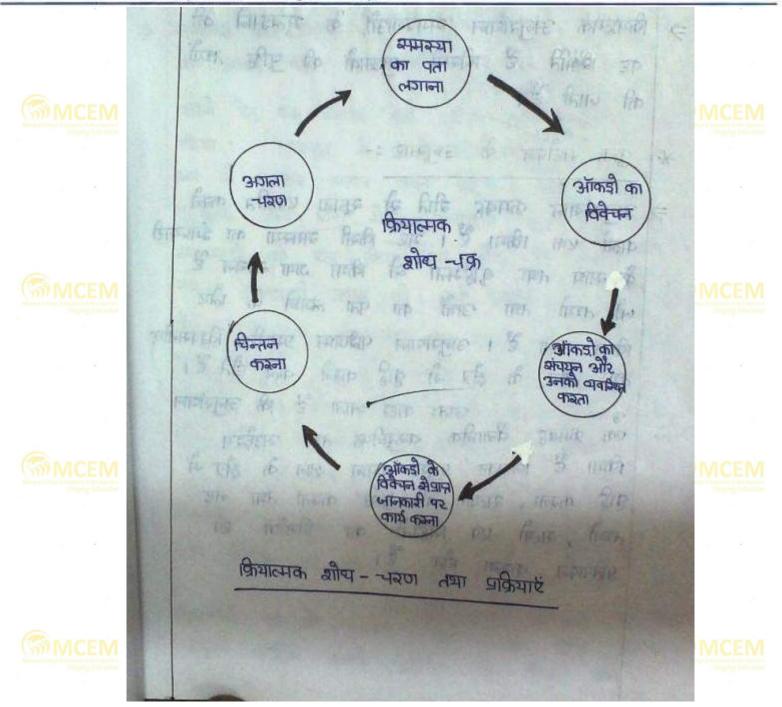








Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







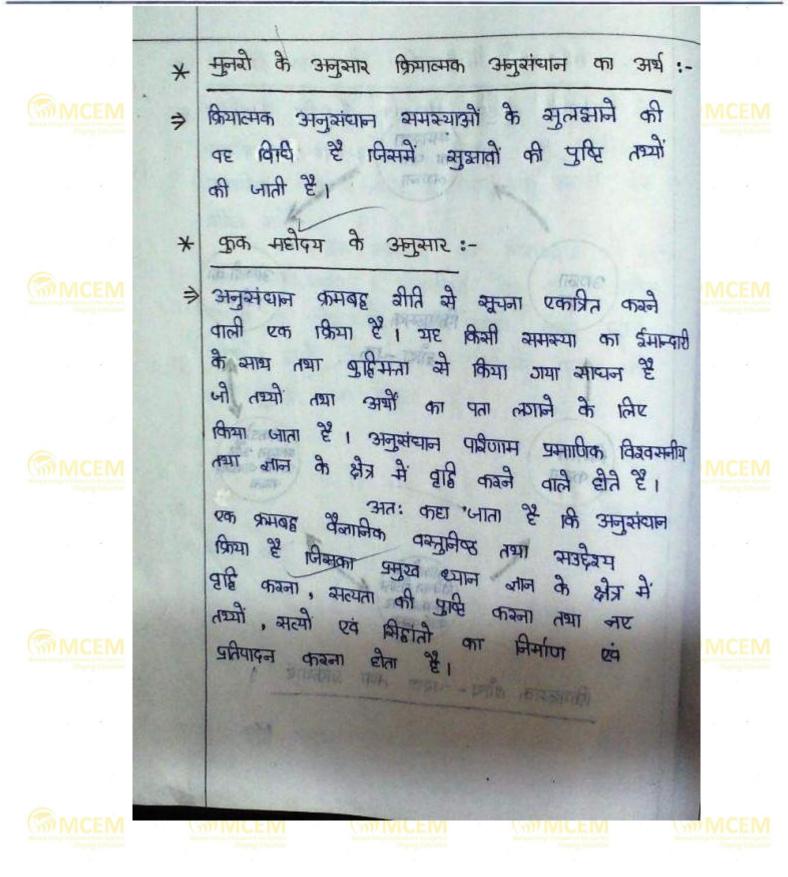
















Shaping Education

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

निम मुद्द आजार मेर कि विक प्रति 117 TOP ग्रम इस फ्रियात्मक शीव्य कार्य हेनु में अपने माता - पिता स्वप्रम \$ का अमार व्यक्त करती हैं। 1. 1010 TUP मझे शीय कार्य ामिन्हीने 527 करने हेनु दक्ष बनामा तथा अपना पूर्ण मीजपान 996 विभागाच्यस का भी विश्वोष अपने À किया 1 े तत्पञ्च्यात अपने 10न्होंने करना पाईंगा। म 200 आमार व्यक्त Al करते हर मोरा मार्जदर्शन সলি ; দ্বাহা 15-HGA A हल किया तथा औद्य के विषम भमस्याओं की प्रपान की। इसी शृखंला में अपने विद्यालय व्याम्पूर्ण जानकावी dh प्रयानाच्यपाक श्री पारुस नाम यादव का तमा হায়ক एवं भ्रीक्षिकाओं का भी पञ्चवाद करना -पाहती 支」 जिन्होंने बोब से संवाधित कार्यो m साष्ट्र्यों तमा एफत्र करने में मैरी पूरी सहायता शीष्य जिसमे की पूर्ण ही व्यका। कार्य अन्तनः अपने सह प्राह्रीक्षुओं 29

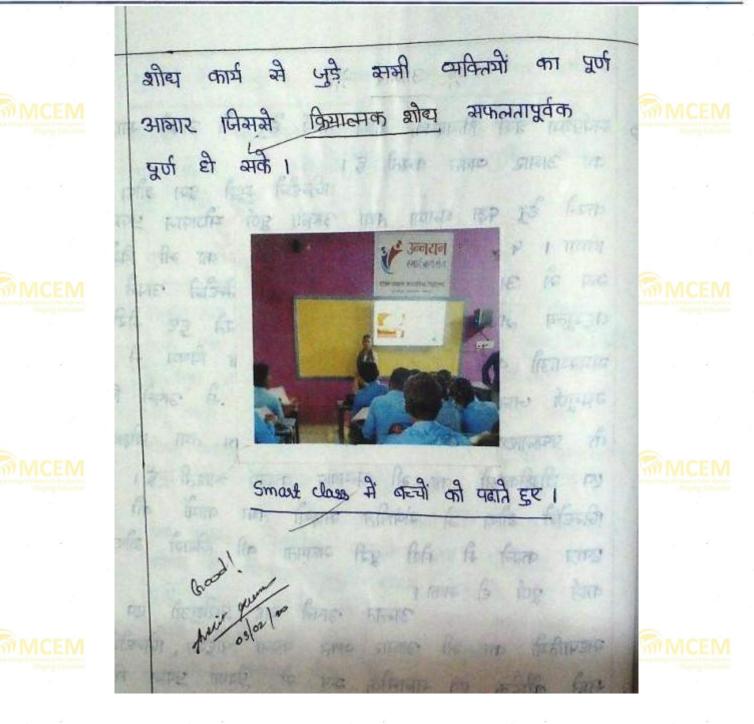
सहपाठियों का भी आमार व्यक्त करना -पाईंगा, जिन्होंने मुझे वौहिक एवं मानामीक न्मे म्द वैरुणा किए। प्रदान अंत में अपने वियाभीमों का भी सम्मवाद ञ्ची विद्यालय तथा 3नामार -पाईंजी, क्योंके झनकी स्त्रामेका करना CHAM a ार्चना 521

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







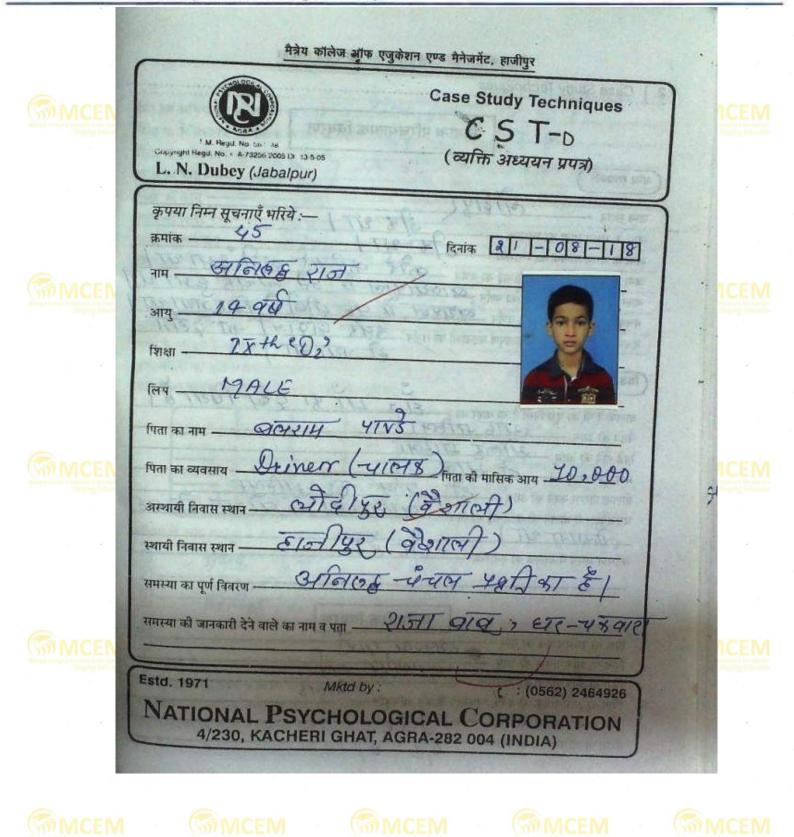
















Shaping Education

मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर Case Study Techniques 2 सामान्य परिचयात्मक विवरण जन्म सम्बन्धी LAN Dubey (analous) जन्म स्थान 91 जन्म के समय माता का स्वास्थ्य 25 जन्म के समय वालक का स्वास्थ्य जन्म के समय हुई किसी कठिनाई का वर्णन ab वाल्यकाल में हुई बीमारियों का वर्णन - @10-21/6101 36 बचपन में हुई दुर्घटनाओं का वर्णन _ 924 6 6 बचपन में हुई कोई अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन -398 m7 विकास सम्बन्धी बालक ने माँ का दूध पिया है या बाहर का ; बैठने की आय --3716 FILEON खड़े होने की आयु -YMOR LITRON चलने की आय -2-1101 बोलना प्रारम्भ करने की आयु -820 वाल्यकाल में बोलने की कठिनाई का विवरण 910-21 8701 · GE MADIAT 211 वर्तभान समय में बालक का स्वास्थ्य पारिवारिक विवरण पिता या अभिभावक का नाम पिता या अभिभावक की आयु पिता या अभिभावक का व्यवसाय पिता या अभिभावक की उनके व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति 41019 पिता या अभिभावक की शिक्षा -पिता या अभिभावक का स्वास्थ्य





Shaping Education

मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर Case Study Techniques | 3 पित ाया अभिभावक के स्वभाव का वर्णन 30/3/ 19279 Street El पिता या अभिभावक की बालक के प्रति अभिवृत्ति -पिता या अभिभावक की बालक से आशाएँ माता का नाम engineer 16 माता की आय 3 माता की शिक्षा -माता का व्यवसाय माता का स्वास्थ्य भाता की बालक के प्रति अभिवृत्ति 4672 माता की बालक से आशाएँ 59 माता का पिता से सम्बन्ध OV-माता के परिपार के अन्य सदस्यों से सम्बन्ध भाई-बहिनों की कुल संख्या --भाई -बहिन बालक का क्रमांक (बालक के क्रम पर 🗸 में गोला खीचिए) TID 1 2 3 4 5 6 7 बालक V V बालिका V V आय 16 arí 14 वर्ष 12 वर्ष 10 वर्ष 8 दर्ष परिवार के अन्य सदस्यों के नाम, आयु एवं उनका बालक से सम्बन्ध-1 429 8 71 1994 2 211 11 3 10 11 4 5 क्या बालक से उसके माता-पिता रनेह करते है ? हा 귀문 क्या वे बालक को सदैव प्रोत्साहन देते हैं ? ы क्या बालक की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति करने को ये तैयार रहते हैं ? नह 2 记出 वया वे आलक की पढ़ाई में सहायता करते है ? हां नहा क्या वे बालक को उसकी इच्छानुसार कार्य करने, खेलने की सुविधा देते हैं ? 訂 C CÎ







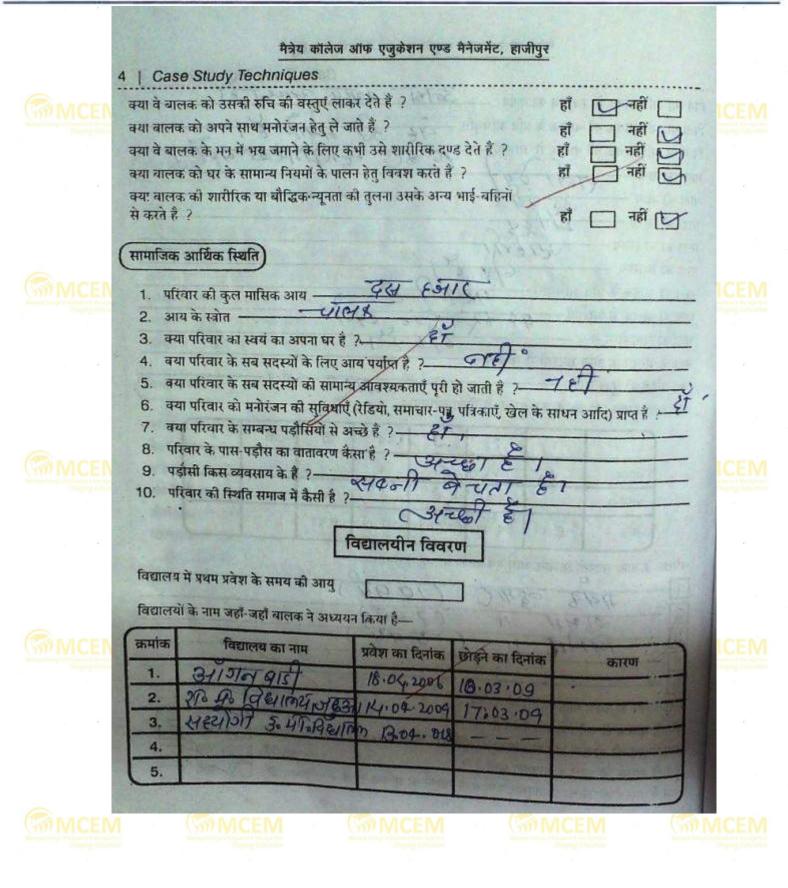






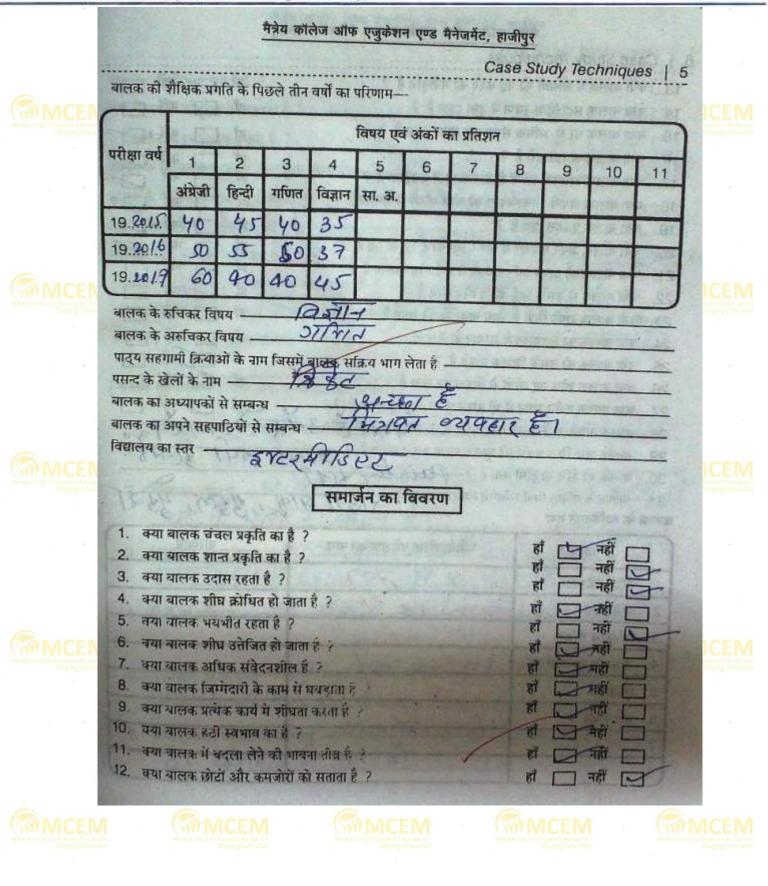


Shaping Education







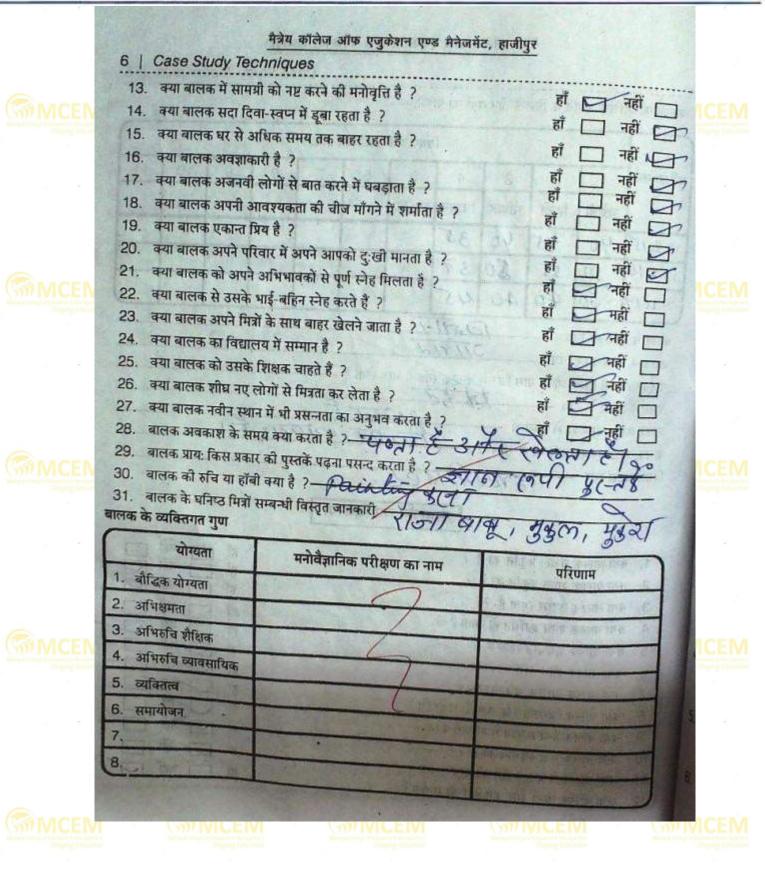






Shaping Education

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







Shaping Education

Maitreya College of Education & Management

मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर Case Study Techniques | 7 क्या बालक अधिक चंचल है ? िन नहीं क्या बालक में कौतुहल की भावना है ? नहीं क्या बालक में रचनात्मक प्रवृत्ति है ? ि नहीं Mari atter & Herr बालक के व्यक्तित्व सम्बन्धी दोषों का वर्णन st stat बालक के अपने प्रति दृष्टिकोण का वर्णन बालक अपनी समस्या किस प्रकार देखता है ?---311/218 17-26 बालक अपनी समस्या का मुख्य कारण क्या मानता है ?____ C64 31191 Private बालक की कौन-सी इच्छाएँ पूरी नहीं हो सकी हैं ?---School वालक की अपने भावी-जीवन की क्या योजनाएँ हैं ? Engineer Qqa बालक की समस्या के प्रति अन्य व्यक्तियों का अभिमत WYIY YATA STEPSTE STEPSTE 1. पिता का अभिमत -TOYE MOTAT bot ant & BIT about in 2. माता का अभिमत JUN 417 4 ChIN 3. अध्यापक का अभिमत QICT & STOTET ET VICT 08/21Put at at VIII STRVI 4613 \$145 Wind Regard मित्रों का अभिमत -4 JUG YAL VIE 5. पड़ौसियों का अभिमत -0/100 8 HO WITT 95 SUTT JUTT gé duo ralt gt 6. अन्य सम्बन्धी व्यक्ति का अभिमत affeid 05 AP2 MOT 18





Shaping Education

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

MCEM मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट MAITREYA COLLEGE OF EDUCATION & MANAGEMENT Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna EPIP CAMPUS, INDUSTRIAL AREA, HAJIPUR- 844102(VAISHALI) सौखने की योजना (Learning Plan) 0 र जाति 3 मार र हथोगी 324तर माध्यनिष विद्यालय , तमीश्वर प्रशिक्ष का नाम:-विद्यालय का नाम:fate:- 21/07/0/8 विषय:-DANT 3 उपविषयः-अध्यायः-417295 कक्षा:-- 17339 अध्याय का प्रकरण:-अवधि:-25m 17457 कालखण्ड:- 1 म विषयवस्तु से संबंधित पूर्व समझ की समीक्षा 1. सिकार्थियों की विषयवस्तु संबंधी पूर्व-समझ:-वया जो पढ़ावे जानेवाला शीर्थक है. उससे शिकार्थी पहले से परिवित है? वया विषयवस्तु के अंदर धर्थित बाते सिकार्थियों के परिवेश या आस-पत्न की दुनिया में शामिक है? कैसे या कैसे नहीं। ही 2 4610 जान नार्ट्स है/ प्रष्ठ के सिद्धा थि प्रति है / सिद्धा थी प्रति है / सिद्ध नार्ट्स के जन्द विद्ध के जन्द पार्ट्स की दुनिया में शामिक ही कि बाते प्राह्य सिद्ध था के प्रतिवेश के प्रति ही सिद्ध पार्ट्स के प्रति की प्रति की सिद्ध था के प्रति की प्रति के प्रति की प्रति के प्रति की प्रति की प्रति की पार्ट्स की दुनिया में आमिक ही कि बाते प्राह्य सिद्ध था के प्रति की प्रति की प्रति की प्रति की प्रति की प्रति की सिद्ध के जन्द की प्रति की ती ती प्रति की ती की ती ती प्रत की प्रत की ती ती ती की प्रत की ती ती की प्रत की प्रत की ती त Review of pre-understanding about the topic 2 प्रशिक्षु का विषयवस्तु से सम्बंधित पूर्व-समझ:-2 आगे का विषयवस्तु से सम्बाधत पूर्व-समझ:-au आपने इस विषयवस्तु को पहले पढ़ा या पढ़ाया है? क्या आप के पास इस विषयवस्तु की पर्यापा समझ है. जिससे कि आप उसे तिस्कुले को पुरुष सके? हो ? मने इस विषयवस्तु में पढ़ा ही पढ़ा है और उस विषयवस्तु हो ? मने इस विषयवस्तु को पहले पढ़ा है? क्या आप के पास इस विषयवस्तु की पर्यापा समझ है. जिससे कि आप उसे हो ? मने इस विषयवस्तु को पहले पढ़ा ती जात के पहले पढ़ा है और उस विषयवस्तु हो ? मने इस विषयवस्तु को पहले पढ़ा ती जात के पहले पढ़ा है? उस विषयवस्तु हो ? भूने इस विषयवस्तु को पढ़ा या पढ़ाया है? क्या आप के पास इस विषयवस्तु की पर्यापा समझ है. जिससे कि आप उसे हो ? मने इस विषयवस्तु को पहले पढ़ा या पढ़ाया है? क्या आप के पास इस विषयवस्तु की पर्यापा समझ है. जिससे कि आप उसे हो ? मने इस विषयवस्तु को पहले पढ़ा या पढ़ाया है? क्या आप के पास इस विषयवस्तु की पर्यापा समझ है. जिससे कि आप उसे हो ? मने इस विषयवस्तु को पहले पढ़ा या पढ़ाया है? क्या आप के पास इस विषयवस्तु की पर्यापा समझ है. जिससे कि आप उसे हो ? मने इस विषयवस्तु को पहले पढ़ा या पढ़ाया है? क्या आप के पास इस विषयवस्तु की पर्यापा समझ है. जिससे कि आप उसे हो ? मने इस विषयवस्तु स्तु हो पढ़ा या पढ़ाया है? क्या आप के पास इस विषयवस्तु की पर्यापा समझ है. जिससे कि आप उसे हो ? मने इस विषयवस्तु स्तु हो ? स्तु के स्तु के पहले के स्तु के 3. स्वूल पाठ्यधर्या-पाठ्यक्रम से विषयवस्तु का सम्बंध:-यह विषयवस्तु इस कला के पाठ्यपार्च-पाठ्यक्रम में उल्लिखित किन उद्देश्यों से जुडा हुआ है? १९ जिष थवस्तु निम्नुज (मर्कच्चि सर्ग) प्रहारी थे मुडा हुआ है? पह विषयवस्तु इस कक्षा के और किल-किल विषयों/ ईकाइयों से जुडा हे? जिसी भी मिखय हे नहीं मुर्र इउराहे भा यह विषयवस्तु पूर्व की ककाओं के पाठ्यक्रम में भी प्रामिल है. के में? 20 के पाढ़्य, इस में भी हो ? मह, विषयावत्तु देने की भीदता को के पाढ़य, इस में भी शामिल है। मंत्रिष्टु दोरा विषयवस्तु के शिक्षण से पूर्व विषय संदर्भ का अध्ययन किया गया? यदि हों तो संदर्भ का विवरण दे।





MCEM









Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

विषयवस्तु के शिक्षणशास्त्रीय योजना का निर्माण Pedagogical Planning of the content 1. विषयवस्तु/ उप विषयवस्तु का विवरण एवं सीखने का महत्व:-पाठ में दिए अनुसार विषयवस्तु का संक्रिप्त परिषय लिखें। फिर घिंतन-मनन के माध्यम से यह विश्लेषण भी लिखे कि यह विषयवस्तु शिक्षार्थियों को क्यों पढ़ाया जाना चाहिए? इससे शिक्षार्थियों के विकास के किन आयानों पर विशेष प्रभाव पढ़ेगा? भी भी मैंग होता है तिम्हु में क्षेत्रियत उनहे ह अभिक्यांव होते हैं, उम्रे पहले हमलोग की बते ह, उसके बाद अच्याय, दी दीक दी समझ पौते 1 इसका अयोग कहाँ - कहाँ होता है, सब् YETAT 2.सीखने- सिखाने की विधियों/प्रविधियों का शिक्षणशास्त्रीय चयन:-विषयवस्तु को पदाने के लिए आप किन-किन शिक्षण-विधियों/प्रविधियों को चुनेंगे? आपने उन्हीं कुछ सुझावालक वि प्रयोग त्वोख में इस विषयवस्तु हो अयोग अ अश्मेनरी विद्यि से खमझीने रोल-रवेल समूहिक चर्चा समूह कार्य एकल कॉर्व मयास कर्डेगा / आई सी टी : गोब री की कामगुरन ह





MCEM









Shaping Education

Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

सीखने की विधियों/प्रविधियों तथा शिक्षणशास्त्र का संक्षिप्त विवरण **Functional Plan** 75811 487 रमय (१७२१) ध्यान में एखने योग्य समावेशी बिन्दु क्या शिकार्थियों के संबर्भ को ध्यान में रखा गया है? प्रत्ये हे वरप्र \$ 345 -ERTIF आप किस प्रकार के उदाहरणों को प्रस्तुत करेंगे। शिक्षाचियों को स्वय से सीखने का कितना अवसर है? उन्हें सवाल पूछने का कितना अवसर है? अलिरत होता सीखने- सिखाने का समयानुपात क्या है? कालाश का कितना समय शिक्षक के सक्रिय निर्देशन में है और कितना समय शिक्षायियों को स्वतंत्र वितन व कार्य करने के लिए दिया गया है। क्या योजना में सामाजिफ, सांस्कृतिक, राजनेतिक, आदि मुद्रों को शामिल करने की संनाधना है? एन सी एफ -2005 व थी सी एफ -2008 बिन्दुओं का कितना प्यान रखा गया है? के सुझाए वया योजना में सामाजिक व संवैधानिक मूल्यों का समाहित करने की संभावना है? वया सतत एवं य्यापक मूल्याकन की कोई प्रक्रिया भी साथ-साथ चल रही है? इस योजना के क्रियान्वयन में आपको क्या-क्या चुनौतियां आ सकती है? उ " इस योजना में कितना लबीलापन है अर्थात कसा के माडील के हिसाब से इस योजना में बदलाव की कितनी संभावना हो सकती है। ET STAT क्या योजना में जेण्डर संवेदनशीलता का प्यान रखा गया है ? क्या कथा के अंत में पुनरायृति की कोई आवश्यकता है? यदि हा तो कैसे करेंगे ? प्रशिक्ष द्वारा स्वमुल्यांकन के सुझावात्मक बिन्दु (शिक्षण के बाद किया जाने वाला काय) किसने विद्यादियों ने सवाल पूछे? विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रमुख सवाल क्या थे? क्या उन सवालों के उत्तर को कक्षा में अवछी तरह तिन्धानि 2017 की बाबा में उत्तर को कक्षा में अवछी तरह विद्यानि 2017 की विद्यार्थना करनी होनी? इस विषयवस्तु के लिए किस प्रकार का गृहकार्य BARAII व्या हित्र विद्यार्थियोत्यको वि 951180 के सहायता या अनुपूरक शिक्षण 1921 जस्तवा है. उनकी पहचान मैंने की? Paty GEIGHT & GIAZZANI ST.+ किन किराण-अधिगय सामग्रियों (टी एल एम) का प्रयोग किया? उनकी क्या उपयोगिता रही? 5 राष्ट्र में देशमान प्रदे आहे जाह जा मुर्थीना महे? 972 उन उद्देश्यों को समझा जिसके लिए यह विषययस्तु भी? A diett इसका मूल्यांकन् मेने किया कि नही? 31-2 समम में आ गया कि निम् G She न मुझको कक्षा में वया किसी परेशानी का सामना करना इस विषयपत्तु को यदि दोबारा पढाना हो तो ने सीखने की Sill 3 4370 1215/1048 से संबंधित ऐसे संवाल जिन्हें अपने संस्थान के विषय-विशेषज्ञ अधवा मेटर से चर्चा करने की अपेक्षा है?





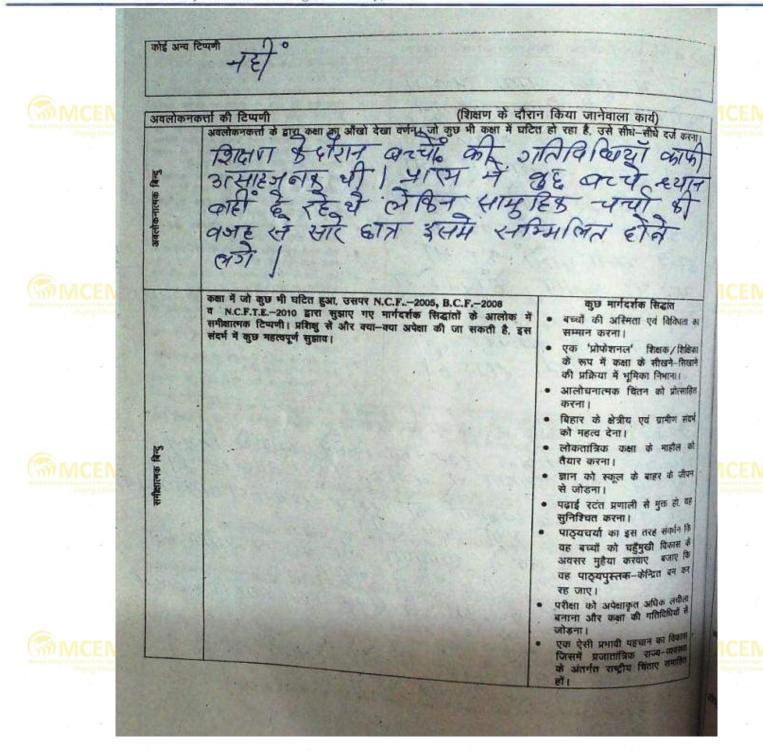








Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

















Shaping Education

Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

MCEM मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट MAITREYA COLLEGE OF EDUCATION & MANAGEMEN Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna EPIP CAMPUS, INDUSTRIAL AREA, HAJIPUR- 844102(VAISHALI) सौखने की योजना (Learning Plan) प्रशिक्ष का नाम:-XHI क्रमांक:-28 तिथि:-विद्यालय का नाम:-418211ST 22276 4/82128 ARel 1025 विषय:-उपविषय:-कक्षा:-अच्याय:-TXth 171239 (2791STANT अध्याय का प्रकरणः अवधिः-25m कालखण्ड:- ८ 4 विषयवस्तु से संबंधित पूर्व समझ की समीक्षा Review of pre-understanding about the topic 1. शिक्षार्थियों की विषयवस्तु संबंधी पूर्व-समझ:-यया जो पड़ाये जानेवाला शीर्षक है. उससे शिक्षार्थी पहले से परिवित है? क्या विषयवस्तु के अंदर घर्वित बातें शिक्षार्थियों के परिवेश आस-पाल की दुनिया में शामिल है? कैसे या कैसे नहीं? मान-पास का दानया में भागमल हा करते था करते नहा? हो । थह विभयवध्य दिखायी को पूर्व दी परिचित हैं दस विभय वल्तु है अनंदा जो भी काते कर्ताई अई है वे शिक्षायों परिवेश एवँ अगल - पाल ही दुलिया में भी सामिक हैं। 2 प्रशिक्षु का विषयवस्तु से सम्बंधित पूर्व-समझ:-2. प्राराषु का विषयवस्तु से सम्बाधत पूब-समझ:-वया आपने इस विषयवस्तु को पहले पढ़ा या पढ़ाया है? वया आप के पास इस विषयवस्तु की पर्याप्त समझ है. जिससे कि आप उसे शिक्षार्थियों को पढ़ा सके ? हा 9 उकरा विषय नहतु में दे दूस में पहा में हैं और पहार्थी के अपि उसे तया इस मिथ्य पत्न ही मुझे लगईन भी स्कूल पाठ्यचर्या-पाठ्यक्रम से विषयवस्तु का सम्बध:-यह विषयवस्तु इस कक्षा के पाठ्यचर्चा-पाठ्यक्रम में उल्लिखित किन उद्देश्यों से जुडा हुआ है? यह विपय वासु तिभूज को स्वींगतम रते में जारा ही यह विषयवस्तु इस कक्षा के और किन-किन विषयों/ ईकाइयों से जुडा है? किसी विषय में नहीं मुड़ा है। वया यह विषयवस्तु पूर्व की कलाओं के पाठ्यक्रम में भी शामिल है. केले? 27 - रिख्युवस्तु पूर्व की कहिएकोर्ग में भी पतिए अए महिल् हारा विषयवस्तु के शिक्षण से पूर्व विषय संदर्भ का अध्ययन किया गमा? यदि ही तो संदर्भ का विवरण दे।





Shaping Education

Pedagogical Planning of the content विषयवस्तु के शिक्षणशास्त्रीय योजना का निर्माण 1. विषयवस्तु/उप विषयवस्तु का विवरण एवं सीखने का महत्व:-पाठ में दिए अनुसार विषयवस्तु का संक्रिप्त परिचय लिखें। फिर विंतन-मनन के माध्यम से यह विश्लेषण भी लिखें कि यह विषयवस्तु शिक्षार्थियों को क्यों पढ़ाया जाना चाहिए? इससे शिक्षार्थियों के विकास के किन आवामों पर विशेष प्रभाव पढ़ेगा? सपम - त्रिभुजा तिमुभ के विभिन्न-भहार है : D समकोगा तिमुअ 3 रनमवाह 11 3 A 44 ATE 11 (4) ह्यून कीरा 11 5 37Fats 8 1VT 11 इस पाट के माख्यम भी अन्हें त्रिज्य की सारी वाली की समझाथा / 2.सीखने- सिखाने की विधियों/प्रविधियों का शिक्षणशास्त्रीय चयन:-कुछ सुझायात्मक विधि विषयवस्तु को पढ़ाने के लिए आप किन-किन शिक्षण-विधियों/प्रविधियों को चुनेंगे? आपने उन्ही विधियों/प्रविधियों को ही क्यों चुना? खोज प्रयोग रोत प्ले सेल समूहिक चर्चा विषय वस्तू की पढाने है लिए सामुहिड समूह कार्य एकल कार्य -पूर्ची अमेर अश्नोन्गरी सबसे पठन-लेखन परिभमण सिम्हाण विश्वि होती है। अग्नाज ही इगता ही की अमझाना काला आधारित ज़िल्ला प्रश्नोलरी विचि भाई सी थी : मोबाइ टी.वी. कम्प्युटर हारा





Shaping Education

Maitreya College of Education & Management

सीखने की विधियों/प्रविधियों तथा शिक्षणशास्त्र का संक्षिप्त विवरण **Functional Plan** ध्यान में रखने योग्य समावेशी बिन्दु योजना क्या शिक्षार्थियों के संदर्भ को ध्यान में रखा गया है? RATHIEB आप किस प्रकार के उदाहरनों को प्रस्तुत करेंगे। शिक्षार्थियों को स्पर्य से सीखने का कितना अवसर . dzi है? उन्हें सवाल पूछने का कितना अवसर है? सीखने- सिखाने का समयानुपात क्या है? एक कालावा का कितना समय विश्वक्षक के सक्रिय निदेशन में है और कितना समय शिक्षार्थियों को खतत्र बिंतन व कार्य करने के लिए दिया गया है। ard . SRY BAT यया योजना में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आदि मुद्दों को शामिल करने की समायना है? एन सी एफ -- 2005 व बी.सी.एफ -- 2008 के सुझाए 1201 287 बिन्दुओं का कितना ध्यान रखा गया है? क्या योजना में सामाजिक व संवैधानिक मूल्यों को समाहित करने की संभावना है? - दिला क्या सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की कोई प्रक्रिया भी साथ-साथ घल रही है? इस योजना के क्रियान्वयन में आपको क्या-क्या चुनीतियां आ सकती है? इस योजना में कितना लवीलापन है, अर्थात कक्षा के माहौल के हिसाब से इस योजना में बदलाव की कितनी संभावना हो सकती है। क्या योजना में जेण्डर संवेदनशीलता का प्यान रखा गया है ? क्या कक्षा के अंत में पुनरावृति की कोई आवश्यकता है? यदि हा तो कैसे करेंगे ? इस विषयवस्तु के लिए किस प्रकार का गृहकार्य उपयोगी होगा। प्रशिक्ष द्वारा स्वमुल्यांकन के सुझायात्मक बिन्दु (शिक्षण के बाद किया जाने याला कार्य) कितने विद्यार्थियों ने सवाल पूछे? विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रमुख सवाल क्या थे? क्या उन सवालों के उत्तर को कक्षा में अच्छी तरह रामझाया? या किन्द्र सुगली कक्षा में उत्तपर बात करनी होगी? विद्यार्थियों ने जिन्जा - 2 प्रहादि स्विशा किए जिस्ट्रान प्रस् (कृष्ट) AU BART YHOUT Halo 4610 1724 44101 क्या जिल विद्यार्थियों को विश्लेष सहायता या अनुपूरक शिक्षण की जरूरत है उनकी पहचान मैंने की EL BE 412 अत भा रहे थी। अहि 4101 atEl LYDT 8 अस्मिन स्थात के की जाजरा था। विषयवस्तु के शिक्षण में मैंने किन शिक्षण अधिगम साम्मीयों (टीएलुएम.) का प्रयोग किया? उनकी क्या उपयोगिता रही? भाषान के दौरान मुझको कहा। के प्रारंग कि प्रारंग के प्रयोग कि स्थान कि प्रारंग के प्रयोग कि स्थान कि प्रारंग के प्रयोग कि स्थान के स्थान क 241422 Da JIS ST & FAHIM 81 भयाम किया KII STIET मैंने किया कि नहीं? समझा, मेरी 3126 A भुरेनोन प्राप्त भारा मूल्या 85 भी छिथा। ते वै स्वान युझको कवा में क्या किसी परेशानी का सामना करना पडा? इस विषयवस्तु को यदि दोबारा पढाना हो तो मैं सीखने की ना ने क्या बदुनाव कर्लेखा कर्लगी? नहीं 9 भुटोने हे के दौरान मुद्देन की ई परिशानी नहीं हुरी। इस विषयवस्तु से संबंधित ऐसे सवाल जिन्हें अपने संस्थान को विषय-विशेषक्र अथवा मेंटर से घर्चा करने की अपेक्षा है?















Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

कोई अन्य टिप्पणी (शिक्षण के दौरान किया जानेवाला कार्य) अवलोकनकर्त्ता की टिप्पणी ता का नटप्पणा अवलोकनकत्ता के द्वारा कक्षा का आँखो देखा वर्णन। जो कुछ भी कक्षा में घटित हो रहा है. उसे सीधे-सीधे दर्ज करन्म 3r HIE F JAID विलोकनात्मक al कक्षा में जो कुछ भी घटित हुआ, उसपर N.C.F.-2005, B.C.F.-2008 कुछ मार्गदर्शक सिद्धांत व N.C.F.T.E.-2010 द्वारा सुझाए गए मार्गदर्शक सिद्धांतों के आलोक में समीक्षात्मक टिप्पणी। प्रशिक्षु से और क्या-क्या अपेक्षा की जा सकती है. इस बच्चों की अस्मिता एवं विविधता क . सम्मान करना। संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण सुझाव। एक 'प्रोफोशनल' शिक्षक/शिक्षिक . के रूप में कक्षा के सीखने सिखन की प्रक्रिया में भूमिका निभाना। आलोधनात्मक विंतन को प्रोत्साति करना। बिहार के क्षेत्रीय एवं ग्रामीण संत को महत्व देना। लोकतांत्रिक कक्षा के माहौल ह गरमक बिन्द तैयार करना। ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीव से जोडना। पढ़ाई रटंत प्रणाली से मुक्त हो में सुनिश्चित करना। पाठ्यचर्या का इस तरह सर्वान है वह बच्चों को चहुमुखी विकास अवसर मुहैया करवाए बजाए हि यह पाठ्यपुस्तक-केन्द्रित वन झ रह जाए। परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लंबीत बनाना और कक्षा की गतिविधवें में जोडना। MCEN एक ऐसी प्रभावी पहचान का विसाह जिसमें प्रजातांत्रिक राज्य-व्यक्त के अंतर्गत राष्ट्रीय विताए सणी हो।





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

06 March 2022

2.4.6/3

शैक्षणिक परिभ्रमण प्रतिवेदन

कार्यक्रम का आयोजन-

बैठक प्राचार्य महोदय, संकाय सदस्य और बी.एड प्रथम वर्ष और द्वितीय वर्ष के छात्रों के बीच आयोजित की गई| जिसमें शैक्षणिक भ्रमण के विकल्प में दिए गए स्थान हैं-

- a) गया
- b) नालंदा, राजगीर, पावापुरी, घोड़ाकटोरा
- c) वैशाली

जिसमें छात्रों के बीच मतदान हुआ और राजगीर, नालंदा, पावापुरी, घोड़ाकटोरा में विकल्प 2 का चयन किया गया| छात्रों को एक फॉर्म दिया गया था जिसे माता-पिता को भरना था, जिसमें उल्लेख किया गया था कि उन्हें वहां बच्चों को भेजने में कोई समस्या नहीं है|

यात्रा पूर्व तैयारी

नाश्ता और बोतलें हाजीपुर से पैक की गई ताकि समय की बचत हो सके

हमारे संस्थान द्वारा शैक्षणिक भ्रमण के लिए 2 बसें उपलब्ध कराई गई थी।

छात्रों को संदेश (व्हाट्सएप) के माध्यम से बस के समय और ठहराव के बारे में सूचित किया गया।

छात्रों की संख्या -86

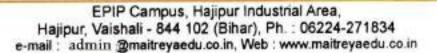
संकायों की संख्या-7

शैक्षिक भ्रमण का उद्देश्य

- <u>प्रभावी सीखना -</u>सीखना नया ज्ञान प्राप्त करने या मौजूदा ज्ञान, व्यवहार, कौशल, मूल्यों या वरीयताओं को संशोधित करने की प्रक्रिया है। जब अनुभव के माध्यम से सीखने की बात आती है तो सीखना अधिक प्रभावी होता है।
- 2) छात्रों के लिए शैक्षिक दौरे उन्हें शिक्षकों के साथ सहयोग करने का अवसर प्रदान करते हैं, और सीखने की पहल को बढ़ाने के लिए अनौपचारिक वातावरण के साथ नए दृष्टिकोण को एकीकृत करते हैं। अनेक शैक्षिक भ्रमण लाभों में कौशल विकास सबसे महत्वपूर्ण है। कई शैक्षिक दौरे के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, छात्रों को नई सेटिंग्स में कौशल, मूल्यों और सामान्य ज्ञान को लागू करने की आवश्यकता होती है।
- 3) व्यक्तिगत विकास -एजुकेशनल टूर चर्चा, संवाद और अनुभवों के लिए एकदम सही अनौपचारिक सेटअप प्रदान करता है जो समाज में किसी की पहुंच और प्रभाव को बढ़ाने के लिए टीम निर्माण, समय प्रबंधन आदि जैसे विभिन्न जीवन-कौशल विकसित करने में मदद करता है। व्यक्तिगत और पेशेवर संदर्भ में आत्म-जागरूकता पर ध्यान केंद्रित करना। मतभेदों और विविधताओं के महत्व को स्वीकार करना, और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति संवेदनशील होना, विचारों में अंतर के बावजूद।
- 4) संस्कृति का सम्मान -जब छात्र विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों की यात्रा करते हैं तो ये अन्य समाजों के विचारों, रीति-रिवाजों और सामाजिक व्यवहार से परिचित होते हैं। यह विभिन्न अनुभवों के माध्यम से हो सकता है। ये गतिविधियाँ छात्रों को सांस्कृतिक रूप से भिन्न स्थितियों में शामिल होने और उनसे उचित तरीके से निपटने में सक्षम बनाती हैं।
- 5) सामाजिक और ऐतिहासिक ज्ञान

शैक्षिक भ्रमण छात्रों को विभिन्न जीवन शैली, स्थानों, लोगों और युग से परिचित कराता है। जब शैक्षिक दौरे पर छात्र जगह और उसके लोगों के हर पहलू की समझ को विस्तृत करते हैं। छात्र प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करते हैं और जो शिक्षकों को उस विषय का विस्तार करने की अनुमति देता है जो सामान्य कक्षा के दौरान संभव नहीं है।

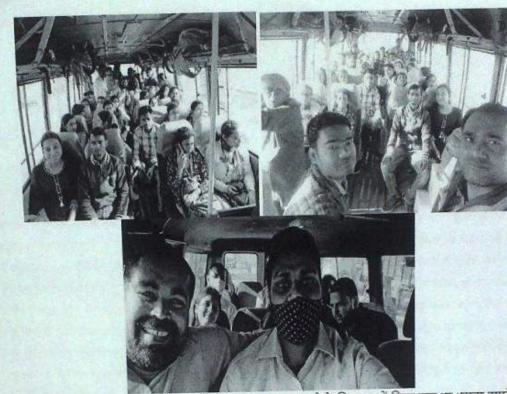
Page 1 of 10







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



हमने अपनी यात्रा 7: 00AM शुरू की दो बसें थीं। नाश्ता समय बचाने के लिए बस में किया गया था ।खाना हमारे कॉलेज द्वारा उपलब्ध कराया गया था।

Location 1-

NALANDA (11:00 AM)

हम लगभग 11:00 बजे नालंदा पहुँचे।वहां हमने एक गाइड किराए पर लिया जो हमें जगह के बारे में सारी जानकारी देता है। उन्होंने हमें सूचित किया कि –

MCEI



Page 2 of 10





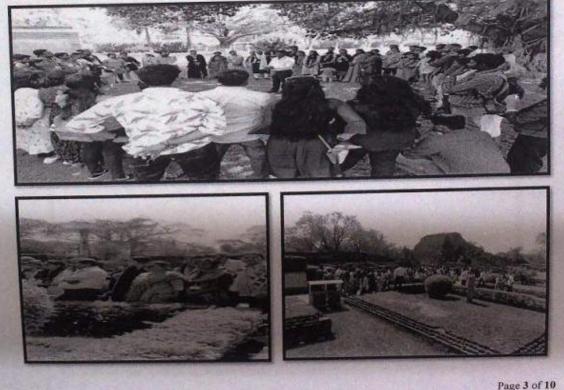


Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna





नालंदा प्राचीन मगध (आधुनिक बिहार), भारत में एक प्रसिद्ध बौद्ध मठवासी विश्वविद्यालय था। इतिहासकारों ढारा माना जाता है कि यह दुनिया का पहला आवासीय विश्वविद्यालय था, और प्राचीन दुनिया में शिक्षा के सबसे बड़े केंद्रों में से एक था, यह राजगीर शहर के पास स्थित है और लगभग 90 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में स्थित है। 427 से 1197 ई. नालंदा की स्थापना गुप्त साम्राज्य के युग के दौरान हुई थी, और कई भारतीय और जावानीस संरक्षकों ढारा समर्थित था - दोनों बौद्ध और गैर-बौद्ध। लगभग 750 वर्षों में, इसके संकाय में महायान बौद्ध धर्म के कुछ सबसे सम्मानित विद्वान शामिल थे। नालंदा महाविहार ने छह प्रमुख बौद्ध स्कूलों और दर्शनशास्त्र जैसे योगा के साथ-साथ व्याकरण, चिकित्सा, तर्क और गणित जैसे विषयों को पढ़ाया। विश्वविद्यालय तीर्थयात्री जुआनज़ेंग ढारा किए गए 657 संस्कृत ग्रंथों और 7वीं शताब्दी में यिजिंग ढारा चीन में लाए गए 400 संस्कृत ग्रंथों का भी एक प्रमुख स्रोत था, जिसने पूर्वी एशियाई बौद्ध धर्म को प्रभावित किया।







Shaping Education

Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

नालंदा जाकर हमें जो ज्ञान मिला

- > 5वीं से 12वीं शताब्दी तक इस स्थान का ज्ञान चरमोत्कर्ष की अवस्था में था। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के कारण चीन, मंगोलिया, तिब्बत, कोरिया और अन्य एशियाई देशों से बड़ी संख्या में छात्र अध्ययन करने आए थे। यहाँ अध्यापन का स्तर बहुत ऊँचा था। महाविहार में एक शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक शिक्षक द्वारा परीक्षण किया
 - ≻ महायान बौद्ध धर्म के शिक्षण का प्रमुख केंद्र नालंदा था लेकिन शिक्षा के अन्य विषयों को भी यहाँ चित्रित किया
 - ≻ अंत में 12वीं शताब्दी के अंत में आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने मठ को ध्वस्त कर दिया, भिक्षुओं को मार डाला और मूल्यवान पुस्तकालय को जला दिया। वर्तमान में यह स्थान एशियाई एकता और शक्ति का प्रतीक था, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए, नालंदा अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना निकट ही की जा रही है।
 - > नालंदा के खंडहर इतिहास में सीखने के सबसे बड़े केंद्रों में से एक के साक्षी हैं। कभी इस विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालय ने 5वीं-12वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान दुनिया के अन्य हिस्सों से छात्रों को आकर्षित किया। इस स्थान की प्राचीनता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि बुद्ध इस स्थान पर बार-बार आते थे। > उस समय द्वार पर द्वार पंडित हुआ करते थे। जो उच्च योग्यता रखते थे। विश्वविद्यालय में प्रवेश करने से पहले
 - उन्हें वहाँ के प्रश्न का उत्तर देना होता था। यह बहुत अच्छा अहसास था कि हम इस भूमि के हैं और हमें वहां जाने का मौका मिला।

LOCATION 2 RAJGIR (1:00PM)

राजगृह का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व है। वसुमतिपुर, वृहद्रथपुर, गिरिव्रज और कुशग्रपुर के नाम से भी प्रसिद्ध रहे राजगृह को आजकल राजगीर के नाम से जाना जाता है। पौराणिक साहित्य के अनुसार राजगीर बह्या की पवित्र यज्ञ भूमि, संस्कृति और वैभव का केन्द्र तथा जैन धर्म के 20 वे तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ स्वामी के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान कल्याणक एवं 24 वे तीर्थंकर महावीर स्वामी के प्रथम देशना स्थली भी रहा है साथ ही भगवान बुद्ध की साधनाभूमि राजगीर में ही है। इसका ज़िक्र ऋगवेद, अथर्ववेद, तैत्तिरीय उपनिषद, वायु पुराण, महाभारत, वाल्मीकि रामायण आदि में आता है। जैनग्रंथ विविध तीर्थकल्प के अनुसार राजगीर जरासंध, श्रेणिक, विम्बसार, कनिक आदि प्रसिद्ध शासकों का निवास स्थान था। जरासंध ने यहीं श्रीकृष्ण को हराकर मथुरा से द्वारिका जाने को विवश किया था।









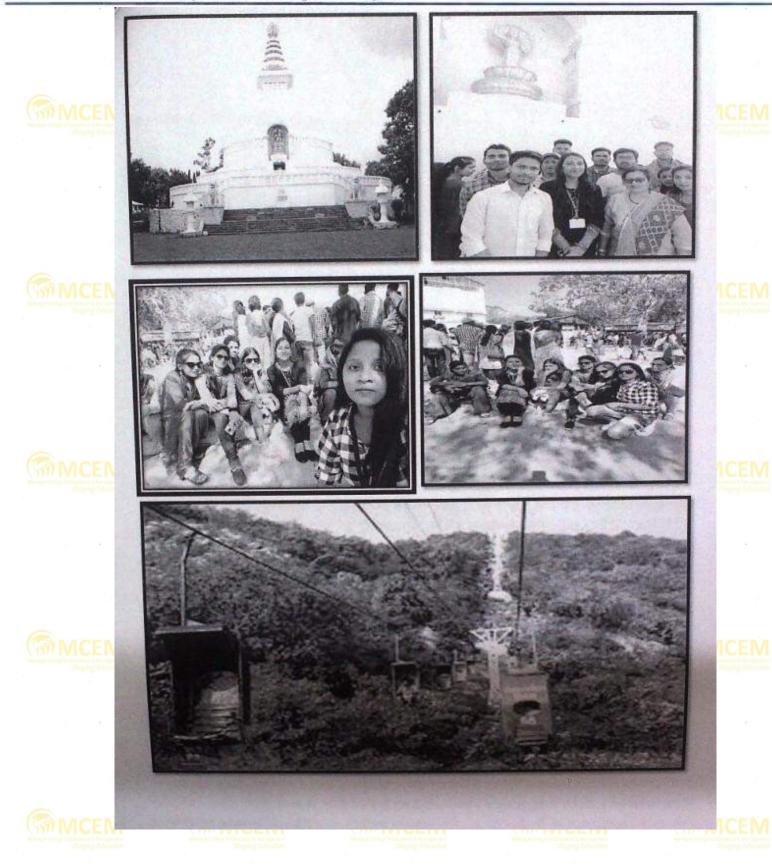








Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

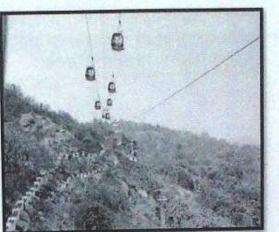






Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







RAJGIR ROPEWAY

- राजगीर रोपवे लाइन प्रकृति के पालने में एक अद्भुत भ्रमण है। यह बिहार राज्य में अस्तित्व में एकमात्र रोपवे है। सिंगल पर्सन सीटर रोप लाइन एक रोमांचकारी साहसिक कार्य है जो आपको सुंदर रत्नागिरी पहाड़ी की चोटी तक ले जाता है, जिसमें प्रसिद्ध विश्व शांति स्तूप है, जिसे पीस पैगोडा भी कहा जाता है।
- राजगीर का स्थान एक घाटी में स्थित है ताकि आप अपने चारों ओर सुंदर दर्शनीय स्थलों की अपेक्षा कर सकें। यह स्थान बौद्ध धर्म और इसकी प्रथाओं, रीति-रिवाजों और संस्कृति से समृद्ध रूप से जुड़ा हुआ है। बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम (बीएसटीडीसी) के सुझाव के तहत बिहार सरकार द्वारा राजगीर रोपवे को महत्वपूर्ण विरासत स्थल के रूप में सूचीबद्ध करने की योजना लागू की गई है। यह सदियों से बौद्धों, हिंदुओं और जैनियों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल रहा है।
- > टिकट की कीमत 80 रुपये प्रति व्यक्ति।

विश्व शांति स्तूप 400 मीटर ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। स्तूप संगमरमर से बना है और स्तूप के चारों कोनों पर बुद्ध की चार जगमगाती मूर्तियाँ हैं। इस पहाड़ी की चोटी तक पहुंचने के लिए "रोपवे" से होकर आना पड़ता है। इस स्थान को गृधाकूट भी कहा जाता है।

LOCATION 3 PAVPURI (6:30PM)

JALMANDIR -जल मंदिर का अर्थ है जल संदिर, जिसे पावापुरी में अपापुरी के नाम से भी जाना जाता है, जिसका जर्थ है कि भारत के बिहार राज्य में, पापों के बिना एक शहर, भगवान महावीर, 24 वें तीर्थंकर (जैन धर्म के धार्मिक उपदेशक) और संस्थापक को समर्पित एक अत्यधिक सम्मानित मंदिर है। जैन धर्म, जो उनके दाह संस्कार के स्थान को

Page 6 of 10







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

चिह्नित करता है। महावीर ने 528 ईसा पूर्व पावापुरी में निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त किया। मंदिर को लाल रंग के कमल के फूलों से भरे तालाब के भीतर बनाया गया है। कहा जाता है कि मंदिर का निर्माण महावीर के बड़े भाई राजा नंदीवर्धन ने करवाया था। यह पावपुरी के पांच मुख्य मंदिरों में से एक है, जहां "चरण पादुका" या महावीर के पैर की छाप है।









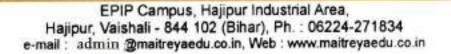
यात्रा से ज्ञान

- ≻ जल मंदिर का अर्थ है जल मंदिर, जिसे पावापुरी में अपापुरी के नाम से भी जाना जाता है, जिसका अर्थ है कि भारत के बिहार राज्य में, पापों के बिना एक शहर, भगवान महावीर, 24 वें तीर्थंकर (जैन धर्म के धार्मिक उपदेशक) और संस्थापक को समर्पित एक अत्यधिक सम्मानित मंदिर है।
- ≻ जैन धर्म, जो उनके दाह संस्कार के स्थान को चिहिनत करता है। महावीर ने 528 ईसा पूर्व पावापुरी में निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त किया। मंदिर को लाल रंग के कमल के फूलों से भरे तालाब के भीतर बनाया गया है।
- > कहा जाता है कि मंदिर का निर्माण महावीर के बड़े भाई राजा नंदीवर्धन ने करवाया था। यह पावपुरी के पांच मुख्य मंदिरों में से एक है, जहां "चरण पादुका" या महावीर के पैर की छाप है।

LOCATION 4 GHORA KATORA

राजगीर में घोड़ा कटोरा झील का नाम एक दिलचस्प तथ्य से पड़ा है कि बिहारशरीफ के पास स्थित यह झील घोड़े के आकार में है, इस प्रकार अधिक उत्सुक पर्यटकों को आकर्षित करती है जो झील के नाम के पीछे के इतिहास को जानने के इच्छुक हैं। यह असामान्य झील तीन तरफ से पहाड़ियों और साथ ही कुछ वनस्पतियों से घिरी हुई है। मुख्य शहर क्षेत्र से थोड़ा बाहर होने के कारण, यह एक बहुत ही शांत जगह है और पिकनिक के लिए बहुत अच्छी है। राजगीर में घोरा कटोरा झील का सबसे प्राकृतिक वातावरण से घिरा होना इस जगह का दौरा करने का एक निश्चित कारण है। एक झील में पहाड़ों के बीच होने के कारण इस जगह पर आने वाले पर्यटकों की बिल्फूल असली एहमास होता है। स्थानीय लोगों का यह भी मानना है कि यहीं पर राजा जरासंध का ठिकाना था।









Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna





यात्रा से जान

- > राजगीर के पास घोड़ा कटोरा झील एक खूबसूरत जगह है। कहा जाता है कि यहां राजगीर के राजाओं के घोड़े पानी पीते थे। झील का आकार घोड़े जैसा है और झील तीन तरफ से पहाड़ों से घिरी हुई है।
- > यह विश्व शांति शिवालय के पास स्थित है। पहाड़ियों से घिरी झील सुरम्य दिखती है और एक आदर्श यात्रा के लिए बनाती है। घोड़ों की गाड़ियाँ या तौंगा और साइकिल पर्यटकों को उन तक पहुँचने में मदद करते हैं।
- > यहां बोटिंग का मजा लिया जा सकता है। यह एक बहुत ही आरामदेह जगह है और हर कोई हवा और पानी कीआवाज सन सकता है।

यह स्थान बहुत ही शांत और दर्शनीय था।

Page 8 of 10





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna





07:30 अपराहन हम वहाँ से वापस चले ।यह सीखने का एक अच्छा अनुभव था। रास्ते में ट्रैफिक था। इसलिए हम रात के करीब 11:00बजे देर से पहुंचते हैं। कुछ शिक्षार्थी घर चले गए और कुछ कॉलेज में रुके जिनका घर दूर था।

शैक्षिक यात्राओं का क्या महत्व है?

शैक्षिक यात्राएं कई मायनों में महत्वपूर्ण हैं। एजुकेशनल ट्रिप पर जाने का मतलब सिर्फ स्कूल ग्राउंड छोड़ने से ज्यादा है। शैक्षिक यात्राओं में हमेशा एक प्रमुख शैक्षिक तत्व होना चाहिए, लेकिन शैक्षिक यात्राओं का प्रभाव और भी अधिक हो सकता है। शैक्षिक यात्राओं के महत्व में छात्रों को अपने सहपाठियों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने, नए वातावरण का अनुभव करने और कक्षा से दूर एक दिन का आनंद लेने का मौका देना शामिल है।

MCEN नई जगहें :

जब छात्र और शिक्षक कक्षा के बाहर एक साथ होते हैं, तो नए शैक्षिक वातावरण और अनुभव संभव होते हैं। छात्रों को कई चीजें देखने का अवसर मिल सकता है जो स्कूल में उपलब्ध नहीं हैं, जिसमें विदेशी वन्यजीव, दुर्लभ पौधे और शायद सितारे भी शामिल हैं यदि शैक्षिक यात्रा एक तारामंडल की है। शैक्षिक यात्रा पर पहले से चर्चा करना बुद्धिमानी है क्योंकि यह छात्रों को यह जानने की अनुमति देता है कि वे स्कूल से दूर अपने समय के दौरान क्या अनुभव करेंगे।

संबंध

कक्षा के रोजमर्रा के माहौल से दूर होने से छात्रों को एक दूसरे के साथ नए माहौल में समय बिताने का मौका मिलता है। वे सामान्य स्कूल दिवस की संरचना के बिना अधिक व्यक्तिगत स्तर पर जुड़ने में सक्षम हो सकते हैं। छात्र शैक्षिक यात्रा दिवस का अधिकांश समय छोटे समूहों में बिताने, अवलोकन करने, बातचीत करने और एक दूसरे के बारे में सीखने में सक्षम हो सकते हैं। शब्द के शुरुआती भाग में शैक्षिक यात्रा करना बुद्धिमानी है, क्योंकि यह छात्रों को सहपाठियों के साथ बंधने की अनुमति देगा, जिन्हें वे बहुत जच्छी तरह से नहीं जानते हैं।

अनौपचारिक सीखने का माहौल

शैक्षिक यात्राएं सामान्य स्कूल सेटिंग में उपयोग की जाने वाली पाठ्यपुस्तकों और जन्य उपकरणों का उपयोग किए बिना, कक्षा से दूर मूल्यवान शैक्षिक जवसर प्रवान करती हैं। शैक्षिक यात्राओं पर जाने वाले खात्र जन्सर अधिक अनौपचारिक वातावरण में मौज-मस्ती करते हुए सीख सकते हैं। यदि शैक्षिक यात्रा गंतव्य में स्टाफ सदस्य हैं जो जाने वाले खात्रों के साथ व्यावहारिक शिक्षण करते हैं - जैसे कि विज्ञान केंद्र या ऐतिहासिक संग्रहालय में - बच्चे किसी नए से सीखने के लिए उत्साहित होंगे

Page 9 of 10

CEM







Shaping Education

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

आनंद

कोई फर्क नहीं पड़ता कि छात्र शैक्षिक यात्रा के दौरान कितना सीखते हैं, उनकी पसंदीदा यादें दिन के उनके आनंद पर आधारित हो सकती हैं। एक दिन या आधे दिन के लिए भी स्कूल से दूर जाना छात्रों के लिए हमेशा रोमांचक होता है, और शैक्षिक यात्राएं हमेशा उच्च प्रत्याशित होती हैं। छात्र अपने दोस्तों के साथ मस्ती करेंगे और वे भी अपने स्कूल के काम पर नए सिरे से ध्यान देकर कक्षा में लौट सकते हैं।

CONCLUSION

यह शैक्षिक यात्रा हमारे जीवन की अविस्मरणीय स्मृतियों में से एक थी। जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकेगा।हमें अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए साल में एक बार ऐसी जगहों पर जाना चाहिए।अनुभव के माध्यम से सीखना सीखने का सबसे अच्छा तरीका है।इस तरह के अवसर प्रदान करने के लिए अपने कॉलेज के आभारी हैं

"I Travel because the best education is one you experience""

Ajay Kumar Singh Asst. Prof., MCEM. Hajipur

DR. GVANDEO MANI TRIPATH नानरेव 2022 6.07 UNCIPAL

IALTER TA COLLEGE OF EDUCATION VANAGEMENT HAJIPUR, BIHAR



















Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

1.1.1		ent Test / Blue P	rint		
1. संप्रापित म	RITY (ACHIEVEMENT TEST) *	लिय ब्लूप्रिंट निर्माण	ग की कार्यशाला		
2. विषय -		কুন দা	wa≈ 50		
3. कक्षा +		समयाव	धि =२ पंटा		
4, বরাহ সহ	अध्याय का लाम :-				1000
आव्याय संग्रमा	विषय का शोषंक	Visi Iga	प्रश्नी की संग्रमा	आररांक	1
1	पथीगरण एवं मामव संबंध	1 1 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2	10	20%	
2	परिस्थितिकी एवं जैव विविधता	on the supplying	8	16%	
3	पर्यावरण प्रदूषण एवं संरक्षण	The Taxa Taxa	18	36%	
4	यीन हाउस ओळोन गैस एवं अस्त र	INT.	7	al mesto	
5				14%	10.000
	मानव बोबच आदिज एव विदासिन		7	14%	
	and the second se	হাঁয	50	100%	
5. प्रधनों की	1700 EC	1			
6. कुल आराव					
7, WORE 00 3	म्लार:- A) बहुविकज्पीय प्रश्न (Multiple				11.00
	B) सत्य / असल्य प्रथम (T	rue/ False Questi	an)		
	C) रिक्त रुषात पूर्ति (Fal				100.071
	D) मिलान प्रस्न (Matching	A CALL STREET, SALES			and the second second
					10 C
	E) मधु उत्तरीय प्राप्त (Sho				
8 प्रश्नों के स	E) लघु उत्तरीय प्राज (Shi R :- 1)- तान स्तर				
8 प्रध्ने के स्	E) लघु उत्तरीय प्राज (Shu स 5 1)- ताल स्तर 2)- बॉथ स्तर				
8 प्रध्ने के स	E) लघु उत्तरीय प्राज (Sho हर :- 1)- तान स्तर 2)- बौध स्तर 3)- प्रयोग स्तर				
8 प्रधनों के इन	E) लघु उस्तरीय प्राप्त (Sho R :- 1)- तान स्तर 2)- बीध स्तर 3)- प्रचीग स्तर 4)- गुजनात्मकता स्तर	oft answer type)			
8 प्रामे के स	E) लघु उत्तरीय प्रथन (She स :- 1)- तान स्तर 2)- बॉथ स्तर 3)- प्रयोग स्तर 4)- पुजनात्मकता स्तर A -विश्लेषण स्तर	off answer type)			1
8 प्रधनी के स	E) लघु उत्तरीय प्राप्त (Sho R :- 1)- तान स्तर 2)- बीध स्तर 3)- प्रयोग स्तर 4)- गुजनात्मकता स्तर A -विश्लेषण स्तर B -वंश्लेषण स्तर	off answer type)			
8 प्रामे के स	E) लघु उत्तरीय प्रथन (She स :- 1)- तान स्तर 2)- बॉथ स्तर 3)- प्रयोग स्तर 4)- पुजनात्मकता स्तर A -विश्लेषण स्तर	off answer type)			
9. unit & c	E) लघु उत्तरीय प्रथन (Shu स :- 1)- ताल स्तर 2)- बंध स्तर 3)- प्रयोग स्तर 4)- प्रुजनाश्मकता स्तर A -विश्लेषण स्तर B -संवतेषण स्तर C -मूल्यांकन स्तर कार. संख्या एवं आरांक >	oft answer type)			
	 E) लघु उत्तरीय प्रथन (She R > 1)- तान स्तर 2)- बंध स्तर 3)- प्रयोग स्तर 4)- पुजना/मंकता स्तर 4)- पुजना/मंकता स्तर A -विश्लेषण स्तर B -तंवलेषण स्तर C -पुल्यांकन स्तर कार. संख्या एवं आरांक > ग प्रकर्म के प्रकार 	oft answer type)	and the second second		
9. फानों के प्र काम संदर्भ 1	E) लघु उत्सरीय प्रथन (She स > 1)- तान स्तर 2)- बॉथा स्तर 3)- प्रयोग स्तर 4)- सुजनात्मकता स्तर A -विश्लेषण स्तर B -वंश्लेषण स्तर B -वंश्लेषण स्तर C -मूल्यांकन स्तर ता. संघ्या एवं आसंग > ग प्रकर्न के प्रवार बहुद्दिकभ्षीय प्रवट	off answer type)	5		
9. प्रान्ते के प्र ज्ञान संदर 1 2	E) नघु उत्सरीय प्रथन (She स > 1)- तान स्तर 2)- बॉथा स्तर 3)- प्रयोग स्तर 4)- गुजनात्मकता स्तर A -विश्लेषण स्तर B -वंश्लेषण स्तर C -मुल्यांकन स्तर तार. संठ्या एवं आतंभ > ग पण्डनी के प्रवार बहुविक-मीय प्रडल चान्म / अस्तिप प्रस्त	oft answer type) t	5	र्दोक	
9. प्राजी के प् ज्ञान संघ 1 2 3	E) लघु उत्सरीय प्रथन (She स > 1)- तान स्तर 2)- बॉथ दत्तर 3)- प्रयोग स्तर 4)- गुजनात्मकता स्तर A -विश्लेषण स्तर B -संवतेषण स्तर B -संवतेषण स्तर C -मूल्यांकन स्तर C -मूल्यांकन स्तर तार. संख्या एवं आरांग > ग प्रधन्ते के प्रवार बहुविकअमीय प्रथन सन्म / आरूम प्रस्त	off answer type) r r r r r r r r r r r		11141 074	
9. पानों के प्र ज्ञान संघ्य 1 2 3 4	E) नघु उत्तरीय प्रथन (Shu स > 1)- तान स्तर 2)- बंध स्तर 3)- प्रयोग स्तर 4)- पुजना/मंग्रता स्तर A -विश्लेषण स्तर B -वंवलेषण स्तर B -वंवलेषण स्तर C -पूल्यांक्त स्तर C -पूल्यांक्त स्तर बार्स संख्या एवं आरांग > ग प्रप्रती के प्रवर बार्स / अस्तर्थ प्रस्त पिका स्टब्स पूर्वि विनाल प्राज	oft answer type) T Raur 15 15 10 5	3	1214n 094 01%	
9. प्राजी के प् ज्ञान संघ 1 2 3	E) नायु उत्सरीय प्रथन (She स > 1)- तान स्तर 2)- बॉथ दत्तर 3)- प्रयोग स्तर 4)- गुजनात्मकता स्तर A -विश्लेषण स्तर B -संवतेषण स्तर B -संवतेषण स्तर C -मूल्यांकन स्तर C -मूल्यांकन स्तर मा प्रवर्त के प्रवर बहुविकअमीय प्रवर बहुविकअमीय प्रवर बहुविकअमीय प्रवर वान्य / अस्तर प्रवर पिकर स्थाम पूर्वि	off answer type) T T T T T T T T O	3	12135 0794 094	





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

10. प्रश्नों के स्तर, संख्या एवं भारांक ;-

कम संख्या	प्रश्नों के स्तर	the state of the s	the second second
1		संखया	HICIA
	नाज स्तर	11	Contraction of the local division of the loc
2	बोध स्तर		22%
3	प्रयोग स्तर	13	26%
4	and the second se	14	
	सृजनात्मकता स्तर	12	28%
51	कुल योग =		24%
	2 4 6	50	100%

11. अध्याय शीर्षक के अनुसार,प्रश्नी के प्रकार,(संग्रया एवं आरांक)

क्रम सख्या	अध्याय का शीर्षक	man a	the survey			
		बहुविकल्पी प्रश्न	सत्य/असत्य प्रान	रिक्त स्थान पूर्ति	मितान प्रथन	लघु उल्लरीय
1	पर्यावरण एवं मामव	1 (2%)	7 14400	-	The second	12%ল
-	सम्बंध	. in ref	7 (14%)	1 (2%)	1	1 (2%)
2	पारिस्थिकी एवं	2 (4%)	4 (00/1	-	1	1
	जैवविनिधता	- ()	4 (8%)	-	-	2 (4%)
3	पर्यावरण प्रदूषण एवं	6 (12%)	2 (4%)		linne	-
	सरकाण	- (ne my	x (4.2)	5 (10%)	4 (8%)	1 (2%)
•	বীল	2 (4%)	* (2004		Concerne of	0.850
	हाउस,ओज्रोनगैस,एवं अम्लवर्था	- (- 10)	1 (2%)	4 (8%)	-	-
	मानव धोषण ,प्रोदीन	4 (8%)		13		
	एवं विटामिन	4 (03)	1 (2%)	_	1 (2%)	1 (2%)
0/100%		15 /2004	121-221			
		15 (30%)	15(30%)	10(20%)	5(10%)	5(10%)

12. प्रश्नों के उत्तर/प्रश्नों के प्रकार के अनुसार (संख्या एवं आरांक)

		तर

हम संख्या	चरनी के प्रकार	अज सत	I CALIFORNIA		
1	बहुविकल्पी प्रश्न	and the second division of the second divisio	बोध संसर	प्रयोग स्तव	- सूच्यात्मका स्थर
2	the second	3 (6%)	2 (4%)	6 (12%)	of the state of th
	सत्य /असत्य प्रश्न	2 (4%)	4 (8%)		4 (8%)
3	रिक्त स्थाज पुनि	4 (8%)	Name of Concession, Name of Street, or other	2 (4%)	7 (14%)
4	मिलाल प्राप्त		4 (11%)	2 (4%)	The second
5	लपु उलारीय प्रभव	1 (2%)	2 (4%)	2 (4%)	
	Contraction of the local division of the loc	1 (2%)	1.(2%)	2 (4%)	THE OWNER OF
	वाल धोरा =	11 (22%)	13 (26%)	and the owner of the local division in which the local division in which the local division in which the local division is not the local division in the l	1 (2%)
	Letter - Let	and a state of the	10 (20%)	14 (28%)	12 (24%)



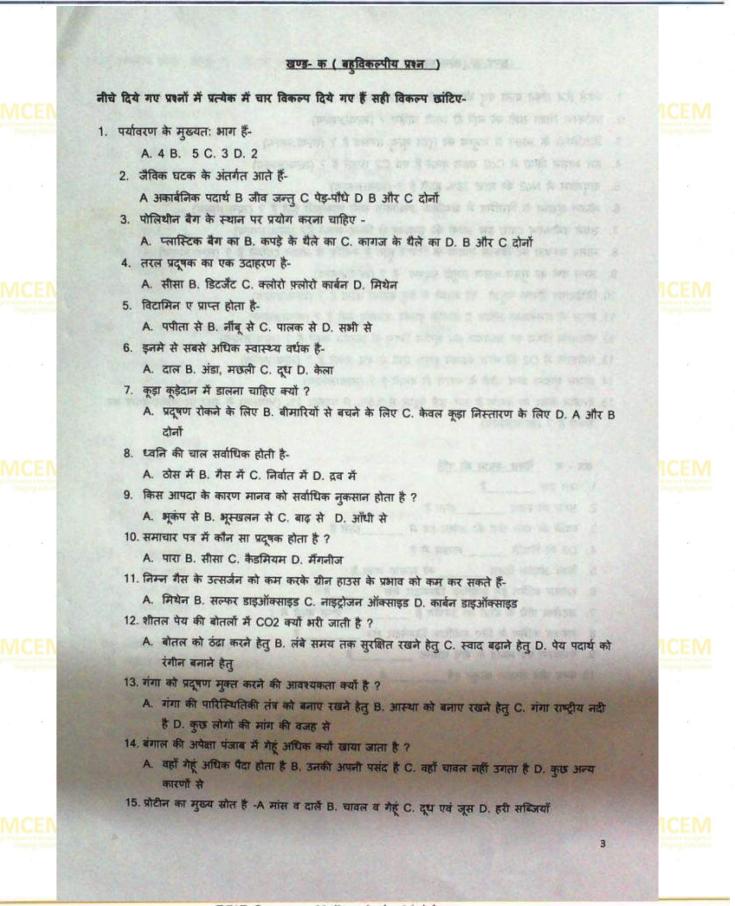




Shaping Education

Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna





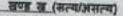


Shaping Education

Maitreya College of Education & Management

STITE S H 1992

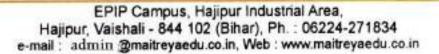
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



- 1. सबसे तेज दौड़ने वाला पशु चीता है ? (सत्य/असत्य)
- 2. पर्यावरण शिक्षा सभी को नहीं दी जानी चाहिए ? (सत्य/असत्य)
- 3. विटामिन्स के अभाव में मनुष्य की तुरंत मृत्यु सम्भव हे ? (सत्या/असत्य)
- 4. हम श्वसन किया में Co2 ग्रहण करते हैं एवं C2 छोड़ते हैं ? (सत्या)असत्य)
- 5. वायुमंडल में No2 की मात्रा 78% होती है ? (सत्य/असत्य)
- भोजन ब्रांखला के पिरामिड में प्राथमिक उपभोक्ता सभी शाकाहारी होते हैं ? (सल्य/असत्य)
- 7. सघन वनीकरण द्वारा हम अवर्षा की समस्या से निपट सकते हैं? (सत्या/असत्य)
- मानव सम्यता का विकास नदियों के कितारे हुआ है क्योंकि ये जीवन दायिनी हैं ? (सत्य/असत्य)
- अम्ल वर्षा का मुख्य कारण समुद्री प्रदूषण है ? (सत्य/असत्य)
- 10. चिंडियाघर हिंसक पशुओं को बांधने के हेतु बनाया जाता है ? (सत्य/असत्य)
- 11. भारत में जनसंख्या अधिक है क्योंकि इसकी जलवायु गर्म है ? (सत्य/असत्य)
- 12. पर्यावरण विषय का अध्ययन हम भूगोल विषय के अंतर्गत करते हैं ? (सत्य/असंदय)
- 13. पर्यावरण में O2 की मात्रा बढ़ाकर श्वास रोगों से बच सकते हें ? (सत्या/असत्य)
- 14. ओजन शृंखला वन्य जीवों के कारण ही बनती है ? (सत्य/असत्य)
- 15. बेन्जीन कैंसर का कारण है अत: इसे पेंट्रोल में 3.5% से घटाकर 1% (आयतन) के स्तर पर लाकर बचाव कर सकते हैं ? (सल्य/असल्य)

खंड - ग रिस्त -स्थान की पूर्ति

- 1. जल एक 🏻 🕅
- 2. अमल का स्वाद _____होता है
- ध्वनि की चाल ठोस की अपेका दव में होत
- 4. 03 की स्थिति ______मण्डल में है
- विश्व ओजॉन दिवस _____को मनाया जाता है
- ग्लोबल वार्मिंग हेतु सर्वाधिक जिम्मेदार गैस
- 7. जटरोका पौधे के बीजों का उपयोग है _____ प्राप्त करने मे
- 8. रामोबल वॉमिंग के लिए सर्वाधिक जिम्मेदार क्षेत्र 📩 😤
- 9. पर्यावरण एवं मानव के बीच धनिष्ट_____
- 10. वल्य औठ संरक्षण कानून वर्ष_____



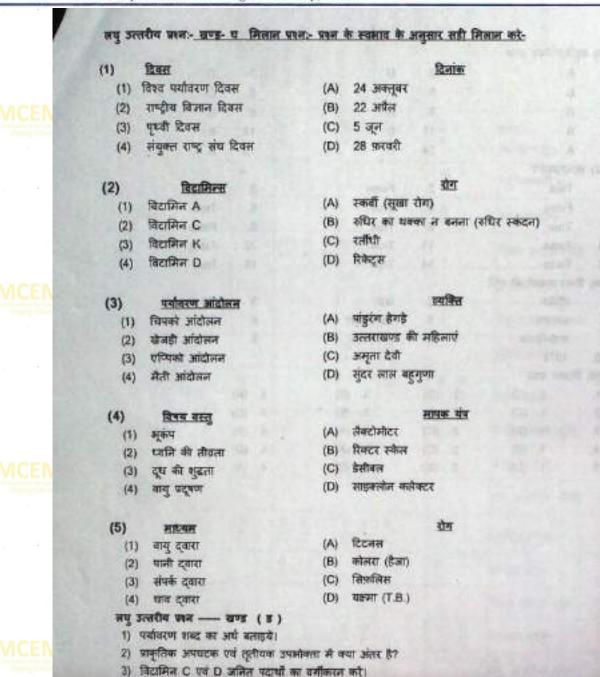
ICEIVI





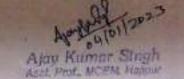
Shaping Education

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



पर्यावरण सुरक्षा के लिए दी उपाय बताइये।

5) जल चक्र किया को चित्र रूप में दर्शायें।



4)









Shaping Education

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

A
Constant Manager



			उत्तरमाना	STREET, B. W. B. MAR.	
खंड (क) व	बह्विकल्पिय प्रश्न				
1.	A	2.	D	3. D	ICEIV
4.	В	5.	A	6. C	Shaping Education
7.	D	8.	A	9. C	
10.	B	11,	D	12. B	
13.	A	14.	D	15. A	
खंड (ख)	सत्य/असत्य				
1.	True	2.	False	3. False	1.1
4.	False	5.	True	6. True	
7.	True	8.	True	9. False	ICEN
10.	False	11.	True	12. False	Shaping Laborati
13.	False	14.	True	15. True	
खंड (ग)	रिक्त स्थानों की पूर्ति				
1.	यौंगिक	2.	वज्ञ	 雨井 	
4.	समताप	5.	16 सितंबर	6. CO2	
7,	ৰায়া-রিজন	8.	मोटरवाहन	9. संबंध	
10.	1972				
खंड (य)	সিলান দাংল				
1.	1. (C)	2. (D)	3. (B)	4. (A)	1CEIV
2.	1. (C)	2. (A)	3. (B)	4. (D)	Shaping Education
3.	1. (D)	2. (C)	3. (A)	4. (B)	
4.	1. (B)	2. (C)	3. (A)	4. (D)	
5.	1. (D)	2. (B)	3. (C)	4. (A)	







Shaping Education

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

	H		man nham nh/la	शैस एवं अम्ल वर्षा	ग्रीन हाउस ओज़ोन			पर्यावरण प्रदूषण एवं	विविधता	पारिस्थितिकी एवं जैव	पर्यावरण एवं मानव संबंध	पाठ्य वस्तु	भरना का स्वरूप+		उद्देश्य							
	100 %	14 %	41.14	14 %			36 %		16%	-	20%	भारांक Weightage		100 %								
	ω	하.5			No.		하-8				카.1	बहूविकल्पी य		22 %								
	2								평-1		ख-5	सत्य/असत्य				Kno						
	4			ज-5	ग-4	ज-2	10	ㅋ				रिक्त स्थान पूर्ति			जान स्तर wiedge L							
	1									23		मिलान प्रश्न			त्त् Level							
	1										5 . 1	लघु उत्तरीय प्रश्न										
	2						카-4		क-2			बहूविकल्पी य		Comprehension Level								
	4	ख-3							ख-6		ख-11 ख-12	सत्य/असत्य										
	4			9-le			a1-8	ग-1			ज-9	रिक्त स्थान पूर्ति	er 0.9	25 er	बोध स्तर							
	2	घ-2					घ-5					मिलान प्रश्न			~							
	1				-				3-2			लघु उत्तरीय प्रश्न										
	6	क-15		क-12	- - - 11	5	ক-13	क-3	क-14			बहूविकल्पी य										
	2			-B					10		超-4	सत्य/असत्य	-		4							
	2						카-7	al-3				रिक्त स्थान पूर्ति	78 %	Application Level	प्रयोग स्तर							
	2						घ-4	ध-3			and and	मिलान प्रश्न		Level	7							
	N	3-3		12	1911	- TO		1	5-5			लघु उत्तरीय प्रश्न	10									
	4	क-7 क-7	9 ⁴ 6		-	2	क-10	4 -9				बह्विकल्पी य		-								
	7					1	ख-15	B-7	ख-14	ख-10	ख-2 ख-8 ख-13	सत्य/असत्य		Creati	स्वना							
	-					-		No.				रिक्त स्थान पूर्ति	24%	Creativity Level	र्श्वनात्मक स्तर							
walf 22	1	-	-					-				मिलान प्रश्न		e	*							
umar Singh	50	1		1	-		ST LE		00		10	लघु उत्तरीय प्रश्न	50	T	-							

Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

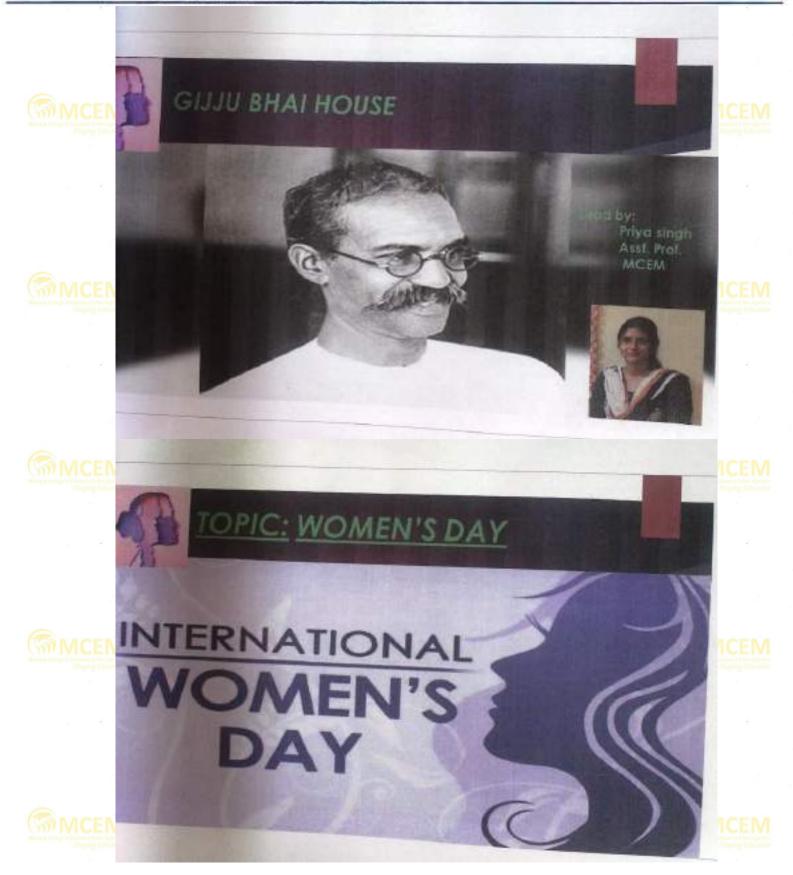
3. Hands-on activity







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







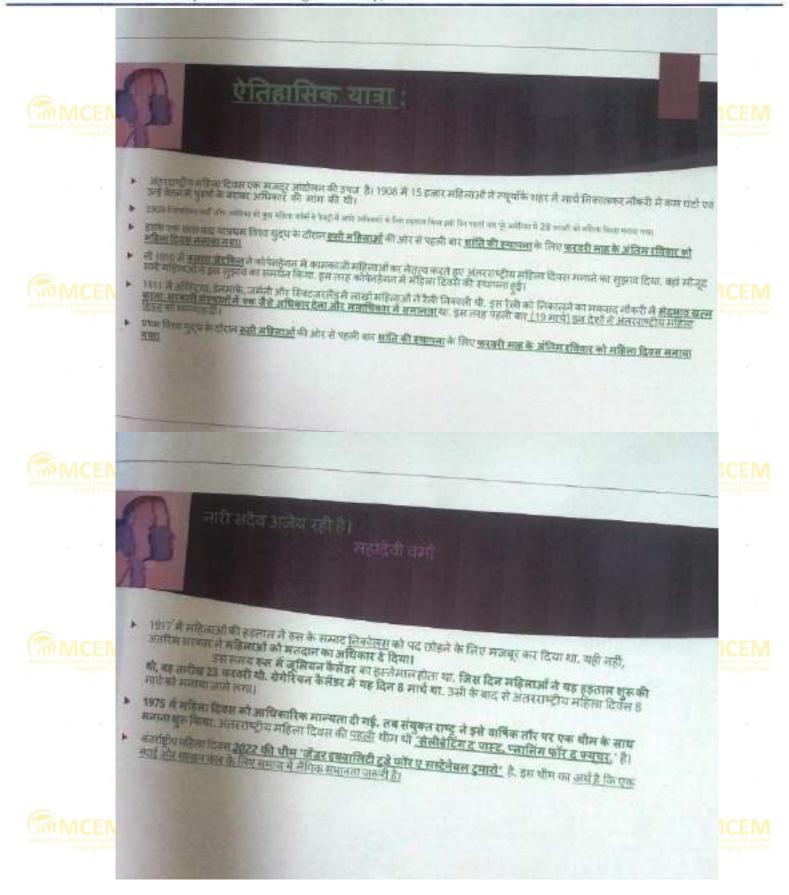
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







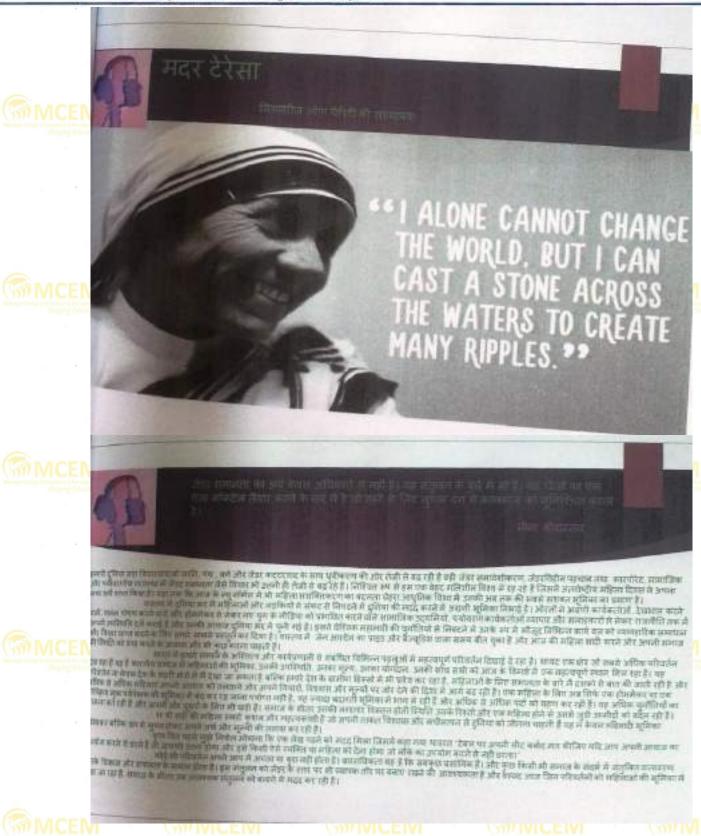
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







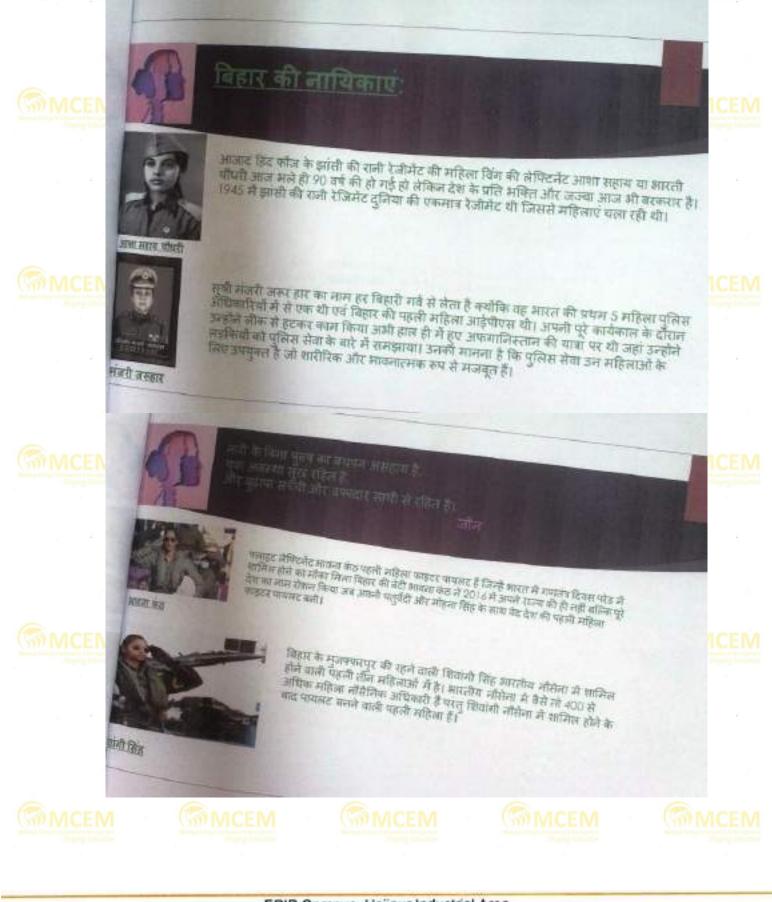
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna









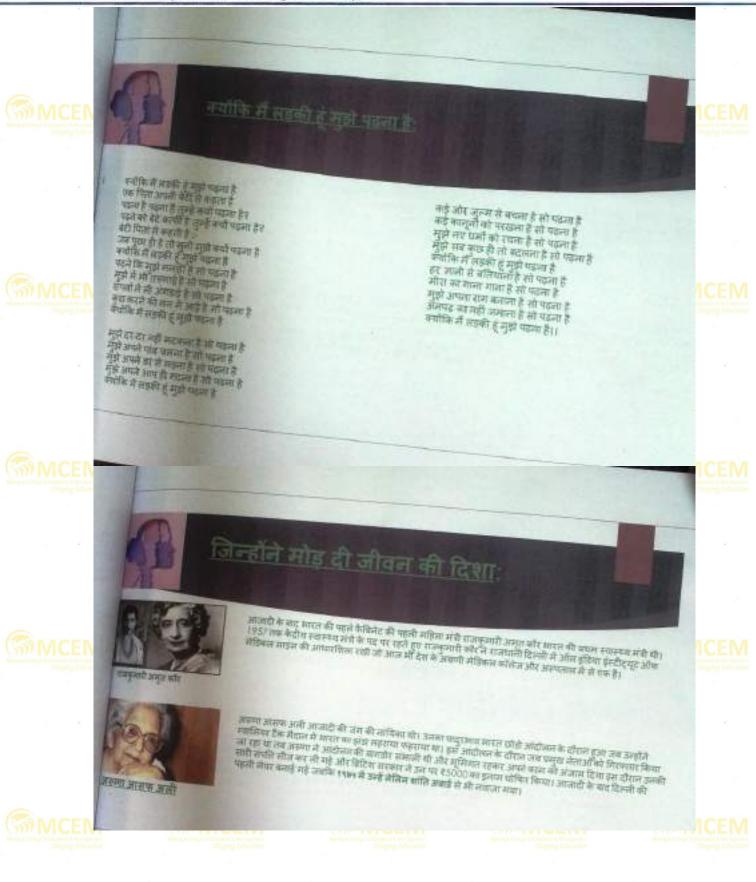








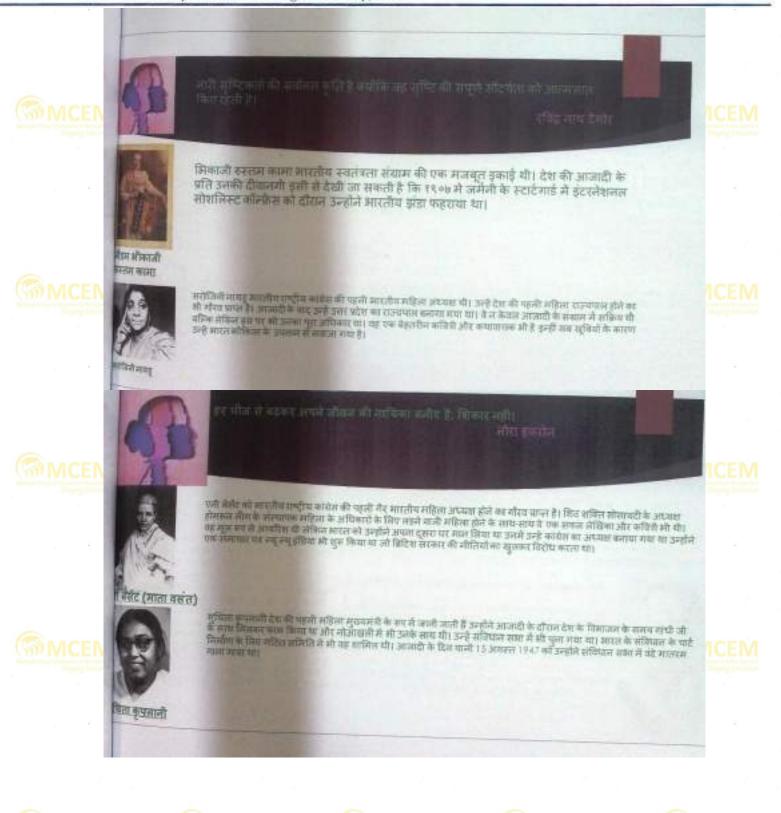
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







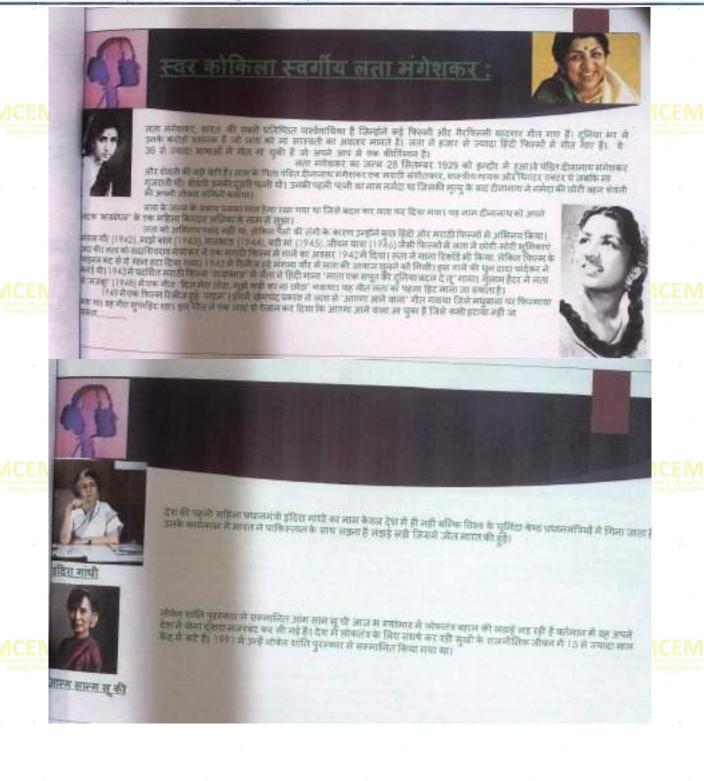
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

















Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







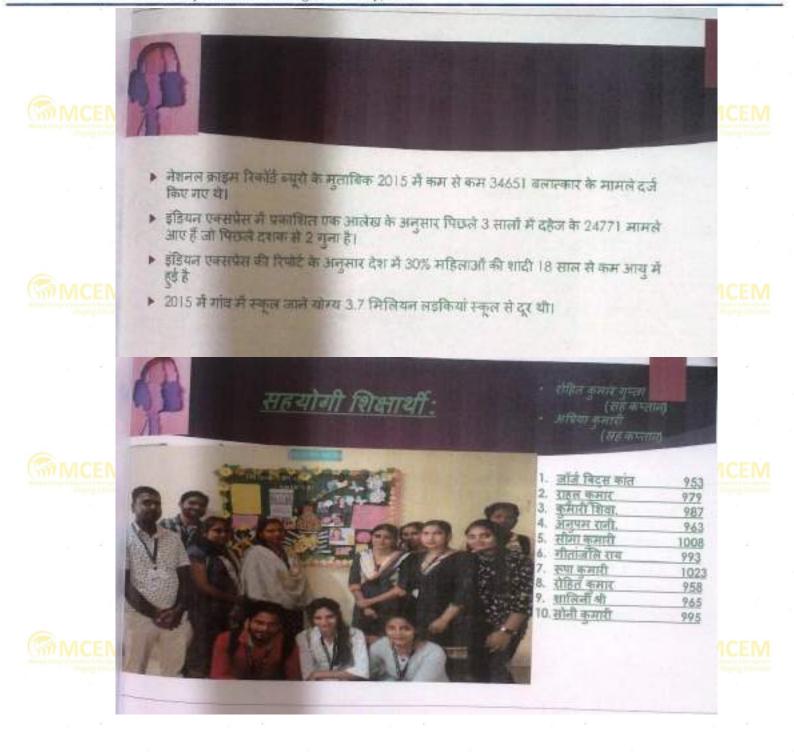
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna













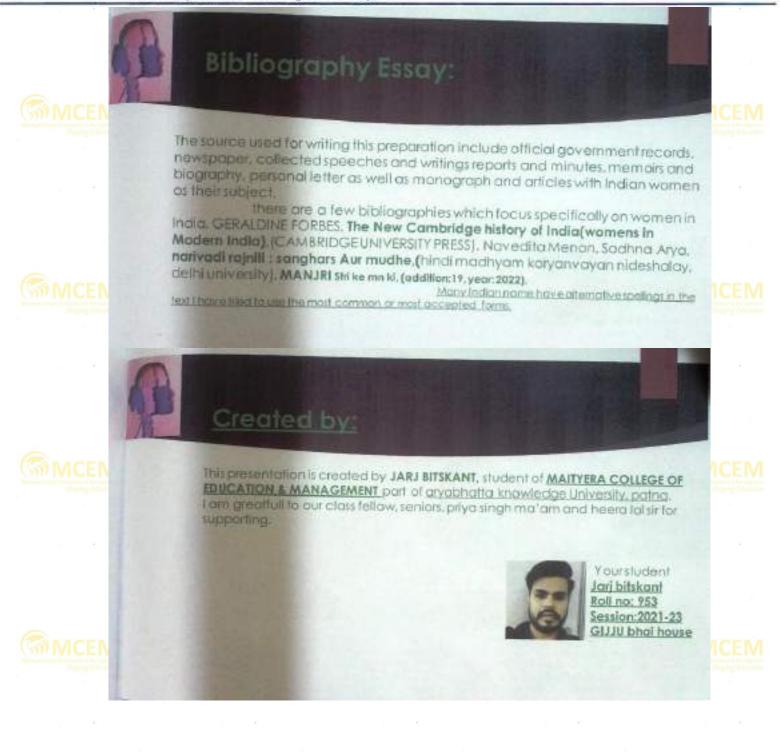




Shaping Education

Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna





MCEM









Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna





. .

Alles.



Manga Congi intakanan Uto aprino Shaping Education





Shaping Education



















Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

Hands on activity (chart painting)











Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna







e-mail- admin@maitreyaedu.co.in

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

Preparation of term paper

मैत्रेय कॉलेजऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट

EPIP CAMPUS, INDUSTRIAL AREA, HAJIPUR- 844102(VAISHALI)

Ph.No.-06224271834



दिनांक : 23-05-2018

(डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी) प्राचाय

परीक्षा संबंधी सूचना

बी.एड. सत्र 2017-19 (प्रथम वर्ष) एवं सत्र 2016-18 (द्वितीय वर्ष) की आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा 14 जून, 2018 से 26 जून, 2018 तक निम्न वर्णित कार्यक्रम के अन्सार संचालित की जाएगी। प्रतिदिन परीक्षा प्रथम पाली में सुबह 8:30 से 11:30 बजे (तीन घंटा) तक होगी। परीक्षोपरांत भोजनावकाश होगा फिर अगले 2 घंटे परीक्षा के प्रश्न-पत्र के मॉडल उत्तरों पर चर्चा की जाएगी। अगले दिन की परीक्षा पर समूह चर्चा भी अपेक्षित है। सभी शिक्षार्थियों की उपस्थिति अनिवार्य है।



आंतरिक परीक्षा का कार्यक्रम

दिनांक	<u>प्रथम वर्ष</u> (बी.एड. सत्र 2017-19)	<u>द्वितीय वर्ष</u> (बी.एड. सत्र 2016-18)
14.06.2018	CC-1	CC-8
15.06.2018	EPC-1	EPC-4
18.06.2018	CC-2	CC-9
19.06.2018	EPC-2	OC-11
20.06.2018	CC-3	CC-10
21.06.2018	CC-5	CC-7b
22.06.2018	CC-6	इंटेर्नशिप प्रोग्राम में।
23.06.2018	EPC-3	
25.06.2018	CC-4	and the second second second
26.06.2018	CC-7a	

MITTO





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



परीक्षा संबंधी सूचना

बी.एड. सत्र 2017-19 (द्वितीय वर्ष) की आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा 2, 3 व 4 फर्ट्वरी, 2019 को निम्न वर्णित कार्यक्रम के अनुसार संचालित की जाएगी। प्रतिदिन परीक्षा प्रथम पाली में (10:00 से 13:00 बजे तक) एवं द्वितीय पाली (14:00 से 15:30 बजे तक) होगी। सभी शिक्षार्थियों की उपस्थिति अनिवार्य है।

आंतरिक परीक्षा का कार्यक्रम

दिनांक	प्रयम पाली (10:00 से 13:00)	द्वितीय पालि (14:00 से 15:30)
02.02.2019	CC-8	EPC-4
03.02.2019	CC-9	OC-11
04.02.2019	CC-10	CC-7B



(डॉ. ज्ञानदेव



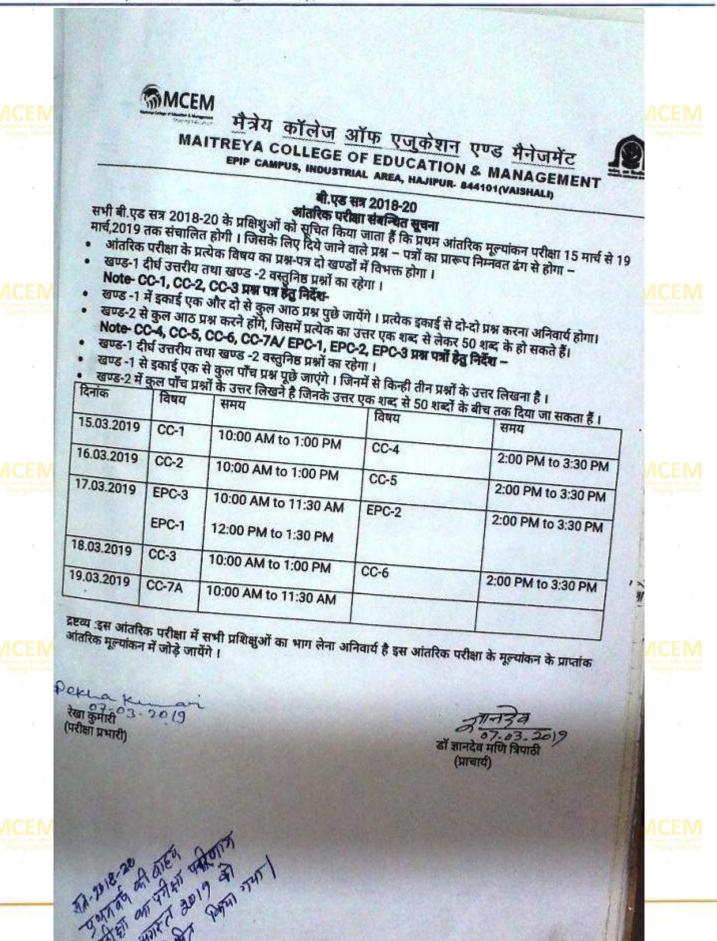
Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in





Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



all : admin gmaitreyaedu.co.in, web : www.maitreyaedu.co.in





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

MCEM



मैत्रेय कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट

EPIP CAMPUS, INDUSTRIAL AREA, HAJIPUR- 844101(VAISHALI)

दिनांक -02.05.2019

बी.एड.सत्र 2018-20 आंतरिक परीक्षा संबंधित सूचना

बी.एड. सत्र 2018-20 प्रथम वर्ष का द्वितीय आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा 10 मई से 16 मई , 2019 के मध्य निम्न वर्णित कार्यक्रम के अनुसार संचालित की जाएगी । इस परीक्षा के प्रश्नपत्र का प्रारूप आर्पभट्र ज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के प्रश्नपत्र के अनुसार होंगे ।



आंतरिक परीक्षा का कार्यक्रम

दिनांक	पेपर कोड	प्रश्नपत्र	समय
10.05.2019	501301	CC-1 Childhood and Growing up	10:30 AM to 01:30 PM
11.05.2019	501302	CC-2 Contemporary India and Education	10:30 AM to 01:30 PM
14.05.2019	501303	CC-3 Learning and Teaching	10:30 AM to 01:30 PM
15.05.2019	501304	CC-4 Language across the curriculum	10:30 AM to 12:00 PM
	501305	CC-5 Understanding Discipline and Subject	02:00 PM to 03:30 PM
16.05.2019	501306	CC-6 Gender School and Society	10:30 AM to 12:00 PM
	501307-317	CC-7A All Pedagogy	02:00 PM to 03:30PM

दृष्टव्य- इस आंतरिक परीक्षा में सभी प्रशिक्षुओं का भाग लेना अनिवार्य है । इस आंतरिक परीक्षा के मूल्कन के प्राप्तांक आंतरिक मूल्यांकन में जोड़े जाएंगे ।

Apertanty 2.05.2019 25.19 (3000 grut (tip) utlan yunt Hirsolol Rof. S.P. miem) 02/05/09



03/572012 Swort was trige sinh Swort was 03/05/19

(डॉ. ज्ञानदेव मणिनपाठी) प्राचार्य





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

MCEM



मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट MAITREYA COLLEGE OF EDUCATION & MANAGEMENT

EPIP CAMPUS, INDUSTRIAL AREA, HAJIPUR- 844101(VAISHALI)

दिनांक - 17.10.2019

बी.एड.सत्र 2018-20 एवं 2019-21 आंतरिक परीक्षा संबंधित सूचना

सभी शिक्षार्थियों को सूचित किया जाता है कि बी.एड.सत्र 2019-21 के प्रथम वर्ष की प्रथम आत परीक्षा 28 नवंबर से 03 दिसंबर, 2019 तक तथा बी.एड.सत्र 2018-20 के द्वितीय वर्ष की प्रथम आंतरिक परीक्ष फरवरी से 12 फरवरी, 2020 के मध्य निम्न वर्णित कार्यक्रम के अनुसार संचालित की जाएगी।

बी.एड.सत्र 2019-21 के प्रथम वर्ष की आंतरिक परीक्षा का कार्यक्रम

IQ III	442 915	There	
28.11.2019	501301	प्रश्नपत्र CC-1 Childhood and Growing up	समय
29.11.2019	501302	CC-2 Contemporary L	10:30 AM to 01:30 PM
30.11.2019	501303	CC-2 Contemporary India and Education CC-3 Learning and Teaching	10:30 AM to 01:30 PM
02.12.2019	501304	CC-4 Language across the curriculum	10.30 AM to 01.30 FM
02.12.2019	501305	CC-5 Understanding Di	10;30 AM to 12:00 PM
02 10 00 10	501306	CC-5 Understanding Discipline and Subject CC-6 Gender School and Society	02:00 PM to 03:30 PM
03.12.2019	501307A	CC-7A All Pedagogy	10:30 AM to 12:00 PM
			02:00 PM to 03:30 PM

दिनांक पेपर कोर		सत्र 2018-20 के द्वितीय वर्ष की आंतरिक परीक्षा का कार्यक्रम प्रश्नपत्र	
08.02.2020	001000	Ужия	
10.02.2020	501309	CC-8 knowledge & Curriculum CC-9 Assessment for Learning	समय 10:30 AM to 01:30
11.02.2020	501310	CC-10 Creating & Inclusive School	10:30 AM to 01:30 P
	501312P	EPC-4 understanding the Self	10:30 AM to 12:00 P
12.02.2020	and the second second	Optional Course	02:00 PM to 03:30 PM
	501307B	PC-7B All Pedagogy	10:30 AM to 12:00 PM
	and the set of the	10-01	10.00.01

रष्टव्य- इस आंतरिक परीक्षा में सभी प्रशिक्षओं का भाग लेना अनिवार्य है । इस आंतरिक परीक्षा के मूल्यांव प्राप्तांक आंतरिक मन्त्रांकन में लोगे जगते ।

अजय कुमार सिंह) परीक्षा प्रभारी

Alay Kuma

R12 17-10-19 Rakha Kumari रेखा कुमारी अँदारिक परीसा पत्रारी सह सङ्ग्रक पाल्यापिका

(डॉ. ज्ञानदेव मणि पाचार्य







e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

MCEN

भारत जोतांचा आज संचाल प्रणय सन्दर्भन

DRIP CORPUS CORDERARS AND MALINUM STATISTICS

TERT # - 19.07.2021

वी.एड.सत्र 2019-2021 एवं 2020-22 आंतरिक परीक्षा मंबंधित मुलना

सभी शिक्षार्थियों को सुचित किया जाता है कि वी.एड.सब 2020-22 के प्रथम वर्ष की आंतरिक गण 31 जुलाई से 10 अगस्त, 2021 तक तथा वी.एड.सब 2019-21 के द्वितीय वर्ष की आंतरिक परीक्षा 30 जुलाई वे 8 अप 2021 के मध्य निम्न वर्णित कार्यक्रम के अनुसार संचालित की जाएगी।

बी.एड.सत्र 2019-21 के द्वितीय वर्ष की आंतरिक परीक्षा का कार्यक्रम

दिनांक	पेपर कोड	TESTITET	
30.07.2021	501303	प्रश्नपत्र	समय
02.08.2021	501309	CC-8 Knowledge & Curriculum	10:30 AM to 01:30 PM
		CC-9 Assessment for Learning	10:30 AM to 01:30 PM
04.08.2021	501310	CC-10 Creating an Inclusive School	10:30 AM to 12:00 PM
	501312P	EPC-4 Understanding the Self	
06.08.2021 501311 Optional Course	02:00 PM to 03:30 PM		
	501307B	PC-7B All Pedagogy	10:30 AM to 12:00 PM
		Li C-10 Ful Fedagogy	02:00 PM to 03:30 PM

वी.एड.सत्र 2020-22 के प्रथम वर्ष की आंतरिक परीक्षा का कार्यक्रम

दिनांक	पेपर कोड		
31.07.2021	501301	प्रश्नपत्र	समय
03.08.2021	501302	CC-1 Childhood and Growing Up	10:30 AM to 01:30 PM
05.08.2021	501302	CC-2 Contemporary India and Education	10:30 AM to 01:30 PM
Charles -		CC-J Learning and Leaching	10:30 AM to 01:30 PM
07.00.00	501304	EPC-1 Reading and Reflecting on Texts	02.30 PM to 04.00 PM
07.08.2021	501305	CC-4 Language Across the Curriculum	10:30 AM to 12:00 PM
	501306	CC-5 Understanding Discipline and Subject CC-6 Gender School and Society	02:00 PM to 03:30 PM
09.08.2021	501307A	CC-7A All Pedagogy	10:30 AM to 12:00 PM
10.08.2021	1500000	EPC-2 Drama and ART in Education	02:00 PM to 03:30 PM
-	Mar and	EPC-3 Critical Understanding of ICT	10:30 AM to 12.00 P
	and the second second	enter enterstanding of ICT	02 00 PALIO 03, 30 PM

दृष्टव्य - इस आंतरिक परीक्षा में सभी प्रशिक्षुओं का भाग लेना अनियार्थ है । इस आंतरिक परीक्षा ने मूल्यांकन के प्राप्तांक आंतरिक मूल्यांकन में जोड़े जाएंगे ।

-07-21 खा कुमारी,

आंतरिक परीक्षा प्रभारी



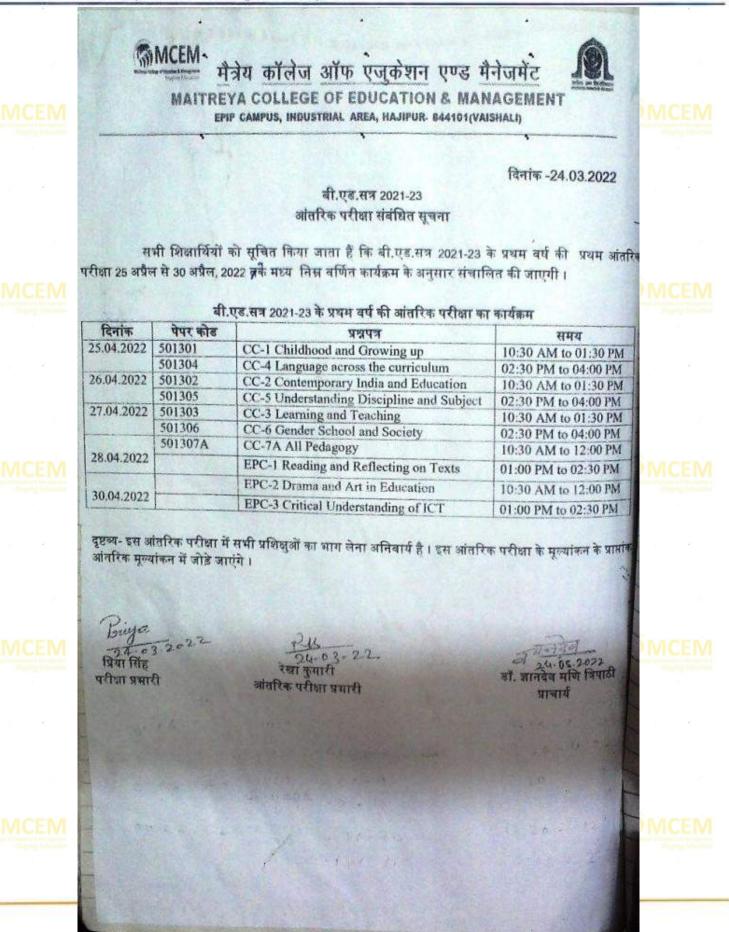
सोनु कुमार, सहायक आंतरिक परीक्षा प्रभारी

ओ. ज्ञानदेव मणि वि प्राचार्य





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in





Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

Session 2021-23 द्वितीय वर्ष

Assignment Questions

OC- 1.5 Understanding School Management and Leadership / विद्यालय प्रबंधन एवम नेतृत्व की समझ

 विद्यालय संगठन से आप क्या समझते है? इसके प्रमुख घटकों का उल्लेख करते हुए, विद्यालय संगठन से समुदाय का संबंध स्थापित करें।

What do you mean by School Organization? Write the components of School Organization and describe the relation of School Organization with community.

 विद्यालय प्रबंधन तंत्र का अर्थ स्पष्ट करते हुए विद्यालय प्रबंधन के आधारभूत सिद्धांतों का उल्लेख करें। Explain the meaning of School Management System. Write the basic principles of School management system.

उपरोका ही पत्री के उसर जमा करने की गिथि 22 दिसंघर 2022.

 लोकतांत्रिक एवं विकेंद्रीत नेतृत्व का अर्थ स्पष्ट करते हुए, प्रधानाध्यापक के नेतृत्व क्षमता के गुणों एवं भूमिका का वर्षन। Explain the democratic and distributive leadership in school. Explain the leadership quality's role of principal.

4. अभिलेखों से क्या तात्पर्य है? विद्यालय कार्यप्रणाली के प्रबंधन में अभिलेखों की भूमिका का उल्लेख करें। What do you mean by records? Describe the role of records in school working system.

 विद्यालय के संसाधनों का वर्णन करते हुए इन संसाधनों के अधिकतम उपयोग का उल्लेख करें। Describe the school resources and their maximum utilization.



EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

हिन्दी शिक्षण सन 2016-18 Assignment Questions.

- 1. सातृभाषा के रूप में हिन्दी भाषा की प्रकृति एवं संरचना पर प्रकाश डालें।
- 2. मध्यमिक स्तर पर हिन्दी आषा शिक्षण हेतु प्रयुक्त रणनीतियों का वर्णन करें।
- 3. हिन्दी शिक्षक के व्यकित्व एवं गुणों का वर्णन करें।
- हिन्दी आषा शिक्षण की प्रमुख विधियों का नाम लिखते हुए किसी एक विधि का सोटाहरण विवेचन करें।

PC-7A अर्थशास्त्र एवं भूगोल शिक्षण

Unit-1

 Explain in your own words about the meaning, nature and scope of Economics / Geography Teaching.

अर्थशास्त्र / भूगोल शिक्षण का अर्थ,प्रकृति एवं क्षेत्र की व्याख्या अपने शब्दों में करें।

 How History ,civics ,Geography and economics an important subject of Social science are correlated with each other ? Describe.
 सामाजिक विज्ञान के मुख्य विषय के रूप में इतिहास,नागरिकशास्त्र भूगोल एवं अर्थशास्त्र

आपस में किस प्रकार सहसम्वाधित हैं वर्णन करें।

Unit -2

- **MCE**
- 3. Explain in your own words about project Method ,Problem solving, Lecturec-cum-Demonstration method.

पोजेक्ट विधि, समस्या समाधाल, व्याख्यान सह प्रदर्शन विधि की व्याख्या अपने शब्दों में करें।

4. What do you understand by lesson planning ? Describe its important merits







Maitreya College of Education & Management

Shaping Education

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

And types.

पाठयोजना से आप क्या समझते हैं? इसके प्रमुख गुणाँ एवं भागों का वर्णन करें।

टिप्पणी लिखे:-

- Aimes of Economics / Geography Teaching in middle school level. अर्थशास्त्र / भूगोल शिक्षण के उदेश्य माध्यमिक स्तर पर ।
- 2. व्लम के ज्ञानात्यक पक्ष की व्याख्या Explanation of bloom's Taxanomy.
- 3. व्लू प्रिंट Blueprint.
- 4. समप्रापि परीक्षण Aehievement Test
- 5. शिक्षण सहायक सामाग्री Teaching Aids.

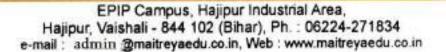
PC-7A Pedagogy of social science इतिहास / नागरिकशास्त्र

- write Essay on maxims and theory of History / civics Teaching.
 इतिहास / नागरिकशास्त्र शिक्षण के सिद्धान्त एवं सुकिवमों पर निबन्ध लिखिए।
- Describe in detail of different skills of History / civics Teaching.
 इतिहास / नागरिकशास्त्र शिक्षण के विभिन्न कौशलों को स्पष्ट करिए ।
- Describe charactivistics ,process ,micro teaching cycle of micro taching. सहम शिक्षण की विशेषताए,प्रक्रिया , सहम शिक्षण चक्र लिखिए ।
- 4. Write ments and limitations of micro teaching.

सूक्षम शिक्षण के लाभ एवं सीमाए लिखिए ।

 Write Evaluation methods and achievement tests of History / civics teaching.

इतिहास शिक्षण / नागरिकशास्त्र में मूल्यांकन प्रविधियाँ एवं उपलब्धि परीक्षणों को लिखिए।







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

Home science

Write importance of Home science Teaching in modern life style? आधुनिक जीवन पद्धति [Modern life style] में गृह विज्ञान शिक्षण का महत्व लिखिए ? Write went Laboratory, chart and model in curriculum of home science? गृह विज्ञान की पाठ्यचर्चा में प्रयोगशाला, चार्ट तथा माडल की उपयोगिता लिखिए ? Describe any two teaching methods in home science Teaching? गृह विज्ञान शिक्षण में प्रयुक्त किन्हीं दो शिक्षण विधियों का वर्णन कीजिए ? Who do you understand my micro Teaching? Constment micro lesson Planning a based on any me Teaching skill? सुक्षम शिक्षण से आप क्या समझते हैं ? किसी एक शिक्षण कौशल पर आधारित सुक्ष्म पाठ-योजना निर्माण कीजिए ?

Method of English

Unit-1

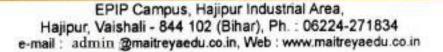
Explain the impontance of English at senion level.

Why English is called "window on the Modren World.

How can English be completed with othen cultural Development? Unit-2

which are the main method of teaching English? Devecible in detail about Any two method , justify the importance of those method for teaching English in Your State?

Evaluate the place of English language in school cumiculum in India.?







Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

3. What is the meaning learning plan? Make a learning plan on any lopic of

English.?

Objective Question :- 2 x 2 = 4

1. Establish, How English is the most significant Window on the world.?

2. What is inductive method?

SECTION:-

- 1. what is primary objective of teaching English?
 - 2. what is direct Method ?
 - 3. How many tepo of lesson plan.?

PC-7A-5 Pedagogy of Mathematics

1. Explain the aims and objective of Mathematics teaching? गणित शिक्षण के

लक्ष्य तथा उदेश्य की व्याख्या करें ?

- Discuss the relationship between mathematics and other subject ?
 गणित के अन्य विषयों के साथ संबंध की चर्चा करें ?
- 3. Describe the meaning & nature of mathematics. What are the scope of Mathematics teaching in secondry level ? राणित के अर्थ एवं प्रकृति का वर्णन क करें ? मध्यमिक स्तर पर गणित शिलण की क्या उपयोगिता हैं ? स्पष्ट करें / ऊल्लेख करें ।
 - Discuss the contribution of following indian mathematician in the history of Mathematics
 - (a) Bhaskaracharya

(b) Aryabhatta





Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna Shaping Education

गणित के इतिहास में निम्नलिखित गणितजों के योगदान की चर्चा कीजिए -

(a) भास्करायीय (b) आयीभट्ट

5. Explain the following approaches of teaching mathematics-

- (a) Inductive-Deductive (b) Analytical Synthetic
- (c) Hewistic

गणित शिक्षण में विभिन्न उपगम का वर्णन कीजिए ?

(a) आगमन-निगमन (b) विशलेषन-संशलेषण (c) इय्रिस्टिक

6. What do you mean by evaluation? Explain the characteristic of a gard-lest? मूल्याकन से आप क्या समझते हैं ? एक अच्छे परिहण की व्याख्या करें ?

PC-7(a) pedagogy of Biological science -2

Assignment question

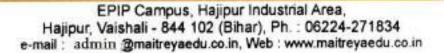
- Describe the nature and field of biology. जीवविज्ञान की प्रकृति और क्षेत्र का वर्णन करें।
- Describe process and importance of project method.
 पोजेक्ट विधि की प्रक्रिया और सहत्व का वर्णन करें।
- 3. What is the importance of Biological Teaching in school curriculum. विधालय पाठ्यचर्चा में जीव विज्ञान शिक्षण का क्या महत्व हैं ।

PC(7A) Pedagogy of physical science - 1

1 मौतिक विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य एवं उदेश्य का वर्णन करे ।

2. प्रोजेक्ट विधि की प्रक्रिया और उपयोग का वर्णन करें।

3. इकाई योजना और पाठ योजना में क्या अन्तर हैं ? स्पष्ट करें ।







Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

5. Identifying and using the different sources for study

CC-1, Unit -I: Learner Childhood and Developement

(बालक की अवधारणा)

मानव विकास की इन अवस्था या विकास की सम्पूर्ण प्रक्रिया को कुछ अवस्थाओं में बाँदा जा सकता है। 'विकास की अवस्था' शब्दों से संकेत जिलता है कि एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाने पर विकास प्रक्रिया में कुछ निश्चित परिवर्तन आ जाते है। वास्तव में मानव विकास एक सतत प्रक्रिया है जो जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त चलती है। परन्तु ज्यावहारिक दृष्टि से विकास की प्रक्रिया में बाल विकास की कुछ अवस्थाओं से होकर गुजरता है। मानव विकास को पाँच अवस्थाओं में बादा जा सकता है –



- গ্র্মার্থবা (Prenatal)
- 2. शैशवाचरन्वा (infancy)
- बाल्यावस्वा (Childhood)
- 4. किशोरावरचा (Adolesence)
- 5. प्रौड़ावरथा (परिपक्वावरथा) (Adulthood)

यूद्धि तथा विकास की विभिन्न अवस्थाओं में व्यवहार के लगभग सभी पक्षों में विशिष्ट विकासात्मक लक्षण विखायी देते है। शैक्षिक दृष्टि से इनमें से मध्य की तीन अवस्थाओं अथवा शैशवायस्था, बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था का अत्यधिक महत्व है

बाल्यावस्था (Childhood)

बाल्यावस्था का प्रयोग प्राय : उसके व्यापक अर्थ में किया जाता है । व्यापक अर्थ में बाल्यावस्था गर्भकाल से परिपक्वता तक के जीवन -प्रसार को कहा जाता है । परन्तु जब हम विकास की विभिन्न अवस्थाओं की चर्चा करते है तो बाल्यावस्था का प्रयोग संकुचित अर्थ में ही होता है । इसमें कुछ प्रमुख मानसिक और शारीरिक विशेषताएँ आविर्मूत होती हैं ।

बाल्यावरूथा तीन से 12 वर्ष की अवस्था होती है -

- 1. पूर्व बाल्यावस्था -3 से 6 वर्ष तक
- 2. उत्तर बाल्यावस्था -7 से 12 वर्ष तक





EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

i.





Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



निरंतर वातावरण के संपर्क में रहने के कारण इस अवस्था में बालक उससे भली – भांति परिचित हो जाता है और उस पर यथासंभव नियंत्रण करने लगता है । वातावरण में अपने को समायोजित करने के लिए वह नित्य

ICEM Shaping Education

इस आयु को शिक्षाशास्त्री प्रारम्भिक विद्यालय आयु (Elementary School Age) भी कहते है।

बालविकास के पक्ष -

विकास की प्रत्येक अवस्था में बालक के व्यवहार में अनेक प्रकार के परिवर्तन होते हैं। बालक के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर विकास को अंग्राकित पक्षों में विभक्त किया जा सकता है।

- 1. शारीरिक चिकाल
- 2. मानसिक विकास
- 3. सामाजिक विकास
- 4. संवेगात्मक विकास
- 5. नैतिक विकास

शैक्षिक बुष्टि से विकास के इन सभी पक्षों का अत्यधिक महत्य है। विकास की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में इन विभिन्न पक्षों का विकास किस प्रकार से होता है तथा विकास की गति को किस प्रकार से बांधित दिशा में तीव्र गति से बक्रया जा सकता है। शैक्षिक दुष्टि से इसका अध्ययन किया जाता है।

बाल विकास का इतिहास

बाल विकास का इतिहास अधिक पुराना नहीं है। सत्रहवी शताब्दी तक के, मनोविज्ञान के इतिहास को यदि देखा जाए तो पता बलता है की उस समय के विद्वान बालकों के जीवन चक्र के अध्ययन में कोई विशेष रुचि नहीं रखते थे। परल्तु यदि प्राचीन समय के दार्शनिकों के योगदान पर विचार किया जाए तो इस दिशा में उनकी रुचि स्पष्ट दिखाई देती है। शीक काल के दार्शनिकों का विचार था की **बाल्यावस्था की पटनाएँ, बालक के बाद के** विकास पर गहरा प्रभाव डालती है। प्लेटों का जत था कि **बाल्यावस्था के** प्रशिक्षण का प्रभाव बालक के बाद की व्यावसायिक दक्षताओं पर और समायोजन पर पड़ता है। सन्नहवीं शताब्दी में कमेनियस ने School of Infancy की स्थापना की।

अठारची शताब्दी में कुछ दार्शनिकों ने बालकों के अध्ययन पर विशेष बल दिया है। लॉक ने बालकों की रुचियों, इच्छाओं और क्षमताओं पर बल दिया है और बताबा कि व्यक्तिगत-निर्माण में वातावरण का बोगदान प्रमुख है। अठारहवीं शताब्दी में पेस्टालाजी ने बाल-विकास का सर्वप्रथम वैझानिक विवरण प्रस्तुत किया। यह विवरण Baby Biography पर आधारित था।





ICEN

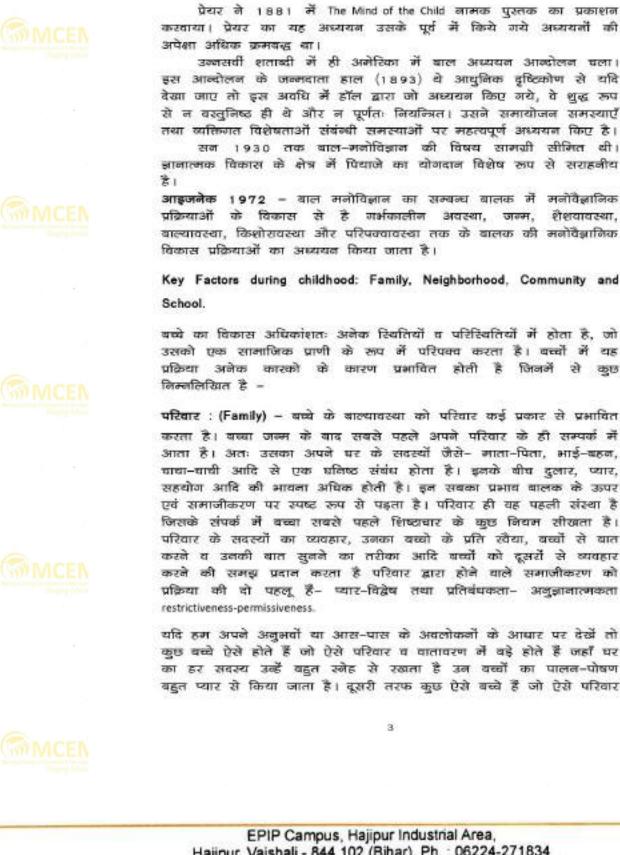






Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



प्रेयर ने 1881 में The Mind of the Child नामक पुरसक का प्रकाशन करवाया। प्रेयर का यह अध्ययन उसके पूर्व में किये गये अध्ययनों की

इस आन्दोलन के जन्मदाता हाल (1893) थे आधुनिक दृष्टिकोण से यदि वेखा जाए तो इस अवधि में डॉल द्वारा जो अध्ययन किए गये, वे शुद्ध रूप रो न वरतुनिष्ठ ही थे और न पूर्णतः नियन्त्रित। उसने समायोजन समस्याएँ तथा व्यक्तिगत विशेषताओं संबंब्धी समस्याओं पर महत्वपूर्ण अध्ययन किए है। सन 1930 तक बाल-मनोविज्ञान की विषय सामग्री सीमित थी।

बानात्मक विकास के क्षेत्र में पियाजे का योगदान विशेष रूप से सराहनीय

आइजनेक 1972 – बाल मनोविज्ञान का सम्बन्ध बालक में मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के विकास से है जर्भकालीन अवस्था, जन्म, शैशवावस्था, वाल्यावस्था, किशोरायस्था और परिपक्वावस्था तक के बालक की मनोवैझानिक विकास प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

Key Factors during childhood: Family, Neighborhood, Community and

बच्चे का विकास अधिकांशतः अनेक स्थितियों व परिस्थितियों में होता है, जो उसको एक सामाजिक प्राणी के रूप में परिपक्त करता है। बच्चों में यह प्रक्रिया अनेक कारको के कारण प्रभावित होती है जिनमें से कुछ

परिवार : (Family) – बच्चे के बाल्यावख्या को परिवार कई प्रकार से प्रभावित करता है। वच्चा जन्म के बाद सबसे पहले अपने परिवार के ही सम्पर्क में आता है। अतः उसका अपने घर के सदस्यों जैसे– नाता-पिता, भाई–बहन, चाचा-चाची आदि से एक घतिष्ठ संबंध होता है। इनके बीच दलार, प्यार, सहयोग आदि की भावना अधिक होती है। इन सबका प्रभाव वालक के उजपर एवं समाजीकरण पर स्पष्ट रूप से पड़ता है। परिवार ही यह पहली संस्था है जिसके संपर्क में बच्चा सबसे पहले शिष्टाचार के कुछ नियम सीखता है। परिवार के सदस्यों का व्यवहार, उनका बच्चो के प्रति रवैया, बच्चों से बात करने व उनकी बात सुनने का तरीका आदि बच्चों को दूसरों से व्यवहार करने की समझ प्रदान करता है परिवार द्वारा होने वाले समाजीकरण को प्रक्रिया की दो पहलू हैं– प्यार-विद्वेष तथा प्रतिबंधकता– अनुज्ञानात्मकता

यदि हम अपने अनुभवों या आस-पास के अवलोकनों के आधार पर देखें तो कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जो ऐसे परिवार व वातावरण में बड़े होते हैं जहाँ घर का हर सवस्य उन्हें बहुत स्नेह से रखता है उन बच्चों का पालन-पोषण बहुत प्यार से किया जाता है। दूसरी तरफ कुछ ऐसे बच्चे हैं जो ऐसे परिवार









Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



में बड़े होते हैं जहाँ उन्हें हर बात पर डांट पड़ती रहती है, छोटी-छोटी जलती पर पीटते रहते हैं यहाँ तक कि कई बार जालियाँ भी खाते है।

अगर हम दोनों बच्चों के व्ययहार का अवलोकन करें तो हम इसमें रूपष्ट रूप से अंतर देख सकते हैं। जिन माता-पिता व अन्य सवस्यों ने बच्चों के विकास के समय स्नेह विखाई देता है, उन बच्चों में सामाजिक शीलगुणों का विकास अधिक तेजी से होता है। स्नेह पाने वाले बच्चों में सामाजिक शीलगुणों का विकास अधिक तेजी से होता है। स्नेह पाने वाले बच्चों में सुरक्षा की भावना, आत्मसम्मान, आत्मविश्वास आदि गुण अधिक पाए जाते हैं। यधपि जिन बच्चों को विद्वेष वाला वातावरण मिला है, उसके व्यवहार व बात करने के तरीके में उसकी झलक अवश्य विखाई देती है। वह ज्यादा लोगों से बात नहीं करता, ज्यादातर समय जुस्से में रहता है लड़ाई-झगड़ा करता है।

दूसरे परिप्रेक्ष्य में बच्चे का सामाजिक विकास परिवार के द्वारा दिखाए गए नियन्त्रण पर निर्भर करता है। यदि बच्चा ऐसे परिवार में हैं जहाँ उसे बहुत प्यार निलता है और उसकी हर जायज और नाजायज माँगे पूरी की जाती है तो इसका असर बच्चे पर नकारात्मक रूप से पड़ता है और जब यही व्यवहार उसे समाज द्वारा नहीं मिलता, लोग उसकी बात नहीं मानते, जिससे बच्चा ज्यादा गुरुसा करेगा, लड़ाई-झगड़ा करेगा आदि। ऐसे में वह ज्यादा सामाजिक संबंध नहीं बना पाएगा। इसके विपरीत जो बच्चा ऐसे परिवार में बड़ा हो रहा है जहाँ हर बात पर उसे रोका जाता है, उसकी हर इच्छा का विरोध होता है, उस पर तरह-तरह के प्रतिबन्ध लगाए जाते। इससे बच्चा स्वयं में ही क्वुंदित होता जाए और इसी कारण वो अपने भावों, विचारों, इच्छाओं को खुद तक ही रखे। यह स्थिति भी बच्चे के लिए नकारात्मक है।

इन सब के अतिरिक्त परिवार की आर्थिक स्थिति बच्चे को प्रभावित करती है। बालक-बालिका को सन्तुलित एवं पोषक आहार मिलना जरूरी है। इसकी व्यवस्था परिवार की जिन्नेवारी है। संतुलित आहार वह आहार है जिसमें शरीर के लिए अपेक्षित सभी पोषक तत्व उचित मात्रा में होते हैं। अल्पपोषण की स्थिति बालक को अपने आहार द्वारा बहुत कम पोषण तत्व मिलता है। जिससे कुपोषण की संभावना बढ़ जाती है। कुपोषण से मरितष्क के कुछ भाग तथा तंत्रिका तंत्र स्थायी रूप से प्रभावित हो सकते हैं। कुपोषण से वृद्धि वर और गत्यात्मक समन्वय प्रभावित होते हैं। ऐसे परिवार जो अपने बालकों का उचित सुरक्षा एवं पोषण नहीं दे पाते उन बालकों का गत्यात्मक एवं संज्ञानात्मक कौशल का विकास ठीक प्रकार नहीं हो पता है।

पास-पड़ोस (Neighourhood) बालकों का पास-पडोस विभिन्न प्रकार की गतिविधियों से प्रभावित करता है। पास-पडोस के व्यक्तियों के सम्पर्क में आने से बच्चे नए-नए व्यवहार सीखते हैं। परिवार व विद्यालय के अलावा बच्चे अपने समय का कुछ भाग पास-पडोस के साथ बिताते हैं। यह एक









4





Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

MCEN

ऐसा स्थान है जिससे बच्चों को हर कदम पर परामर्श मिलता है तथा आसपास हो रही क्रियाओं का अवलोकन करने का अवसर मिलता है, जिससे बच्चे प्रत्यक्ष व अप्रत्यन रूप से बहुत कुछ सीखते है। उदाहरण के लिए-जब एक लड़की को अपने आस-पडोस के लोगों द्वरा घर का काम निपुणता से करने पर धनात्मक सराहना मिलती है और कुछ ऐसा कार्य करने पर जैसे ऊँची आवाज में चिल्लाना, मारपीट करना (कार्य जिसे सामाजिक अनुमोदन नहीं मिलता) पर नकारात्मक सराहना मिलती है, तो अपने आप ही यह बच्ची हर वो काम करने लगेगी, जिसे समाज स्वीकृत करे। इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से ही सही पर बच्ची का समाजीकरण तो होता ही है।

पास-पडोस के माध्यम से बच्चों का संवेगात्मक, भाषा विकास, सामाजिक विकास, मानसिक विकास व नैतिक विकास होता है।

विद्यालय (School) – विद्यालयों में ही भारत के भाग्य का निर्माण होता है आज के विद्यालयों की भूमिका बहुत बदल गयी है, विद्यालय जहाँ समाजीकरण के साधन के रूप में प्रयोग होते है वहीं सामाजिक मूल्यों सामाजिक संज्ञान, सामाजिक मानकों व मापदंडों के आधार या ढांचे में बच्चों को ढालते जाते हैं। विद्यालय की भौतिक संरचना, शिक्षक, पाठ्यपुरतक आदि का असर भी बच्चे के समाजीकरण पर प्रत्यक्ष रूप से पक्ष्ता है।

विद्यालय में शिक्षक की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक खुद किन मूल्यों/मानकों पर चलते हैं वह भी काफी हद तक बच्चे के समाजीकरण हिस्सा है। शिक्षक बच्चों से कैसे बात करते हैं ? वच्चों के सामने दूसरे धर्म/दर्ज के लोगों को कैस संबोधित करते हैं, शिक्षक बच्चों के सामने कैसे उदाहरण पेश करते हैं ये सब व्यवहार बच्चों के सामाजिक विकास का अहम हिस्सा है विद्यालय में शिक्षक ही बच्चों के आपसी संबंध व उनके समाज के साथ संबंध की बुनियाद कराते हैं।। पठन सामग्री की सहायता से बच्चों में धीरे-धीरे सामाजिक मनोवृत्ति व सांस्कृतिक मूल्यों का विकास होता है।

विद्यालय बच्चों के शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक, भावात्मक विकास के लिए खेलकूद का वियमित आयोजन कराता है। बच्चे जन्म के बाद उस बढ़ने के साथ-साथ जितना अधिक खेलकुद करते हैं उनका शारीरिक विकास उतना ही स्वाभाविक तरीके से होता है। बच्चे अपनी अभिव्यक्ति भी खेल कूद व शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से ही अधिक सहज रूप से कर पाते हैं। इस प्रकार विद्यालयों में बच्चों के शारीरिक विकास हेतु खेलकुद व शारीरिक व्यायाम का बहुत महत्व है। प्रायः भारतीय परिवारों में अधिक खेलकूद करने वाली लड़कियों के प्रति आन राय होती है कि उन्हें अधिक उछलकूद नही करनी चाहिए पर लड़कियों के शारीरिक विकास हेतु भी खेलना कूदना आवश्यक है। उचित शारीरिक विकास व होने पर बच्चों में इसका प्रभाव, अन्य विकास जेसे-संवेगात्मक, भावात्मक विकास पर विखाई देता है विद्यालय आने के पश्चात शिक्षकों की भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है की बच्चों को अधिक



Shap

ICEM

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

5





Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



रो अधिक शारीरिक जतिविधियाँ व क्रियाएं करवाएं, जिसमें विभिन्न खेल कूद एवं सौगिक क्रियाओं का भी समावेश हो।

समुदाय (community)- समुदाय एक वृहद सामाजिक समूह होता है। इसमें परिवार, पास-पड़ोस, जातियाँ और अनेक अन्य सामाजिक समूह, संगठन और संख्याएं सभी सन्मिलित होते है। समुदाय अपने मे पूर्ण इकाई है और ख्ययं इन सब समूहों संगठनों एवं संख्याओं का निर्माण होता है और विभिन्न सभ्यता और संख्कृति के समुदायों और एक भाषा, एक सभ्यता और एक संख्कृति के समुदायों के बच्चों का समाजीकरण भिन्न रूप में होता है। जिस समुदाय में एक भाषा, संख्कृति, रीति-रिवाज होते हैं चाहे बच्चे जिस परिवार से आयें, समुदाय के सवस्यों के बीच उसी भाषा, संख्कृति, रीतिरिवाजों के अनुसार व्यवहार करते हैं। परिणामतः बच्चों के समाजीकरण की एक दिशा होती है। इसके विपरीत जिस समुदाय में भिन्न भाषा, भिन्न पर्यावरण में शत् संख्कृतियों के लोग रहते हैं उनके बच्चे अपने को भिन्न पर्यावरण में पाते है। समुदाय की सांख्कृतिक भिन्नता बच्चे के समाजीकरण में बाधक होती है।



समुदाय में मनाए जाने वाले उत्सव और त्योहार बच्चे के समाजीकरण में विशेष योग देते हैं। इन अवसरों पर बच्चे एक-दूसरे के सम्पर्क में आते हैं। इस सम्पर्क का परिणाम प्रतिद्वन्दिता और सहयोग दोनों रूपों में देखा जाता है। थोड़ी सी सावधानी वस्तने पर बच्चों में अपने समुदाय की भाषा, कला, साहित्य, इतिहास, सभ्यता और संस्कृति के प्रति स्वायी भाव बना सकते है।

बच्चा जिस समुदाय में पैदा होता है उसे उसी में समायोजन करके रहना होता है यदि वह उसनें समायोजन नहीं करता तो वह सुखपूर्वक नहीं रह सकता। बच्चों का समाजीकरण समुदाय की सामूहिक क्रियाओं में सक्रिय भाग लेने से ही होता है।

बाल्यावस्था भारत एवं बिहार के परिपेक्ष्य में

भारत एवं बिहार विविधताओं का देश एवं प्रदेश है। विभिन्न प्रकार के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिप्रेश्यों से भारत सम्पन्न है। समाज अलग-अलग प्रकार को लोकाचार, रीतियों, प्रथाओं, परम्पराओं, कालूनों, धर्म और आचार का पालन करता है। अपनी इन विशिष्टताओं के साथ अपने बालको का पालन-पोषण करता है, उनके व्यवहार को नियन्त्रित करता है, उनको मानसिक सुरक्षा प्रदान करता है, उनकी आवश्यकतार्थे पूरी करता है और समाजीकरण करता है

एक ही समाज आर्थिक कारक के कारण विभिन्न वर्जों में विभाजित होता है। भूमि, पूँजी और सम्पत्ति के आधार पर वर्जों की आर्थिक स्थितियाँ वर्णीकृत होती है। उच्च आर्थिक समूह, मध्य आर्थिक समूह, निम्न आर्थिक समूह और निर्धन समूह। परिवार की आर्थिक स्थिति का बालक के विकास











Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। वालक का स्वास्थ्य, शिक्षा, समाजीकरण आदि सभी पक्ष परिवार की आर्थिक स्थिति पर निर्भर होते है।

हमारे देश की जनसंख्या वामीण (68%) और नगरीय क्षेत्रों (32%) में यास करती है। दोनों ही क्षेत्रों के बालकों के विकास में भिन्नता पायी जाती है, परन्तु दोनों ही क्षेत्रों में बालकों को भिन्न-भिन्न खतरों का सामना करना पड़ता है।

नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों में पलते बच्चे -

नगरीय और वामीण दोनों ही क्षेत्रों में वालकों के लिए चुनौतियाँ पायी जाती है। नगरीय और वामीण दोनों ही क्षेत्रों में इतने निर्धन परियार हैं जहाँ वच्चों की मूलभूत आवश्यकतायें भी पूरी नहीं हो पाती, जैसे-पोषण, स्वास्त्य, शिक्षा, पानी, आवास एवं सुरक्षा आदि। नगरीय क्षेत्रों के बच्चों को अक्सर खतरों का सामना करना पड़ता है। अक्सर वे सड़क दुर्घटना और हिंसा के शिकार होते रहते है।

नगरीय क्षेत्र के कई स्तर है कहीं नगर की जनसंख्या 1.5 करोड़ है तो कहीं नगर की जनसंख्या 1 लाख है। जहाँ मूलभूत आवश्यकतायें, बिजली, पानी, शिक्षा, सड़क, पानी की निकासी, स्वास्थ्य सुविधाएं, पुलिस सुरक्षा, ननोरंजन, खेल के नैदान, सड़क पर आवागमन के साधन आदि सुगमता से उपलब्ध है पर वहाँ भी आर्थिक विषमता के कारण सुविधाओं का अभाय है।

ये क्षेत्र वामीण है जो नगर क्षेत्र के बाहर के क्षेत्र में जनसंख्या फैली हुई है। जहाँ के लोग प्राथमिक वख्तुओं के उत्पादन हैं तथा जहाँ का जीवन सादा और साधारण है। यहाँ के लोगों को शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा मूलभूत आवश्यकताओं का अभाव है जैसे- शिक्षा की विभिन्न स्तर, बिजली, पानी की निकासी, कुछ क्षेत्रों में पानी का अभाव, सड़क व आवागमन के साधन, पुलिस सुरक्षा, मनोरंजन के साधन व स्थानीय खेल के मैदान, स्वास्थ्य सुविधाएं, व साहित्य आदि। जबकि 70% से उपर की जनसंख्या वामीण परिवेश में निवास करती है और गरीब है। भारत में 26% जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे है जबकि बिहार में 42% लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करते हैं। नगरीय और वामीण क्षेत्रों में पलते बालकों की कठिनाइयों और समस्याओं को निम्नवत लिखा जा सकता है।

 युपोषण (Malnutrition)- नजरीय और वामीण दोनों ही क्षेत्रों में कुपोषण की समस्या है। कुपोषण पौष्टिक भोजन एवं विदामिन की अनुपलक्ष्यता के कारण होता है। बालकों में कुपोषण उनके विकास को प्रभावित करता है जैसे- मानसिक स्वास्थ्य एवं विकास पर बुराप्रभाव, संकामक बीमारियों की सम्भावना। बालकों में कुपोषण की समस्या का सबसे बड़ा कारण पारिवारिक निर्धनता है। दूषित पर्यावरण, जन्दे और अवांछित स्थितियों वाले घरों में निवास, पौष्टिक भोजन की अनुपलक्ष्यता, स्वच्छ जल और स्वास्थ्य सुविधाओं एवं टिकाकरण के अभाव निर्धनता का ही परिणाम है।

7







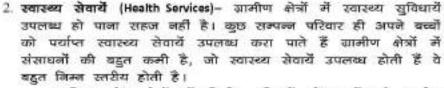






Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



वहीं नगरीय क्षेत्रों में निर्धन परिवारों के बच्चों को पर्याप्त रवारथ्य रोवायें नहीं मिल पाती है। नगरीय मलिन बरिलयों के बच्चे स्वारथ्य सुविधाओं के अभाव में बीमारियों का शिकार होते हैं, अपंजता का शिकार होते हैं।

3. शिक्षा (Education) – नगरीय और वामीण क्षेत्रों में शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत-सी कमियाँ व्याप्त है। वामीण क्षेत्रों के बालक नगरीय क्षेत्रों के बालकों की तुलवा में नियमित रूप से बहुत कम विद्यालय जाते है। विद्यालय में नामांकन के प्रति वामीण क्षेत्रों में जागरूकता का अभाव है नामांकन के लिए रेलीयाँ, जनसम्पर्क आदि माध्यमों से नामांकन के लक्ष्य प्राप्त करने के प्रयास किये जाते है। शिक्षा के न्यूनतम स्तर के उद्देश्य भी प्राप्त नहीं कर पाते। नाता-पिता बच्चों को विद्यालय भेजने में खास रुचि नहीं रखते। 2014 के सर्वेक्षण से स्पष्ट हुआ है कि 25% वामीण बच्चे प्राथमिक विद्यालय नहीं जाते।

सरकार और विद्यालय प्रशासन के स्तर पर प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा में नामांकन और गुणात्मक शिक्षा के बहुत प्रयास किये जा रहे हैं। खासकर SC/ST] अल्पसंख्यक,म पिछड़ी जाति के बालकों एवं बालिकाओं में शिक्षा की दर शोचनीय है।

- 4. खेल-कूद के मैदान का अभाव नगरीय और वामीण क्षेत्रों में खेल के मैदान अब खोती के लिए तथा शहरी क्षेत्रों में आवास की अधिक मांग के कारण खत्म हो गये। औपचारिक खेल के मैदान बहुत कम है तथा सभी बच्चों की पहुँच से दूर है। परिणामतः बच्चे छोटे-छोटे स्थान पर या सड़कों के कितारे खाली ख्वानों पर खेलते देखे जा सकते हैं। ये स्थान स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयुक्त नहीं होते हैं।
- 5. शिर्धनता (Poverty) नगरीय क्षेत्रों में कुछ बस्तियां झुग्गी-झोपड़ियों का है। बस्ती में रहने वाले बच्चों के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्या निर्धनता है। जिससे थे बच्चे अपनी मूलमूत समस्याओं को पूरा नहीं कर पाते है। निर्धनता के कारण थे बच्चे एक ओर तो कुपोषण, अल्पपोषण, शोषण, श्रष्टाचार तथा नैतिक अवमूल्यन जैरो सामाजिक दुर्जुणों से प्रभावित है। वहीं इन बच्चों को विविध प्रकार के लालय देकर कुछ अपराधी गिरोहों के द्वारा अपने अपराधों के लिए इस्तेमाल किये जाते हैं।

चस्ती के मलिन वातावरण में रहने के कारण बच्चों की मनोवृत्ति अपराधी बन जाती है और उनका नैतिक विकास नहीं होता है। उनमें चोरी जैसी अन्य बुरी आदतें जन्म लेती है। एक ही कमरे में जब









ICEM

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

8





Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



परिवार के सभी सवस्य रहते हैं और वयस्क व्यक्तियों के यौन व्यवहारों को बच्चे देखते है तो उन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि मलिन बस्तियों में बच्चे यौन अपरायों में भी लिप्त हो जाते हैं। गरीबी के कारण बच्चे इधर-उधर चूनते रहते है, जिससे बाल अपराध और आवारागर्वी पनपती है।

6. जशा और आंतरिक कलह – जगरीय वरितयों में बच्चे अल्प आयु में हि गुटका, बीडी, सिगरेट आदि के सेवन करते पाये गये है। ये बहुत हद तक अपने बड़े लोगों को देखकर अनुशरण करते हैं।

शहरी एवं ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों में आर्थिक एवं सामाजिक कारणों से परिवार एवं समाज में आंतरिक कलह देखने को मिलता है। जिसमें मॉं-वाप आपस में लड़ते हुए देखे जाते हैं। जिसका बुरा प्रभाव बच्चों के चरित्र पर पड़ता है।

7. बालिका और लड़की के रूप में जीवन – हमारे समाज में पारम्परिक सांस्कृतिक मूल्यों की व्यापकता ने लड़कियों के विकास, स्थितियों और सभी पर अपनी काली छावा डाल रखी है। भारतीय समाज में लड़कियों को लड़को की अपेक्षा उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है। समाज के इस दृष्टिकोण के कारण लड़कियों को हीन दृष्टि से देखा जाता है। उन पर अनेक पाडनियरों लगायी जाती है। उन्हें शान्त, सौम्प, सहनशील और आज्ञाकारी होने के उपदेश दिये जाते हैं। अभिभावकों का लड़कियों की शिक्षा के प्रति उवासीनता वाला दृष्टिकोण भी स्कूल छोडने वाली बालिकाओं की संख्या को बढ़ा देता है।

वाल्यायरथा में ही बहुत-सी लड़कियां शारीरिक एवं मानसिक हिंसा का शिकार हो जाती है और इसके विरुद्ध परिवार एवं विश्तेदारों द्वारा आवाज न उठाना एक बड़ी समस्या है सांस्कृतिक मूल्यों, माँ के काम में हाथ बांटने, डर की आवना, घर संभालने की सोच आदि के कारण बालिकार्ये भेदभाव का शिकार होती रहती है। लड़कियों में कुपोषण का कारण भोजन की कमी न होकर उन तक भोजन का न पहुँच पाना भारतीय सांस्कृतिक वर्चस्व में बालिकाओं के मानवाधिकारों का कोई स्थान नहीं होता। उन पर नैतिकतार्थे थोपी जाती है उनकी इच्छा-अनिच्छा को सम्मान नहीं दिया जाता। इस तरह के दबाय के कारण बालिकाओं का खाभाषिक, जानशिक, संवेगात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास अवरुद्ध हो जाता है।

8. दलित समाज के बच्चे और उनका मनोसामाजिक विकास -

बलित परिवारों के बच्चे अवसर कुपोषण के शिकार होते है, ओजन में प्रोटीन की कमी उनके बौद्धिक विकास को बाधित करती है। बलित परिवारों के बच्चे बाल्यावस्था से ही अपनी निम्न लामाजिक स्थिति को पहचान लेते हैं। इसे छः वर्ष तक बच्चों में अपनी सामाजिक स्थिति की पहचान बनने लगती है, जो आठ वर्ष की आयु तक परिपक्य हो जाती है, जिसका प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर स्पष्ट परिलक्षित होता है।









EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

9







Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

सामाजिक गतिशीलता और सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण साधन "शिक्षा" है पर विद्यालय छोडने वालों में अधिकांश दलित परिवारों के बच्चे ही होते हैं। कोई बालक शिक्षा से कितना लाभ उठा सकता है यह उसकी बुद्धि, भाषा और संवेगात्मक परिपक्षता पर निर्भर होता है। अपने अशिक्षित माता-पिता की तुलना में इनकी भावी योजनायें बड़ी व्यापक और काल्पनिक होती है। अशिक्षित माता-पिता (दोनों) मजदूरी या अन्य कार्यों में लगे रहते हैं ताकि वे अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकें। वे अपने बच्चों के साथ अर्थपूर्ण अन्तक्रिया नहीं करते, बच्चों के सामने जन्दी और अश्लील भाषा में बात करते हैं। इससे बच्चों का बौद्धिक विकास शिविल होता जाता है।

बिहार के सन्दर्भ में बाल्यावस्था -

भारत के अन्य राज्यों की तरह ही बिहार विविधतापूर्ण है। बिहार भी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आधारों पर विभाजित है। इन्हीं आधारों पर बहुत सारी समस्याएँ बालकों को झेलनी पड़ती है।

बाल्यावस्था और आर्थिक कठिनाइयाँ – विहार, देश के सर्वाधिक जरीव राज्यों में दूसरे स्थान पर है। यहाँ की 42% जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करती है। तथा अत्यधिक जनसंख्या घनत्व (881 व्यक्ति) का दबाव है। यहा शहरीकरण का रत्तर भी 10.47% है जो राष्ट्रीय औसत 27.78% से बहुत कम है। यही कारण है कि 89% आवादी अभी वायों में निवास करती है। जहाँ का समाज प्रधानतः खेतिहर है यहाँ निरक्षरता जरीबी और बेरोजगारी चार्रो तरफ फैली हुई है। अखिल भारतीय शिक्षा सर्वेक्षण 2002 के अनुसार राज्य के स्कूल जाने वाली उस 6–14 वर्ष के बच्चों की संख्या 204.48 लाख थी, जिसमें लड़के 108.36 लाख और लड़कियाँ 96.12 लाख थी। जिसमें 90% तावात जामीण बच्चों की है।

सामाजिक समावेशन की क्रिया मुख्यतया, गरीबी, आय, सम्पत्ति तथा उपभोग में वितरण की विषमता, बेरोजगारी, अशिका, युपोषण, स्वास्थ्य सेवाओं की कमी लैंगिक विभेद आदि है। जो मूलतः गरीबी के कारण उत्पन्न हुई है।

2001 की जनगणना के अनुसार बिहार में बालश्रम 8.82% है। बाल श्रम के कारण बालक शिक्षा के अपने मौलिक अधिकार से बंचित हो रहे हैं। बिहार में अनेक बच्चे अल्पायु में ही अपने बचपन को गिरवी रखकर बंधुआ मजदूर बनकर उत्पादन की विभिन्न प्रक्रियाओं में शामिल हो जाते हैं। बिहार के पिछड़े क्षेत्रों खासकर सहरसा, मधुवनी, दरभंगा, समस्तीपुर, पूर्णिया आदि जिलों में प्रति वर्ष बड़ी तादाद में बच्चे दूसरे राज्यों में काम करने जाते हैं। सहरसा से दिल्ली आदि के लिए सीधी बस सेवा इसी उद्देश्य से उपलब्ध करायी गयी है। बिहार की 'मानवी' नामक स्वयंसेयी संस्था के द्वारा किये गये एक सर्वेक्षण में 10 वर्ष से कम उत्त के 34% और 10 से 14 वर्ष के 66% बाल मजदूर पाये गये।





10

ICEM





Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



विहार के बाल मजदूरों पर नजर डालें तो पता चलता है कि 56.86% अनुसूचित जाति, 36.28% अन्य पिछड़ी जाति, 3.17% ऊँची जाति और 3. 69% मुरिलम समुदाय के परिवारों से है। ये सभी आंकड़े, सामाजिक और आर्थिक आधार पर गणित हैं।

बिहार के बालकों की कठिन परिस्वितियाँ – कठिन परिस्वितियों में बच्चे अपने अधिकारों से यंचित रहते हैं और विविध प्रकार से बच्चों का विकास प्रभावित होता है। प्रत्येक बच्चे का अधिकार होता है कि वह अपना विकास, अपनी योग्यता, क्षमता और साधन की संपन्नता के अनुरूप करे परन्तु कठिन परिस्वितियों में रहने वाले बच्चों को साधन-सुविधाओं और अवसरों से वंचित होना पड़ता है। इन बच्चों की संवेदनशीलता का स्तर बहुत गिर जाता है। माता-पिता और बच्चों में बहुत कम अन्तःक्रिया होती है। ऐसे में उनके मन में असुरक्षा की भावना पनपती है, उनका व्यवहार जोखिमपूर्ण और आवेशपूर्ण हो जाता है।

बिहार में कुछ क्षेत्र नक्सल प्रभावित है नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के बच्चों को विविध प्रकार की सनस्याओं का सामना करना पड़ता है। हिन्दूस्तान टाइम्स ने 2015 में बिहार के तीन क्षेत्रों को नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के रूप में चिन्हित किया है – जमुई, जया और औरंजाबाद। विकीपिडिया येवसाइट ने हाल में ही 'रेड कॉरीडोर' के रूप में बिहार के कुछ क्षेत्रों को चिन्हित किया है जो नक्सलवाद से पीड़ित है– औरंजाबाद, जया, रोहतास, भोजपुर, कैमूर, पूर्वी चम्पारण पश्चिमी चम्पारण, सीतामकी, मुंगेर, नवादा और जमुई।

नक्खल प्रभावित बोत्र में अखुरक्षा की भावना प्रशासनिक तंत्र में भी वेखने को आती है सरकार की योजनायें प्रभावीरूप में लागू नहीं हो पाति है। स्कूल में शिक्षक अनुपस्थित रहते है। बच्चे स्कूल जाना छोड़ देते है। माता-पिता डर की वजह से बच्चों को स्कूल नहीं भेजते। नवादा जिले के अकबरपुर ब्लॉक की बुधुवा और बकसण्डा पंचायतों में दर्जनों लड़कियाँ विद्यालय जाने से वंचित है क्योंकि वे विद्यालयों से 2–3 किलोमीटर दूर रहती है।

यहीं उत्तर बिहार में बाढ़ की विभीषिका तथा बिहार के अनेक हिस्से, खासकर दक्षिणी बिहार में हिंसा और अंतः संघर्ष, जो सामाजिक जीवन की लाक्षणिकता बन गयी है। इन्हीं विषम परिस्थितियों में बिहार का बचपन आने बढ़ रहा है। बच्चों के आदिंक एवं सामाजिक स्थिति तथा इनकी रहने की परिस्थितियों के आधार पर बच्चों को वर्जीकृत किया जा सकता है।

- (1)कुपोषित, अल्पपोषित बच्चे
- (2)दुर्व्यवहार एवं शोषण के शिकार बच्चे
- (3)स्वास्थ्य सुविधा और चिकित्सा से बंचित बच्चे,
- (4) निर्धनता में वकते वच्चे,
- (5)मलिन बस्तियों में रहने वाले बालक,
- (6)शिक्षा और स्वकूल से दूर बच्चे,





ICEM





Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



(7)बाढ़ एवं नक्शल प्रभावित क्षेत्र में निवास करने वाले बच्चे।

(8)बाल श्रम, तरकरी, बाल अपराधी बच्चे।

उपरोक्त विभिन्न सन्दर्भों में विडार के बच्चों की बायोवाफ़िक्स, कहानियों, घटनाओं, शोध, समाचार व सर्वेक्षणों के अध्ययन से जो छवि उभरती है, उसका वर्णन किया गया।

मानव विकास की अवस्थाएँ

मानव विकास की निम्नांकित अवस्थाएँ होती हैं :-

(i) पूर्व वाल्यावस्था, (ii) उत्तर वाल्यावस्था एवं किशोरावस्था

शिक्षा मनोविज्ञान में बाल्यावरथा से किशोरावरथा, तक के महत्व को रेखांकित किया गया है। इन अवस्थाओं में विभिन्न तरह के विकास होते हैं, जैसे- शारीरिक विकास, मानसिक विकास, सामाजिक विकास, सांवेभिक विकास इत्यादि। नीचे इन अवस्थाओं में होनेवाले विकास का वर्णन किया जा रहा है-

1. प्रारम्भिक बाल्यावस्था में विकास (Development in Early Childhood):-

प्रारम्भिक अवस्था 2 वर्ष से प्रारम्भ होकर 6 वर्ष तक की उस तक होती है, इसे शिक्षकों द्वारा Pre-school Age या Pregang Stage भी कहा जाता है। जनवेदैज्ञानिक रूप से इस अवस्था में भाषा विकास, प्रत्यक्षणात्मक एवं संज्ञानात्मक विकास, बीद्धिक विकास, सामाजिक विकास तथा सांवेगिक विकास होता है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था में होने वाले प्रमुख विकास नीचे वर्णित हैं-

(i) शारीरिक विकास (Physical Development)-इस अवस्था में बालक-बालिकाओं के शरीर के अंगों में स्वष्ट रूप से परिवर्तन शुरू हो जाता है। बालकों के पैरों में काफी वृद्धि होती है तथा शरीर की पूरी ऊँचाई का आधार सिर्फ पैरों की लम्बाई होती है परब्त सिर में वृद्धि मंद गति से होती है। सामान्यतः 4 साल के वालक का वजन 38 पीन्ड होता है तथा लग्बाई 40 इंघ होती है। बालिकाएँ यजन और लम्बाई-दोनों में ही कुछ कम होती है। 6 वर्ष की उस तक बालकों का औसत वजन 50 पौण्ड तथा ऊँचाई 45 इंच तक हो जाती है। आकार और वजन के अलावा बालकों में कुछ अन्य परिवर्तन भी दिखने लगते हैं, जैसे- मांसपेशियाँ अधिक गठीली और मजबूत हो जाती हैं, वचपन आकृति (Baby Look) समाप्त होने लगती है। कुछ बालकों का शारीरिक जठन मोटा होता है। ऐसे जठन को Endomorphic Build कहते हैं। कुछ बालकों का शारीरिक जठन हड़ा-कड़ा होता है। ऐसे गठन को Mesomorphic Build कहते हैं। कुछ का शारीरिक गठन







12





Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna











बुबला-पतला होता है। ऐसे गठन को Ectomorphic Build कहते हैं। प्रारम्भिक बाल्यावरुवा के समाप्त होते-होते बालकों में कुछेक स्वायी बॉत उग आते हैं।

- (ii) आषा विकास (Language Development)- प्रारम्भिक वाल्यायस्था में वालक बोलना सीखने के लिए बहुत प्रेरित रहते हैं। इस अवस्था के आरंभ में उनकी बोली (Speech) मुलतः आत्मकेंद्रित होती है। वे अपनी जरूरतों और स्वयं के बारे में ही बोलते हैं परंतु इस अवस्था के अंत तक पहुँचते-पहुँचते वे परिवार के अन्य लोगों के बारे में भी कुछ बोलना शुरू कर देते हैं। इस अवस्था में जुरुसा आने पर वे दूसरों को नाली भी बकने लगते हैं। इस अवस्था में बालक अभ्यास द्वारा शक्दो उच्चारण करना (Pronunciation of Words), शब्दावली बनाना (Vocubulary Building) तथा याक्य बनाकर बोलना (Forming Sentences) मुख्य रूप से सीखते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इस अवस्था को 'वक्की अयस्था (Chatterbox Stage)" कहा क्योंकि जैसे ही वे आसानी से बोलना सीख लेते हैं, वे अक्सर कुछ-न-कुछ बोलते ही रहते हैं। इस अवस्था में बालकों में भाषा विकास अन्य बातों के अलावा बालकों की बुद्धि, घरेलू वातावरण, नियमित प्रशिक्षण आदि पर निर्भर होता है।
- (iii) सांवेगिक विकास (Emotional Development)- इस अवस्था में वालकों में तीव्र संवेग (Intense Emotion) देखने को मिलता है। इस अवस्था में बालकों में समान्यतः वही संवेग देखने को मिलते हैं जो एक सामान्य वयस्क में होते हैं। अंतर केवल इतना होता है कि इन संवेगों की अभिव्यक्ति बालक किसी और ढंग से करते हैं वयस्क किसी और ढंग से। इन संवेगों में क्रोध, इर, डाह, उत्सुकता, खुशी, दुःख तथा अनुराग आदि प्रधान हैं। क्रोध का संवेग 2 से 4 खाल की अवस्था में अधिक होता है, पर उसके बाव थोड़ा कम हो जाता है। डर के साथ भी ऐसी ही स्थिति होती है। डाह का संवेग 2 वर्ष की उन से शुरु होता है और उस बढ़ने के साथ-साथ बढ़ता जाता है। उत्सुकता अधिक बुद्धियालों में अधिक, कम बुद्धिवालों में कम होती है। इस अवस्था में बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में डर, डाह तथा अनुराग का संवेग अधिक होता है। डाह का संवेग उन परिवार के बालकों में अधिक होता है जिनका आकार छोटा होता है। प्रथम जन्मक्रम वाले बालक में बाद में जन्मे बालकों की अपेक्षा डाह का संवेग उन परिवार के बालकों में अधिक होता है जिनका आकार छोटा होता है। प्रथम जन्मक्रम वाले बालक में बाद में जन्मे बालकों की अपेक्षा डाह का संवेग अधिक होता है।
- (iv) सामाणिक विकास (Social Development)- 2 से 6 साल की अवस्था में बालक सामाजिक सम्पर्क कायम करना सीखते हैं और अगल-बगल के समान उस के बालकों के साथ मिलना-जुलना पसन्य करते हैं। इस अवस्था में बालक अपना संबंध व्यस्क से बनाकर रखते है क्योंकि उनसे उन्हें आनन्द मिलता है, परन्तु 4-5 साल की अवस्था में उन्हें अपनी उस के ही बालकों के साथ बातचीत करने तथा खेलने में अधिक आनन्द आने लगता है। इस अवस्था में बालकों की उस जैसे-जैसे बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे अन्य बालकों के प्रसि उनका

13



ICEM

ICEIVI Shaping Education





Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

नित्रतापूर्ण संबंध बढ़ता जाता है तथा विद्वेषी अन्तः क्रियाओं (Hostie Interactions) में कमी आती जाती है। इस अवस्था में बालकों में कुछेक खास सामाजिक व्यवहारों की अधिकता देखने को मिलती है। ऐसे व्यवहारों में सहयोगिता (Cooperation)] प्रतिद्धनिद्धता (rivalry), उवारता [generority), सामाजिक अनुमोदन की इच्छा (desire for social approval), सहानुभूति(sympathy),निर्मरता(dependency),दोस्ती (friendliness), अनुकरण [imitation) इत्यादि प्रधान है। कुछ असामाजिक व्यवहार (associal behaviour) इस अवस्था के बालकों में देखने को मिलते हैं जैसे-आक्रमिकता(aggression),नाकारात्मकता(negativity),लढ़ाई-झगढ़ा (quarrelling), दूसरों को चिक्राना (teasing) तथा भयभीत करना (bullying) आदि प्रधान है।

(v) मानसिक विकास तथा संज्ञानात्मक विकास (Mental Development & Cognitive Developement)- प्रारमिभक बाल्यायस्या (early childhood) में बालकों में मानसिक विकास बहुत तेजी से होता है और पूर्र्वर्ती किशोरावख्वा (19-20 वर्ष) आते-आते इस विकास की गति काफी धीभी हो जाती है लगभग 4 वर्ष की उस होते-होते बालकों के कुल बुद्धि विकास का आधा विकास हो जाता है बालकों के मानसिक विकास का वक्र (curve) गकारात्मक रूप से त्वरित (negatively accelerated) होता है। इस वक्र का समर्थन थार्नडाइक (Thorndike) तथा गुडएनफ (Goodenough) ले अपने-अपने अध्ययनों से किया है। चुँकि इस अवस्था में बौद्धिक क्षमता बढ़ जाती है, इसलिए उनमें यातायरण की गतिविधियों एवं घटनाओं को समझने की शक्ति भी बढ़ जाती है। इस अवस्था में बालकों में सामान्यतः जीवन (life), मृत्यु (death), शारीरिक कार्य (bodily functions), भार (weight), संख्या (number), दूरी (distance), समय (time), यौन भूमिका (sex rules) आदि के बारे में एक संप्रत्यय (concept) विकसित करने की क्षमता विकसित हो जाती है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक पियाजे (1971) ने संप्रत्यय विकास (concept development) की इस अवस्था को प्राकृ परिचालन अवस्था (pre-operational stage) कहा है।

2. उत्तर बाल्यावस्था में विकास (Development in Late Childhood):-

उत्तर बाल्यावस्था में होनेवाले प्रमुख विकास निम्नलिखित हैं 🛏

(i) शारीरिक विकास (Physical Development)- उत्तर वाल्यावस्था में वालकों की ऊँचाई में औसतन 2 से 3 इंच तक की वार्षिक वृद्धि होती हैं। 11 साल की लड़की की ऊँचाई औसतन 58 इंच तथा उसी उस के लड़के की औसत ऊँचाई 57.5 इंच होती हैं। इस अवस्था में शरीर का वजन प्रति वर्ष औसतन 3 से 5 पीण्ड तक वक्ता है। वालकों की इस अवस्था में Muscle Tissue की अपेक्षा Fat Tissue का अधिक विकास होता है। इस अवस्था के समाप्त होते-होते बालकों में 32 स्थायी





ICEM





Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna











दांतों में से 28 स्थायी दाँत निकल आते हैं और वाकी 4 दाँत किशोरावस्या में निकलते हैं।

- (ii) भाषा विकास (Speech Developement)- इस अवस्था में बालकों में भाषा-विकास अधिक तीव्र गति से होता हैं और अब वे रोने-चिल्लाने जैसी कियाओं को कम महत्व देते हैं। इस अवस्था में बालकों में शब्दावली जिर्माण में दृद्धि, उच्चारण में स्पष्टता तथा जटिल वाक्यों का प्रयोग आदि गतिविधियाँ देखी जाती है। बालक रक्तल के शिक्षक तथा अन्य लोगों से वार्तालाप कर, पुस्तक पढ़कर, टेलिविजन देखकर अपनी शब्दावली में पर्याप्त वृद्धि कर लेते हैं। मनोवैज्ञालिक अध्ययनों से पता चला है कि इस अवस्था में वालकों में रंग-शब्दावली, जंदी शब्दावली, रुपये-पैसे संबंधी शब्दावली की प्रधानता होती है। उत्तर बाल्यावरथा में बालकों का संभाषण आत्मकेंद्रित न रहकर सामाजिक हो जाता है। अब वे अपनी रुचि के किसी भी विषय पर दूसरों से खुलकर बातचीत करने के लिए तैयार हो जाते हैं। अब उनके संभाषण अधिक नियंत्रित एवं तव्यपूर्ण दिखने लगते है। मनोरीझानिक अध्ययनों से निष्कर्ष निकला है कि इस अवस्था में लड़कियाँ लड़कों की तुलना में अधिक बातचीत करने वाली होती है।
- (iii) सांवेजिक विकास (Emotional Development)- उत्तर बाल्यायख्या के बालकों का संवेजात्मक पैटर्न (pattern) हो जाता है और अब वे समझने लजते हैं कि बात-बात में नाराज होना, तुरब्त रो देना, डरकर भाग जाना ये राब क्रियाएँ बचकाना सांवेगिक अनुक्रिया (bodyish emotional response) हैं। इस अवस्था के बालकों में वैसे तो पूर्व बाल्यावस्था वाले ही संवेग पाये जाते हैं, किन्तु उन संवेगों की अभिव्यक्ति का ढंग वदल जाता है। अपने अनुभवों के आधार पर वे सामाजिक रूप से बहिष्कृत संवेगों की अभिव्यक्ति नहीं करते क्योंकि वे जानते हैं कि ऐसा करने से उन्हें सामाजिक अन्मोवन प्राप्त नहीं हो सकेगा। इतना ही नहीं, उत्तर बाल्यावरथा में संवेग उत्पन्न करनेवाली परिरिधतियाँ भी भिन्न हो जाती है। इस अवस्था में वालकों में क्रोध तभी उत्पन्न होता है जब कोई व्यक्ति उन पर अवांछनीय टीका-टिप्पणी करता है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था में किसी भी नयी चीज को देखकर बालकों में उत्सुकता पैदा हो जाती है, परन्तु उत्तर बाल्यावस्था में बालकों में उन्हीं चीजों को देखने पर उत्सुकता पैवा होती है जो उनके लिए महत्वपूर्ण होती है। इस अवस्था के समाप्त होने तक जब बालकों में बौन चंबी (sex gland) अपना कार्य शुरू करती है, तो उस अवधि में बालकों में संवेग का स्तर बहुत ही तीव्र होता है।
- (iv) सामाजिक विकास (Social Development)— उत्तर वाल्यावस्था को टोली अयस्था भी कहा जाता है क्योंकि हम इस अयस्था में बालकों को अपने साबियों की टोली में अधिक आगन्द आता है। इस टोली में रहकर बालक सामाजिक विवर्मों को सीखता है और उसका समाजीकरण होता है। इस अवस्था में बालकों द्वारा सीखे जाने वाले प्रमुख सामाजिक व्यवहार अग्रलिखित हैं– सामाजिक अनुमोदन (Social)

1.5

ICEM

ICEM





Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

insight), सामाजिक विभेव (Social discrimination), पूर्व धारणा (prejudice), यौन प्रतिरोध (Sex antagonism) इत्यादि। कभी-कभी टोली की सदस्यता का समाजीकरण के दृष्टिकोण से प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ता है, जैसे यह अक्सर देखा जाता है कि टोली की सदस्यता को लेकर बालक अपने माता-पिता के साथ बगावत कर बैठते हैं और उनके द्वारा निर्धारित मूल्पों (values) एवं मानकों (standards) को अस्वीकृत कर देते हैं।

(v) मानसिक एवं संज्ञानात्मक विकास (Mental & Cognitive Development)-उत्तर बाल्यावरथा में बालकों की सुझ–बूझ (understanding), अभिरुचि (Interest) आदि विस्तृत हो जाती है। फलतः पूर्वं बाल्यावख्या की तुलना में अधिक विकसित हो जाते हैं। 10-12 साल की उस तक बालकों में 90% विकास पूरा हो जाता है। इस अवस्था में बालक विद्यालय में जो कुछ भी सीखते हैं, उसके आधार पर वे पुराने संप्रत्यय (old concept) में नया अर्थ जोड़ना शुरू कर देते हैं। रेडियो, टेलीविजन, चलचित्र आदि से उन्हें जो भी अनुभय होता है, उसके आलोक में वे नए अर्च निकालने लगते है। इस अवस्या में वे जीवन, मृत्यु, मृत्यु के बाव के जीवन (life after death)] समय, यौन भूमिका (Sex roles)] सामाजिक भूमिका (social roles)] सुन्दरता (Beauty) आदि के प्रति एक विकसित कर लेते हैं। पियाजे के अनुसार, इस संप्रत्यय (concept) अवस्था में बालक चिन्तन के मूर्त परिचालन की अवस्था (Stage of concrete operation) में होता है जहाँ उससे पहले सीखे जये संग्रत्यय, जो प्रायः अस्पष्ट होते हैं, को मजबूत स्पष्ट और मूर्त (concrete) बनाया जाता है।

बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास (Emotional Development during childhood)

संदेग या भाषनाएँ मनुष्य का एक अभिन्न अंग है। बिला भाषनाओं के मनुष्य एक जीवित मधीन से ज्यादा भिन्न नहीं होगा। परन्तु यह संवेग जन्म से पहले से मनुष्यों में मौजूद नहीं होते, यह हमारे सामाजिक अनुभवों से उत्पन्न होते हैं। इसलिए संवेगात्मक विकास को सामाजिक विकास से अलग करके नहीं देखा जा सकता। समाजीकरण की प्रक्रिया में न केवल संवेगों का विकास होता है, अपितु हम इन पर नियन्त्रण रखना व इनकी अभिव्यक्ति के लियम भी सीखते हैं। हर समाज व संस्कृति में यह नियम भिन्न होते हैं इसलिए हर संस्कृति में संवेगात्मक विकास का क्रम भिन्न होता है। साथ ही संवेगात्मक विकास की प्रक्रिया का कोई निर्धारित क्रम नहीं होता परन्तु इसके कुछ कारक अवश्य होते हैं जो मनुष्यों के संवेगात्मक विकास को प्रभावित करते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में समय-समय पर भय, क्रोध, प्रेम, ईर्ष्या, जिल्लासा, चिन्ला, दुःख, शर्म, स्नेह, सहयोग, वासना आदि भावों का अनुभव





ICEM

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in ICEM







Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

MCEN

करता है। इन्हें संयेग कहते हैं। मनुष्टों को संयेगों के द्वारा विभिन्न कार्यों को करने की प्रेरणा शक्ति मिलती है। संयेगों के उदय होने पर व्यक्ति में अतिरिक्त शक्ति का संचार होता है। भय की स्थिति में व्यक्ति कभी-कभी ऊँचे-नीचे जहों तथा नालों को लॉघ जाता है। क्रोध की स्थिति में कभी-कभी व्यक्ति अपने से शक्तिशाली व्यक्ति को परास्त कर देता है। संयेगों का सम्यन्ध व्यक्ति के जीवन के भावात्मक पक्ष से होता है। सुखद वस्तु को देखकर प्रसन्न होना, इरावनी वस्तु को देखकर डर जाना, इच्छा के विपरीत कार्य होने पर क्रोपित होना, खराब वस्तु को देखकर घूणा करना तथा दूसरों को अभाषग्रस्त देखकर दया आना आदि संवेगात्मक स्थिति के कुछ उदाहरण है।

संदेशों के उदय होने पर व्यक्ति की मानसिक तवा शारीरिक स्विति में परिवर्तन आ जाता है। संवेशात्मक स्थिति में बुद्धि व विवेक का व्यक्ति के व्यवहार पर अंकुश नहीं रह जाता है तथा उसे उचित-अनुचित का ल्लान नहीं हो पाता है। एक ओर जहाँ संवेशों की सहायता से व्यक्ति साहसिक तथा प्रशंसनीय कार्य करता है, वही दूसरी ओर संवेशों के वशीभूत होकर कभी-कभी वह पशुपत निंदनीय व्यवहार कर जाता है।

संवेग का शाब्दिक अर्थ

संवेग वास्तव में व्यक्ति के आक्तरिक भावों की अचानक तीव्र होने तथा विवेक प्रक्रिया के नियन्त्रण से मुक्त व्यवहार के परिलक्षित होने की रिथति को कहते हैं।

संवेग शब्द का शाब्दिक अर्थ-वेग से युक्त अर्थात जब व्यक्ति वेगवान होकर कार्य करता है तो उसे संवेग कहते हैं। अँग्रेजी भाषा में संवेग को इमोशन (Emotion) कहते हैं। E का अर्थ है अन्दर से तथा Motion का अर्थ है गति, अर्थात आन्तरिक भाषों को बाहर की ओर गति देना।

मैकडूगल ने कुल चौदह संवेगों का उल्लेख किया है। वहीं भारतीय विद्वान राग तथा द्वेष नामक दो संवेग का उल्लेख करते हैं।

- रागात्मक संयेग (Positive Emotions) सम्मान, भक्ति, अन्द्रा, मित्रता, प्रेम, आसाक्ति, स्गेह, वात्सल्य, दया।
- द्वेषात्मक संवेग (Negative Emotions) भय, कायरता, घृणा, क्रोध, ईर्ष्या, जलन, गर्व, अभिमान, अधिकार।

बालकों के संवेगों की विशेषताएँ (Characteristics of Children's Emotions) -







EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in Shaping Education







Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



प्रकृति भाषात्मक होती है जो व्यक्ति की क्षणिक उत्तेजना प्रदान करते हैं संवेगों को व्यक्ति की मुख-मुद्रा, वाणी तथा अव्य व्यवहार के अवलोकन से पहचाना जा सकता है। संयेगों की निम्न लिखित विशेषतायें होती है।

- (1)बालकों के संवेग क्षणिक होते हैं। बालक में कोई भी संवेग क्यों न उत्पन्न हुआ हो, वह अधिक वेर नहीं रहता है। वेखा गया है कि क्रोधित बालक तुरब्त मुरुकुराने लगता है ऐसा इसलिए होता है कि बालकों का स्मृति-विस्तार और ध्यान का विस्तार कम होता है इसलिए भी उनमें उपरियत संवेग शीघ परिवर्तित हो जाते हैं।
- (2)बालकों में संवेग जल्दी-जल्दी उत्पन्न होते हैं ये परिवर्तन दो प्रकार के
 - (ii)बाहय
 - बालक जल्दी-जल्दी भय, क्रोध, प्रेम प्रणा, ईष्या, हर्ष आदि को व्यवहार
- (3)बालकों के संवेगों की तीव्रता अधिक होता है सम्भवतः उनका संवेगों पर अधिक नियन्त्रण न होने के कारण ऐसा होता है। बालक की आयु जैसे-जैसे बबती जाती है वैसे-वैसे वह समझने लग जाता है कि उसके संवेगों की यह तीवता प्रशंसनीय नहीं है। लोग इसका मजाक उडाते है। अतः उसकी इस प्रकार की समझ बढ़ने के साथ-साथ उसके संवेजों की तीव्रता कम होती जाती है।
- (4)बालकों की संवेगात्मक अनुक्रियाओं से वैयक्तिकता परवर्तित होती है। नवजात शिश्चओं की संवेगात्मक अनुक्रियाएं समान होती हैं। उनमें अधिक अन्तर नहीं पाया जाता है। परन्तु शिशुओं की आयु बढ्ने के साथ-साथ उनके अनुभव और मानसिक योग्यताओं में वृद्धि होती है। इस वृद्धि के कारण बालकों की संवेजात्मक अनुक्रियाओं में यैयक्तिकता आती जाती है। वैवक्तिकता के कारण ही एक बालक डर के कारण भागना, स्तथ्ध खड़ा रहना या माँ के आँचल मे छिप जाने का प्रयास
- (5)बालकों के संवेगों की शक्ति में परिवर्तन होता है अध्ययनों में यह देखा गया है कि बालक की आयु बढ़ने के साय-साथ उसमें कुछ संवेगों की शक्ति घट जाती है और कुछ संवेगों के शक्ति बढ़ जाती है। कुछ संवेग जो अधिक शक्तिशाली होते हैं उनकी शक्ति कम हो जाती है और जिन संवेगों की शक्ति कम होती है या जो क्षीण होते हैं उनकी शक्ति आयु बढ़ने के साथ-साथ कुछ बढ़ जाती है।
- (6)बालकों के संदेगों की अभिव्यक्ति का प्रकाशन शीघ्र ही उनके मुखमण्डल से व्यक्त होने लगता है। बहुधा यह देखा गया है कि







Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

MCEN

बालक सामाजिक यातायरण पर विमाध्यान दिए अयसर बहुत जोर से क्रोध व्यक्त करते हैं, हर्ष या घूणा व्यक्त करते हैं। बालकों के संदेगों का पता उनके व्यवहार लक्षणों से सरलता से लगाया जा सकता है। बालकों की बेचैनी, रोना-चिल्लाना, नाखून काटना, भाषा अभिव्यक्ति में अख्यायी दोषों से बालकों की संवेगात्मकता का पता चल जाता है।

(7)बालकों के संवेगात्मक व्यवहार के निरीक्षण से स्पष्ट होता है कि बालकों के व्यवहार में कुछ विशिष्ट प्रकार के लक्षण पाये जाते हैं जैसे-बीखना, चिल्लाना, दाँत कटकटाना, हाय-पैर पटकना आदि।

बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास Emotional Development during childhood—

रांवेगात्मक विकास की दूषिट से बाल्यावस्था एक अनोसी अवस्था है बाल्यावस्था में संवेगों की अभिव्यक्ति में सामाजिकता का भाव आने लगता है तथा बालकों में संवेग की अभिव्यक्ति पर नियन्त्रण करने लगते हैं इस अवस्था में संवेगों की उज़ता कम होने लगती है। बाल्यायस्था में होने वाले संवेगात्मक परिवर्तनों की कुछ प्रमुख विशेषतायें निम्नवत होती है।

- (1) संवेगों की उग्रता में इस्स (Lack of Intensity of Emotions) बाल्यावरथा में संवेगों की उग्रता में कमी आ जाती है। समाजीकरण के प्रारम्भ होने के फलरवरूप बालक संवेगों का दमन करने का प्रयास करता है। और संवेगों को शिष्टाचार पूर्ण ढंग से अभिव्यक्त करता है। माता-पिता, अध्यापक तथा अन्य बड़े व्यक्तियों के समक्ष वह ऐसे संवेगों को प्रकट नहीं करता है, जिन्हें अवांछनीय समझा जाता है।
- (2)ईंष्यॉ (Jealousy) बाल्यावस्था में बालक-बालिकाओं में किसी न किसी कारण से ईर्ष्या व द्वेष की भावला विकसित हो जाती है। बालक प्रायः ईर्ष्या तब करता है, जब उसका कोई अधिकार छिन जाता है अथवा वह अन्यों को अपने से अच्छी स्थिति में पाता है।
- (3)भव (Fear) बाल्यावरथा में बालक में भय का रांचेज होता है। इस अवस्था में भय का संबंध प्रायः भावी कार्यों से होता है। बाल्यावरथा में बच्चों के अंदर परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त न करने का भय, गृहकार्य न करने पर स्कूल में दंड मिलने का भय तथा कक्षा में प्रश्न का उत्तर न दे पाने के कारण अध्यापक द्वारा डांट का भय होता है।
- (4) जिराशा (Frustration) वाल्यावस्था में वालक निराशा की भावना से पीड़ित होता हैं। परिवार, समाज तथा विद्यालय के द्वारा बनाए गए अनुशासन संबन्धी निवम बालकों की इच्छापूर्ति में वाधक होते हैं। इच्छाओं की पूर्ति न हो पाने के कारण बालकों में निराशा के भाव उत्पन्न होते हैं।

19



ICEM





Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

- (5)क्नोध (Anger) क्रोध का मुख्य कारण हताशा हैं। इच्छापूर्ति में बाधा पड़ने पर अथवा कार्यों की अनावश्यक आलोचना करने पर बालक को क्रोध आता है। बाल्यावस्था में क्रोध का संवेग प्रबल हो जाता है बालक औन होकर, उदास होकर, अथवा भाई–बहन या सावियों से इज़ाड़ा करके अथवा वस्तुओं को उदा–पटक करके अपने क्रोध को प्रकट करता है।
- (6)प्रण्ठुल्लता (Joy) प्रण्ठुल्लता एक आनन्ददायक अभिव्यक्ति होती है। जब कोई सुस्राद अथवा आनन्ददायक परिस्थिति उत्पन्न होती है तब बालक प्रणुल्लता के वेन का अनुभव करता है। अच्छे प्राप्तांक, रूचिकर खाद्य पदार्थों अथवा वांछित खेल सामायी बालक की प्रणुल्लता का कारण हो सकती है।
- (7)रजेह (Attection) प्रफुल्लता के समान रजेह भी एक सुखद संदेज हैं। बालक अपनी रजेह भावना की अभिव्यक्ति उन व्यक्तियों अथवा वरतुओं के प्रति करता है जिनके साथ वह रहना चाहता है वा जिनकी वह सहायता करना चाहता है। जिन वरतुओं तथा व्यक्तियों के सम्पर्क में उसे सुख मिलता है, उनके प्रति वह अपना रजेह दर्शाता है।
- (8)शर्मीलापन (Shyness) शर्म एक प्रकार का भय है जिसमें व्यक्ति दूसरों के सम्पर्क में आने और परिचय प्राप्त करने में झिझकता या कतराता है। बहुपा बच्चे उन बच्चों या व्यक्तियों से शर्म करते हैं जो उनके लिए अपरिधित होते हैं। यह संवेग बालकों के सामाजिक सम्बन्धों को भी दुर्बल बनाता है। बालकों में शर्म की अभिव्यक्ति येसे-वैसे कम होती जाती है जैसे-जैसे वे अधिक और अधिक व्यक्तियों के सम्पर्क में आते जाते है उनकी शर्म की आवृत्ति और तीव्रता, दोनों ही कम होती जाती है।
- (9)चिन्नला (Anxiety) चिन्ला व्यक्ति की एक कष्टप्रद मानसिक स्थिति है जिसमें यह भविष्य की विपत्तियों की आशंकाओं से व्याकुल रहता है। चिन्ला बालकों में उस आयु में प्रारम्भ होती है जब यह स्कूल जाना प्रारम्भ करते है। इसका विकास बाल्यावस्था में होता रहता है।

मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि जन्म से ही संवेगात्मक विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है और किशोरावरथा के अन्त तक इस पक्ष में विकास व बदलाव महसूस किए जा सकते हैं प्रारम्भ में इस प्रक्रिया की गति तीव्र होती है जो 10-11 वर्ष की आयु से धीमी पड़ने लगती हैं। परन्तु यह कहना गलत नहीं होगा कि संवेगात्मक पक्ष में हर उन्न में बदलाव आते हैं भले ही वह जीवन का कोई भी चरण क्यों न हो।

संवेगातमक विकास को प्रभावित करने वाले कारक एवं संस्थान –



20







Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

- (1)शारीरिक स्वास्थ्य थालकों के स्वास्थ्य का प्रत्यक्ष सम्बन्ध उनकी संवेगात्मका से है। स्वस्थ्य व्यक्ति की अपेक्षा बीमार, रोगवास्त अथवा शारीरिक दृष्टि से कमजोर व्यक्तियों में ऋणात्मक संवेगात्मक अस्विरता अधिक होती है।
- (2)परिवार बच्चों का पहला सामाजिक अनुभव परिवार के साथ होता है और यह अनुभव मूल रूप से संवेगात्मक विकास की दिशा निर्धारित कर देता है। परिवार में बच्चे आत्मविश्वास, सुरक्षा, सबके लिए प्रेम का भाव, समता का भाव, लोकतल्प्र का भाव, दुःख व खुशी व्यक्त करने के तरीके आदि का विकास करते हैं। इसके साथ ही परिवार बच्चों का परिचय धर्म से कराता है जो अपने आप में संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाला एक संस्थान है।
- (3)विद्यालय व समकक्ष बच्चों के संवेगातनक विकास में इस दोनों संख्यानों की भी महत्यपूर्ण भूमिका है। परिवार से कुछ देर के लिए दूर रहने का अनुभव बच्चों को आत्मनिर्भरता की ओर ले जाता है, भले ही शुरुआत में यह बच्चों के लिए बच्दवायक क्यों न हो। घर से दूर बच्चे अपने दोस्त चुनते हैं और उनसे जोड़कर स्वयं को देखते है। घीजें बाँटना, झगड़े सुलझाना, लठना-मनाना, मिल जुलकर खेलना आदि जैसे व्यवहार, जो संवेगातनक विकास में अहम है, बच्चे अपने समकक्षों के साथ अनुभव में सीखते हैं। ईच्या, द्वेष, गुरुसा, एकजुटता की भावना, उत्साह व हर्ष जैसी भावनाएँ समकक्षों के साथ अनुभव में उत्पन्न होती है।
- (4) सामाजिक स्वीकृति बालक के द्वारा किये गये कार्यों के फलस्यरूप प्राप्त सामाजिक स्वीकृति भी उसके संवेगात्मक विकास को प्रभावित करती है। बालक अपने कार्यों की दूसरों के द्वारा प्रशंसा चाहता है। जब उसकी अभिलाषा पूर्ण नहीं होती है तब उसमें संवेगात्मक तनाय उत्पन्न हो जाता है। वास्तव में वालक को अपने कार्यों की सामाजिक स्वीकृति नहीं मिलती है तो उसका संवेगात्मक व्यवहार या तो शिथिल हो जाता है अथवा उब।
- (5)अभिभाषकों का दूष्टिकोण बालकों के प्रति गाता-पिता का दूष्टिकोण तथा व्यवहार भी बालकों के रांवेजात्मक व्यवहार को प्रभावित करता है। बच्चों की उपेक्षा करना, घर से अधिक समय बाहर रहना, बच्चों के संबंध में अत्यधिक चिंतित रहना, बच्चों को अत्यधिक संरक्षण देना, बच्चों को बालसुलभ अनुभवों से बंधित रखना, बच्चों को अत्यधिक लाइप्यार करना जैसे व्यवहार बच्चों में अवांछनीय संवेजात्मक व्यवहार विकसित कर देते हैं।
- (6) जुद्धि (intelligence) बुद्धि की सहायता से बच्चे संवेगात्मक परिस्थितियों का प्रत्यक्षीकरण करते हैं तथा अपनी संवेगात्मक









21





Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

अभिव्यक्ति के सम्बन्ध में निर्णय लेते हैं। अधिक बुद्धि याले बालक, कम बुद्धि वाले बालकों की अपेक्षा अपने संवेगों की अभिव्यक्ति समाज द्वारा मान्य तरीकों से करना जल्दी सीख लेते है।

(7)लिंग – बालक और बालिकाओं के संवेगों में अन्तर पाया जाता है। बालकों में भय का संवेग बालिकाओं की उपेक्षा कम मात्रा में होता है। इसी प्रकार बालिकाएँ, बालकों की अपेक्षा अधिक ईष्यालु होती है।

संवेग व्यक्ति के आवेश को प्रवर्शित करते हैं। भय, क्रोध, घूणा, यात्सल्य, करुणा आश्चर्य कुछ प्रमुख संवेग है। संवेगों का मानव जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। बनात्मक संवेग व्यक्ति के व्यवहार को परिपूर्ण बनाते है। संवेग की स्थिति मे विचार प्रक्रिया में शिथिलता आ जाती है। संवेग मूल प्रवृत्तियों से सम्बन्धित होते है। शैशवावस्था में संवेगात्मक व्यवहार प्रायः अस्थिर होता है जो बाल्यावस्था में स्थिरता की ओर अग्रसर होने लगता है। शिक्षा के द्वारा संवेगों का परिमार्जन किया जा सकता है। अध्यापकरण तथा अभिभावकरण बालक-बालिकाओं के संवेगात्मक विकास को सही दिशा दे सकते हैं।

मेकदूगल ने मूल प्रवृत्तियों को ही संवेगों का जन्मदाता माना है। उसने 14 मूल प्रवृत्तियों और उससे सम्बन्धित संवेगों की चर्चा की जो निम्नलिखित है:-

क्रमांक	मूलप्रवृत्ति	सम्बन्धित संवेग
1	पलायन या भागना	भव
2	युयुत्सा, युद्ध प्रियता	क्रोध
3	गिवृत्ति	घूणा
4	जिज्ञासा	आश्चर्य
5	शिशु रक्षा	वात्सल्य, रनेह
6	शरणागति	(विषाद) करुणा
7	रचनात्मकला	संरचनात्मक भावना
8	संचय प्रवृत्ति	खामित्व की आवना
9	समूहिकरण	एकाकीपन
10	काम	कामुकता
11	11 आरम गौरव श्रेष	
12	देव्य	आत्महीनता
13	भोजनान्देषण	भूखा
14	हमस	आमोव







EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

22







Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

बाल्यावस्या में सामाजिक विकास

ICEM

सामाजिक विकास से तात्पर्य स्वयं को समाज के एक हिस्से की तरह समझने, लोगों से सामाजिक संबंध स्थापित करने, सामाजिक व्यवहार में कुशलता हासिल करने व स्वयं को अपने परिवेश में हालकर समाज में अपना स्थान बनाने की प्रक्रिया से जोड़कर देखा जा सकता है।

बाल्यावस्था में शैशवावस्था की अपेक्षा सामाजिक विकास की जति तीव होती है। इस अवस्था में बालक अपने समाज, समाज में उपस्थित लोगों, परिवार के सवस्यों , विद्यालय आदि के सम्पर्क से व उनसे अंतः क्रिया करते हुए, सामाजिक समझ का विकास करता है। इस अवस्था में बालक किसी व किसी समूह का सदस्य बनना चाहता है, इसलिए इस अवस्था को मनोवैज्ञानिक टोली या समूह की आयू भी कहते हैं। इस सामूहिक जीवन से जहां उसमें आत्म-विश्वास, साहस, न्याय, बुद्धि, ईमानवारी, सहनशीलता, धैर्य, सहयोग, दूसरे के प्रति सदभावना और नेता के प्रति भक्ति आदि अच्छी आदतें विकसित होती है वहीं उनमें जाली देना, जंदी वातें करना, अनुशासनहीनला दिखाना, अनुचिल आचरण करना, जन्दे मज़ाक करना, परिवार की मान्यताओं को छोडकर समूह के सिद्धान्तों को अपनाना आदि बुरी आदतें भी पैदा हो जाती है। 6 से 10 वर्ष तक बालक अपने वांछनीय या अवांछनीय व्यवहार में निरन्तर प्रगति करता रहता है वह प्रायः उन कार्यों को करता है जिसके किए जाने का कोई उचित कारण नहीं जान पड़ता है। धीरे-धीरे बच्चे कैसा व्यवहार करना चाहिए,इसकी समझ बनाने में मदद करता है।

सामाजिक विकास के अवस्थाएं -

सामाजिक विकास की प्रक्रिया जन्म से ही प्रारम्भ हो जाती है और निरन्तर चलती रहती है। बचपन की प्रारम्भिक सामाजिक अनुभूतियों का बच्चे के व्यक्तित्व पर काफी प्रभाव पड़ता है।लामाजिक विकास की अवस्थाएं निम्नलिखित है।

1. प्रारम्भिक बाल्यावस्था में सामाजिक विकास -

यह अवस्था 2 से 6 वर्ष तक चलती है। इस उस में बालक घर के बाहर के लोगों व अग्य वालकों से सम्पर्क करना सीखता है। इस अवस्था में वे अन्य बालकों के साथ समायोजन करते हुए, विभिन्न खेलों के माध्यम से अपना सामाजिक सम्पर्क बढ़ाते हैं। प्राथमिक बाल्यायस्था में सबसे महत्वपूर्ण व्यवहार जो बच्चे प्रदर्शित करते हैं वह है परानुभूति। (Empathy) इस आद में बालक आँगनवाडी केन्द्र में जाकर भी सामाजिक विकास करते हैं।

2. उत्तर बाल्यावस्था में सामाजिक विकास -











Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

MCEN

यह अवस्था 6 वर्ष से 12 वर्ष तक रहती है। पूर्व वाल्यायस्था में बालक के भीतर जिन सामाजिक गुणों की शुरुआत होती है, उत्तर बाल्यावस्था में पहुंचकर बालक में अधिकांशतः उन्हीं गुणों का विकास होता है जैसे – सामुवायिकता, समूह में कार्य करना सीखना, मिन्नता, सहयोग, खेल, सहिष्णुता, सहानुभूति आदि। पूर्व बाल्यावस्था के उपरान्त यह एक ऐसी अवस्था है, जहाँ बालक विद्यायल जाना आरम्भ करता है और इसी के साथ उसका सामाजिक दायरा बढ़ता जाता है। पूर्व बाल्यावस्था से उत्तर बाल्यावस्था में प्रवेश करते समय बच्चा भर्में की आस्मिता से बाहर आता है और खुव को एक समाज का हिस्सा समझना आरम्भ करता है।

इस अवस्था में बच्चे नए समूह का हिस्सा बनते हैं जिसका सीधा असर उसके व्यवहार पर विखता है। नए समूह से जुडने की प्रक्रिया से बच्चों के व्यवहार में सकारात्मक व नकारात्मक बदलाव आते हैं। बच्चे मैं से हम सब की समझ विकसित करते हैं। अपनी उस के बच्चों के साथ ज्यावा अंतःक्रिया करने लगते हैं। उनका समूह बढ़ता है, जिनके साथ ये अनेक प्रकार के खेल खेलते हैं। इस प्रकार उनमें नियम के साथ खेलना, सहयोग आदि की भावना जागुत होती हैं।

पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत

संज्ञान से तात्पर्य_एक ऐसी प्रक्रिया से होता है जिसमें संवेदन ,प्रत्यक्षण,प्रतिमा ,धारणा ,प्रत्याहन ,समस्या -समाधान चिंतन ,तर्कना जैसी मानसिक प्रक्रियाओं को सम्मिलित होती है। संज्ञानात्मक विकास से तात्पर्य बालकों में किसी संबेदी सूचनाओं को ग्रहण करके उस पर चिंतन करने तथा क्रमिक रूप से उसे इस लायक बना देने से होता है। जिसका प्रयोग बिभिन्न परिस्थितियों में करके बे तरह तरह की समस्याओं का समाधान आसानी से कर सकते हैं।पियाजे बुद्धि को व्यक्ति के जीवन हेतु एक निश्चित विशेषक (trait) नहीं मानता है अपितु वह बुद्धि को वातावरण के साथ अनुकूलन होने की एक प्रक्रिया मानता हैं। व्यक्ति का वातावरण व्यक्ति के लिए विभिन्न आवश्यकताओं का निर्माण करता हैं। व्यक्ति इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वातावरण से ही कुवह आत्मसात करता हैं और आत्मसातीकरण के फलस्वरूप उसकी वर्तमान संज्ञानात्मक संरचना में परिवर्तन हो जाता हैं। इस नवीन परिवर्तन को समायोजन कहते हैं।

पियाजे के मतानुसार ज्ञान का विकास एक प्रकार का अनुकलन (adaptation)है जिसमें दो प्रकार की प्रक्रियाएँ-आत्मसातीकरण(assimilation) और समंजन (accommodation) सन्निहित हैं ।अनुकूलन बालकों में वातावरण के साथ समायोजन करने की एक जन्मजात प्रवृत्ति होती है जिसे अनुकूलन कहा जाता हैं । आत्मसातीकरण बालक समस्या समाधान के लिए या वास्तविकता से समायोजन करने के लिए पूर्व में सीखी गयी योजनाओं या मानसिक प्रक्रियाओं का सहारा लेता हैं । समंजन जब बालक अपनी योजना ,संप्रत्यय (concept) या व्यवहार में परिवर्तन लता हैं ताकि वह

24



CEM





Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



नए बातावरण के साथ अनुकूलन कए सके । स्कीमा (schemas) बुद्धि से युक्त क्रियाओं की बुनियादी और बार - बार दुहराई जा सकने वाली इकाइयों को पियाजे ने स्कीमा कहा हैं । साम्यधारणा (equilibration) एक ऐसी परकीय हैं जिसके द्वारा बालक आत्मसातकरण तथा समंजन की प्रक्रिया के बीच एक संतुलन कायम करता है।





पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के अवस्थाएँ

जीन पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास की मुख्य चार अवस्थाओं का वर्णन किया हैं -

- 1. संवेदी -पेशीय अवस्था (sensory motor stage)
- 2. पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (pre operational stage

A ॰ पूर्व संप्रत्ययात्मक विचार की अवस्था (pre -conceptual

thought stage)

B •अंत : प्रज्ञात्मक विचार की अवस्था (intuitive thought



- stage)
- 3. मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (concrete operational stage)
- 4. औपचारिक मंक्रिया की अवस्था (formal operation stage)

संवेदी पेशीय अवस्था (sensory motor stage)- यह अवस्था जन्म से दो वर्ष तक मानी जाती हैं।इस अवस्था को संवेदी पेशीय अवस्था इसलिए कहा हैं, क्योकि इस आयु प्रसार में बच्चें भौतिक बातावरण के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपनी संवेदनाओं तथा शारीरिक क्रियाओं कि प्रत्यक्ष सहायता लेते हैं। जन्म के बाद बच्चों में केवल सहज क्रियाएँ ही पायी जाती हैं जैसे - स्पर्श करने पर आँखों का बंद कर लेना। इस अवस्था का अति महत्वपूर्ण कार्य विकास वस्तु का स्थायित्व की उपलब्धि हैं। जिसके कारण वस्तु को ना देखने, छूने और संवेदना ना होने पर भी वह उसका अनुभव करता है।











Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



2. पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (Pre - Operational Stage) - यह अवस्था 2 साल से 7 साल की होती हैं। यह वह अवस्था होती है जो प्रारम्भिक बाल्यावस्था(Early Childhood) की होती हैं। यह अवस्था पूर्व संक्रियात्मक एसलिए कहलाती है क्योंकि बच्चों में मानसिक रूपान्तरण (mental transformation) की अयोग्यता पायी जाती हैं जिसे पियाजे ने संक्रियाएँ कहा हैं। इस अवस्था को पियाजे ने दो भागों में बाँटा है-

A . पूर्व संप्रत्ययात्मक विचार की अवस्था (Pre conceptual thought stage) -यह अवधि 2 साल से 4 साल की होती है। इस अवस्था में बालक सुचकता (signifiers) विकसित कर लेते है । सूचकता से तात्पर्य इस बात से होता है कि बालक यह समझने लगता है कि बस्तु , शब्द ,प्रतिमा तथा चिंतन किसी चीज के लिए किया जाता है। पियाजे ने दो प्रकार कि सुचकता पर वल दिया - संकेत तथा चिन्छ। किसी ठोस वस्तु के लिए मानसिक चिंतन (mental representation) का दूसरा नाम संकेत हैं। संकेत तथा ठोस वस्त में अधिक सादश्यता होती है ।जैसे - जब बालक अपनी माँ कि आबाज़ को सुनता है तब उसके मन में माँ कि एक प्रतिमा बनती हैं जो कि संकेत है। चिन्ह में वस्तुओं का मानसिक चिंतन (mental representation) करते है इसमें सादृश्यता कि कमी होती है चिन्ह में बस्तुओं या घटनाओं का एक अमूर्त चिंतन होता है । इस अवस्था की प्रमुख्य विशेषता **अंहकेंद्रवाद** है अर्थात बालक दुनिया को केवल अपने दुष्टिकोण से देखते हैं और दुसरों के दुष्टिकोण के महत्व को समझने में सक्षम नहीं होते हैं । अंहकेंद्रवाद के कारण वालक में **जीववाद** की भावना होती है । इस अवस्था में तर्क शक्ति पारक्रमण (transductive) होती है अर्थात जो एक विशिष्ट घटना से दूसरी विशिष्ट घटना की ओर बढ़ने की मध्य स्थिति हैं । पारक्रमण की अवस्था में शिश अपने तर्क में निश्चित नहीं होता हैं अनिश्चय की स्थिति में वह यह तय नहीं कर पता है की भिन्न समय और भिन्न स्थानों पर प्रकट होने वाली वस्तएँ वही हैं अथवा दूसरी । इस अवस्था में शिश वस्तुओं के विभिन्न आयामों को अलग अलग करके नहीं समझ पता है जैसे - लाल कलम । बालकों में परिरक्षण अथवा संरक्षण (conservation) का संप्रत्यय नहीं विकसित होता हैं । अर्थात बस्तुओं की आकृति तथा आकार में परिवर्तन हो जाने पार भी मात्रा में परिवर्तन नहीं होता हैं।

B • अंत : प्रज्ञात्मक विचार की अवस्था (intuitive thought stage) - इसकी अवधि 4 साल से 7 साल की होती है। चिंतन एवं तर्कणा (reasoning) पहले से अधिक परिपक्व हो जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप वह साधारण मानसिक प्रक्रियाएँ जो जोड़, घटाव, गुणा तथा भाग आदि में सम्मिलित होती हैं। परंतु इन मानसिक प्रक्रियाओं के पीछे छिपे नियमों को बह नहीं समझ पता हैं। इस





EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in ICEM









Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



उम्र के बालकों के चिंतन में **पलटाबी गुण या प्रतिवर्त गुण** नहीं होता है जैसे - 2+2 = 4 यह तो समझते है किन्तु 4/2 = 2 कैसे हुआ यह नहीं समझ पाते है । इस अवस्था मैं बालक में **केन्द्रीकरण या संरक्षण** का संप्रत्यय बिकसित हो जाता हैं ।

ठोस संक्रियात्मक अवस्था (concrete operational stage) - <u></u>यह अवस्था 7 साल म<u>े 11 साल</u> तक चलती है जो मूर्त संक्रियात्मक विचार की अवस्था हैं जो वे मानसिक क्रियाएँ बच्चे को पूर्व में शारीरिक रूप से किए गए कार्यों को मानसिक रूप से करने की सुविधा प्रदान करते है जिसे प्रतिक्रमणीय मानसिक क्रियाएँ कहते हैं अर्थांत इस अवस्था में बालक ठोस वस्तुओं के आधार पर आसानी से मानसिक संक्रियाएँ करके समस्या समाधान कर लेते हैं। ठोस वस्तु को न देकर केवल शाब्दिक कथन तैयार कर समस्या उपस्थित कर दिया जाय तो वह समस्याओं पर मानसिक संक्रियाएँ कर कोई निष्कर्थ पर पहुँचने में असमर्थ रहते है। इस अवस्था में बालकों में तीन संप्रत्यय विकसित हो जाते हैं - संरक्षण (conservation) संबंध तथा वर्गीकरण । इस अवस्था में बालकों में बस्तुओं के गुण के अनुसार उसे किसी एक वर्ग या उपवर्ग में छाँटने की क्षमता भी विकसित हो जाती हैं जैसे - गौरैवा -चिड़िया - जीव का पदानुक्रम । चिंतन अधिक लचीला हो जाता है और समस्या समाधान करते समय बच्चे विकल्पों के बारे में सोच सकते हे परंतु अमूर्त चिंतन नहीं कर सकते हैं ।

<u>औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (Formal Operational Stage)</u>-यह अवस्था 11 वर्ष से 19 वर्ष तक चलती है इस अवस्था में किशोरों का चितन अधिक लचीला (flexible)तथा प्रभावी (effective) हो जाता हैं । उसके चिंतन में पूर्ण क्रमबद्धता आ जाती हैं । अब वे किसी समस्या का समाधान काल्पनिक रूप से सोचकर एवं चिंतन करके करने में सक्षम हो जाते हैं इस अवस्था में समस्या के समाधान के लिए समस्या के एकांशों को ठोस रूप से उसके सामने उपस्थित होना अनिवार्य नहीं है किशोर अब भावात्मक एवं अमूर्त स्तर पर चिंतन ,बौद्धिक प्रक्रियाएँ एवं समस्या समाधान करने लगते है । बालक के चिंतन में <u>बस्तुनिष्ठता तथा बास्तबिकता</u> की भूमिका बड़ जाती है अर्थात बालकों में बिकेंद्रण (decentering)पूर्णत : विकसित हो जाता है ।

जीन पियाजे के सिद्धांत की शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implication Of Piaget's Theory)-





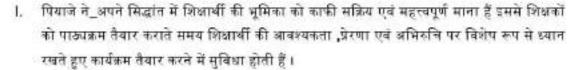






Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



- II. मुर्त सक्रियात्मक अवस्था_में यदि शिक्षक संरक्षण (conservation) संबंध (relation) तथा वर्गीकरण (classification) आदि जटिल मानसिक संक्रियाओं को अधिक बढा देते है तो इससे उनके बौद्धिक विकास का स्तर अधिक तेजी से बढ़ता है जिससे बालक में सजनात्मक ,आविष्कारक तथा आलोचनात्मक क्षमता का विकास स्वत : हो जाता है।
- *पियाजे* ने अपने इस सिद्धांत में यह स्पष्ट कर दिया है कि खेल का शैक्षिक महत्व काफी है खेल के माध्यम 111. से बालकों में संज्ञानात्मक संपन्नता (cognitive competence) जिकसित होता है।
- इस सिद्धांत से शिक्षकों में यह सुझ उत्पन्न होती हैं कि यदि किसी किशोर में औपचारिक संक्रियात्मक IV. चिंतन (formal operational thought)के स्तर को बढ़ाना है तो उसे अधिक उचे स्तर की शिक्षा देना अनिवार्य हैं । क्योंकि शिक्षा के स्तर से बालकों का औपचारिक (अमूर्त) संक्रियात्मक चिंतन सीधे प्रभावित होता है।

एरिक्सन का मनोसामाजिक सिद्धांत

Erikson's Theory of Psychosocial Development

इरिक एरिक्सन (१७ जून १९०२ -१३ मार्च १९९४) एक अमेरिकी विकास मनोवैज्ञानिक एवं सनोविश्लेषक थे। जिनका जन्म जर्मनी से हुआ था। इरिक एरिक्सन का रुचि इस बात से था। कि बच्चों, किशोरों आदि में व्यक्तिगत पहचान किस तरह से विकसित होती है और समाज उस पहचान को बनाने में किस तरह से मदद करता है। उनके सिदांतों में व्यक्तिगत (Personal), सांवेगिक (Emotional) तथा सांस्कृतिक (Cultural) या सामाजिक विकास (Social Development) को समन्त्रित किया गया है। इसे मनोसामाजिक सिद्धांत कहते हैं। इस सिद्धांत में पूरे जीवन अवधि में होने वाले विकास को आठ विभिन्न अवस्थाओं में बांटकर अध्ययन किया जाता है इसलिए जीवन अवधि विकास सिखांत भी कहा जाता है। एरिक्सन के मनोसामाजिक सिद्धांत में निम्नांकित पांच प्रमुख तथ्यों पर आधारित है -

- सामान्यता लोगों में एक ही तरह का मॉलिक आवश्यकताएं होती हैं।
- व्यक्ति में अहं (Ego) या आत्मन (Self) का विकास इन्हीं आवश्यकताओं के प्रति अनुक्रिया का परिणाम होता है।
- विकास विभिन्न अवस्थाओं से संपन्न होता है।







EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in





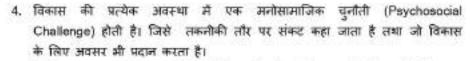






Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



विभिन्न अवस्थाओं द्वारा व्यक्ति अभिप्रेरण में अंतर की बात प्रतिलंबित होती है।

यह संकट कोई आपाती नहीं होता बल्कि एक उल्लत अंत: शक्ति (Enhanced Potential) तथा उचित संवेदनशीलता प्राप्त करने की प्रारंभिक बिंदु होती है। जितना ही उत्तम ढंग से व्यक्ति उस संकट का समाधान करता है उतना ही उसका व्यक्तित्व स्वास्थ्यकर होता है। प्रत्येक अवस्था के धनात्मक तथा नकारात्मक दोनों ही पक्ष होते हैं।

मनोसमाजिक सिद्दांत की अवस्थाएँ

- 1. विकास बनाम अविश्वास (Trust vs. Mistrust)
- स्वायत्तता बनाम लज्जा तथा शक (Autonomy vs. Shame and Doubt)
- 3. पहल बनाम दोष (Initiative vs. Guilt)
- परिश्रम बनाम हीनता (Industry vs. inferiority)
- अहं पहचान बनाम भूमिका संभांति
- 6. धनिष्ठता बनाम विलगन (Intimacy vs. Isolation)
- 7. जननात्मकता बनाम स्थिरता (Generatively vs. Stagnation)
- 8. संपूर्णता बनाम निराशा (Ego Integrity vs Despair)

1. शैशवावस्था- विश्वास बनाम अविश्वास (Trust vs. Mistrust) - एरिक्सन के सिदांत में यह पहली अवस्था है जिसकी अवधि जन्म से 1 साल की होती है। जिन बच्चों को अपने माता-पिता तथा अन्य देखरेख करने वाले व्यक्तियों से सतत उचित स्नेह प्यार आदि मिलता है उनमें विश्वास का माव विकसित होता है वही जिन बच्चों को माता-पिता तथा अन्य देखरेख करने वाले व्यक्तियों से सतत उचित स्नेह प्यार आदि मिलता है उनमें विश्वास का माव विकसित होता है वही जिन बच्चों को माता-पिता तथा अन्य देखरेख करने वाले व्यक्तित होता है वही जिन बच्चों को माता-पिता तथा अन्य देखरेख करने वाले व्यक्ति होता है वही जिन बच्चों को माता-पिता तथा अन्य देखरेख करने वाले व्यक्ति होता है वही जिन बच्चों को माता-पिता तथा अन्य देखरेख करने वाले व्यक्ति द्वारा पाय: रोते-बिलखते तथा घिल्लाते छोड दिया जाता है उन्में दूसरों के प्रति अविश्वास विकसित हो जाता है। जिससे उसे दूसरों के बारे में शक तथा दूसरों से अनावश्यक डर उत्पन्न हो जाता है। जिससे उसे दूसरों के बारे में शक तथा दूसरों से अनावश्यक डर उत्पन्न हो जाता है। विश्वास तथा अविश्वास दोनों की स्थिति मौजूद होने पर शिशु में संकट उत्पन्न होता है और जब वह इस संकट का सफलतापूर्वक समाधान कर लेता है तो इससे उसमें एक विशेष मनोसामाजिक शक्ति जिसे आशा कहा जाता है, उत्पन्न होता है। इस आशा उत्पन्न के फलस्वरुप शिशु वयस्क अवस्था में संस्कतिक मुल्यों तथा धर्म आदि में काफी आस्था दिखलाता है।

 प्रारंभिक बाल्यावस्था - स्वायत्तता बनाम लज्जा तथा शक (Autonomy vs. Shame and Doubt) - यह मनोसामाजिक विकास का दूसरी अवस्था है। जिसकी अवधि 2 साल से





EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in







Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna











3 साल की होती है। जब बच्चों को अपने माता-पिता या देखरेख करने वालों में विश्वास उत्पन्न हो जाता है कि उनके व्यवहार बिल्कुल अपने हैं और व्यवहारों को करने में वे स्वायत्तता या स्वतंत्रता को महत्व देने लगते हैं। वे अपने से खाना खाना, कपड़ा पहनना तथा शौच करना ज्यादा पसंद करने लगते हैं। वे अब दूसरों पर तिर्भर रहना नहीं चाहते हैं । वहीं दूसरी ओर बहुत सखल माता-पिता या वैसे माता-पिता जो प्राय: बच्चों को साधारण कार्य को करने में डांटते हैं या पीटते हैं तो ऐसे बच्चों को अपनी क्षमता पर शक होने लगता है। वे अपने ही अंदर से लज्जा अनुभव करते हैं। जब बच्चा स्वायत्तता बनाम लज्जा तथा शक के संघर्ष का सफलतापूर्वक समाधान कर लेता है। तो उसमें जो मनोसामाजिक शक्ति जन्म होता है उसे इच्छाशक्ति कहा जाता है। जिसके फलस्वरुप बच्चे शक तथा लज्जा की परिस्थिति में भी खुलकर अपने स्वतंत्र पसंद (free-choice) तथा आत्म नियंत्रण का प्रयोग करके व्यवहार कर पाते हैं।

3. खेल अवस्था- पहल बनाम दोष (Initiative vs. Guilt) - यह मनोसामाजिक सिदांत की तीसरी अवस्था होती है। जिसकी अवधि 4 साल से 6 साल तक की होती है यह बच्चों का प्रानस्कूली (preschool) वर्ष होते हैं तथा यह अवधि आरंभिक बाल्यावस्था होती है। जब बच्चों में स्वतंत्रता का भाव विकसित हो जाता है, तो वे अपने इर्द-गिर्द के वातावरण में अन्वेषण (Exploration) करना प्रारंभ कर देते हैं तथा नई-नई उत्सुकता (Curiosity) दिखलाना प्रारंभ कर देते हैं। इसे पहल की संज्ञा दी गई यदि किसी कारण से माता-पिता बच्चे के पहल की आलोचना करते हैं या उन्हें दंडित करते हें तो इससे बच्चों में दोष भाव उत्पन्न हो जाता है जब बच्चों में पहल का अनुपात इस दोष भाव के अनुपात से अधिक होता है यानी पहल बनाम दोष भाव के संघर्ष का जब वह समाधान कर लेता है। तो उसमें एक विशेष मनोसामाजिक गुण विकसित होता है जिसे उद्देश्य कहा जाता है। इसके परिणामस्वरूप बच्चे में लक्ष्य उन्मुखी व्यवहार (goal-directed behavior) करने की प्रेरणा उत्पन्न होती है। यह वह अवस्था होती है जिसमें बच्चों की सामाजिक दुनिया उसे सक्रियता एवं पहल शक्ति दिखलाने के लिए एक तरह की चुनौती प्रदान करता है। उन्हें दूसरे के कार्य करने में आनंद आता है। नई-नई जवाबदेहीयों को निभाने में भी आनंद आता है।

4. स्कूल अवस्था- परिश्रम बनाम हीनता(Industry vs. Inferiority)-मनोसामाजिक विकास की यह चौथी अवस्था होती हैं जो 6 साल की आयु से प्रारंभ होकर लगभग 11- 12 साल तक की होती है इस अवस्था में प्रथम बार बच्चे औपचारिक शिक्षा के माध्यम से संस्कृति के प्रारंभिक काँशल को सीखता है। इस अवस्था में बच्चे का संबंध निगमनात्मक तर्कणा (Deductive Reasoning) आत्मानुशासन (Self-Discipline) तथा अनुमोदित नियमों के

30

e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834











Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

MCEN









अनुरूप अपना संबंध साथियों के साथ बनाए रखने की क्षमता से अधिक होता है। जब बच्चे रुकूल में अपनी संस्कृति के प्रारंभिक कौशलों को सफलतापूर्वक सीखते हैं, तो इससे उनमें परिश्रम का भाव विकसित होता है यदि किसी कारण से बच्चे को अपने कौशल पर शक हो जाता है या वह इस कौशलों को अर्जित करने में असफल हो जाता है, तो इससे उसमें ही हीनता (Inferiority) या असमर्थता (incompetece) की भावना विकसित होती है। बच्चे में हीनता उस समय भी विकसित होता है जब वह देखता है कि उसकी निपुणता की माप उसकी योग्यता एवं कौशल न होकर उसकी प्रजाति, धर्म,यौन आदि है। हीनता का भाव का विकसित हो जाने से बच्चे को अपनी क्षमता में विश्वास नहीं रह जाता हैं। जब बच्चा परिश्रम बनाम हीनता के संघर्ष का समाधान सही -सही ढंग से कर लेता है तो उसमें विशेष मनोसामाजिक शक्ति सामर्थ्यता (competency) विकसित होता है। समांर्थता से तात्पर्य किसी कार्य को पुरा करने में शारीरिक एवं बौढिक क्षमताओं के उचित प्रयोग से होता है।

5. किशोरावस्था- अहं पहचान बनाम भूमिका संधाति -यह मनोसामाजिक विकास की पांचवी अवस्था है इस अवस्था को काफी महत्वपूर्ण अवस्था माना गया है। यह अवस्था 12 साल से 19 या 20 साल की आयु तक सामान्यता होती है। किशोरों के आत्म प्रत्यक्षणों (self perception) का उनके अंतवैयक्तिक अनुभूतियों (interpersonal experiences) द्वारा निश्चित रूप से संपुष्टि हो। संतोषजनक अहं पहचान विकास के लिए किशोरों में उपयुक्त वयस्क यौन भूमिकाओं का विकास हुआ हो। जहां ऐसे यौन भूमिकाओं का विकास होता हैं, व्यक्तित्व में यौन पहचान तेजी से विकसित होता है। जिन बच्चों में उद्देश्य हीनता, व्यक्तित्व में यौन पहचान तेजी से विकसित होता है। जिन बच्चों में उद्देश्य हीनता, व्यक्तित्व ते तैयहन तथा व्यर्थता की आवनाओं की प्रधानता ही है उनमें ऋणात्मक पहचान विकसित होती है। इस अवस्था में मनोसामाजिक शक्ति कर्तव्यनिष्ठता विकसित होती है। कर्तव्यनिष्ठता से तात्पर्य किशोरों में समाज के विचारधाराओ, शिष्टाचार एवं मानकों के अनुरूप अनुकुल व्यवहार करने की क्षमता से होता है।

6. तरुण वयस्कावस्था घनिष्ठता बनाम विलगन (Intimacy vs. Isolation)- यह मनोसामाजिक विकास की छठी अवस्था है जो 20 साल की आयु से प्रारंभ होकर 30 साल तक होती है इरिक्सन के अनुसार इस अवस्था में व्यक्ति सच्चे अर्थ में दूसरों के साथ सामाजिक (Social) एवं लैंगिक (Sexual) घनिष्ठता (Intimacy) कायम करने के लिए तैयार रहता है। इस मनोसामाजिक अवस्था का खतरा यह है कि व्यक्ति दूसरों के साथ कुछ कारणों से संतोषजनक एवं घनिष्ठ वैयक्तिक संबंध नहीं विकसित कर पाता है। अपने आप में ही पूर्णत: खोया रहता है इसे विलगन कहते हैं। ऐसे व्यक्ति द्वारा जो अंतर्वैयक्तिक संबंध (Interpersonal Relationship) कायम भी किए जाते हैं, वह मीतर से खोखला एवं सतही ICEM





EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

31





Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



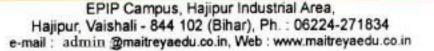
(Superficial) होता है ऐसे लोगों में अपना धंधा या कार्य के प्रति नीरसता एवं व्यर्थता की मनोवृति होती है। जब विलगन की मात्रा अत्यंत अधिक हो जाती है तो व्यक्ति में गैर-सामाजिक व्यवहार या मनोविकारी व्यवहार की प्रबलता बढ जाती है। इस अवस्था में मनोसामाजिक शक्ति स्नेह उत्पन्न होता है।

7. मध्य वयस्कावस्था-जननात्मकता बनाम स्थिरता (Generatively vs. Stagnation)- यह मनोसामाजिक विकास सिद्धांत की सातवीं अवस्था है जो लगभग 30 वर्ष की आयु से 65 वर्ष की आयु तक मानी गई है इस अवस्था में व्यक्ति में जननात्मकता का भाव उत्पन्न होता है जननात्मकता से तात्पर्य व्यक्ति द्वारा अपने अगली पीढी के लोगों के कल्याण तथा साथ ही साथ उस समाज के लिए जिसमें वह लोग रहेंगे हैं, को उल्नत बनाने की चिंता से होता है जब व्यक्ति में जननात्मकता की चिंता उत्पन्न नहीं होती है तो इससे स्थिरता उत्पन्न होने का खतरा बढ़ जाता है। जो एक तरह की आत्म-तल्लीनता की अवस्था होती है जिसमें व्यक्ति की अपनी वैयक्तिक आवश्यकताएं एवं सुख सुविधा ही सर्वोपरि होता है। इसमें एक विशेष तरह की मनोसामाजिक शक्ति जिसे इरिक्सन ने देखभाल कहा है, उत्पन्न होता है।

8. परिषक्वता संपूर्णता बनाम निराशा (Ego Integrity vs Despair) - यह मनोसामाजिक विकास की अंतिम अवस्था परिपक्वता की अवस्था होती है जो बनामग 65 वर्ष तथा उससे अधिक आबु तक चलती है। इस अवस्था में व्यक्ति का ध्यान अविष्य से हटकर अपने बीते दिनों पर विशेष कर उसमें प्राप्त सफलताओं या असफलताओं की ओर अधिक होता है। इसि अवस्था में व्यक्ति का ध्यान अविष्य से हटकर अपने बीते दिनों पर विशेष कर उसमें प्राप्त सफलताओं या असफलताओं की ओर अधिक होता है। इसि अवस्था में कोई स्पष्ट नया मनोसामाजिक संकांति की उत्पत्ति नहीं होती है। व्यक्ति अपने सभी पिछले मनोसामाजिक अवस्थाओं की घटनाओं का समन्वय एवं मूल्यांकन करता है। इससे उसमें आई संपूर्णता का भाव उत्पत्न होता है इस अवस्था में व्यक्ति को मृत्यु से डर नहीं लगता है क्योंकि ऐसे व्यक्ति अपने वाल-बच्चों एवं रचनात्मक उपलब्धियों के माध्यम से अपने अस्ति परि वास्तविक अर्थ में उत्पत्त्न होता है हरा अवस्था में व्यक्ति में मुत्यु से डर नहीं लगता है क्योंकि ऐसे व्यक्ति अपने वाल-बच्चों एवं रचनात्मक उपलब्धियों के माध्यम से अपने अस्तित्व को जारी समझते हैं। इरिक्सन मानते हैं कि इस अवस्था में व्यक्ति मान्यम से अपने अस्तित्व को जारी समझते हैं। इरिक्सन मानते हैं कि इस अवस्था में व्यक्ति माध्यम से अपने अस्तित्व को जारी समझते हैं। इरिक्सन मानते हैं कि इस अवस्था में व्यक्ति माध्यम से अपने अस्तित्व को जारी समझते हैं। इरिक्सन मानते हैं कि इस अवस्था में व्यक्ति माध्यम से अपने अस्तित्व को जारी समझते हैं। इरिक्सन मानते हैं कि इस अवस्था में व्यक्ति मा परिपक्वता अपने वास्तविक अर्थ में उत्पत्न होता है। ऐसे लोग अपनी व्यवत्ति माम उत्पत्न होता है। इस अवस्था में कोई-कोई व्यक्ति आपने बोते मनोसामाजिक अवस्थाओं में उत्पत्न असफलताओं रवे यितित भी रहता है। ऐसे लोग अपनी जिंदगी को अपुरित इच्छाओं,आवश्यकताओं एवं भटके हुई निर्देशों का एक बंडल या देर मानते हैं। इससे उनमें निराशा उत्पत्न होती है अपने को असहाय एवं निर्वल समझने लगते हैं।



32











Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



Development of Learner: Moral Development (Piaget and Kohlberg)

वैतिक विकास : व्यक्ति जिस समाज तथा समुदाय में रहता है यह समाज व समुदाय उसके ऊपर तरह-तरह के सामाजिक बंधन, निर्देश अववा दायित्व आरोपित करता हैं जिन्हें समाज के आदर्श (Ideals)या नैतिक मानदण्ड (Moral Standards)कहते हैं। समाज के द्वारा आरोपित इन बंधनों, दायित्वों व निर्देशों का व्यक्ति की व्यक्तिगत इच्छाओं से संघर्ष (Conflicts)होना स्वाभाविक ही होता है। वास्तव में सामाजिक बंधन प्रारम्भ में व्यक्ति को बाह्य प्रतीत होते है जो इसकी इच्छापूर्ति में बाधक होते हैं।

प्रारम्भ में बालक सामाजिक नियमों, मानवण्डों को समझने अथवा स्वीकार करने के लिए तत्पर नहीं होते हैं परन्तु समाजीकरण की प्रक्रिया, जिसके द्वारा व्यक्ति समाज में प्रचलित आचरण के वैतिक मानदण्डों को अपने में समाहित करता है तथा सीखता है। जब बालक व्यक्तिगत इच्छाओं और सामाजिक दायित्वों के संघर्ष को नियंत्रित करना सीखता है, तब उसमें नैतिकता और उत्तरवायित्व का विकास होने लगता है। सामाजिक तथा बौद्धिक विकास की विभिन्म अवस्थाओं में बालक भिन्म-भिन्म दंग से सोचते तथा समझते हैं। इसलिए विकास की भिन्म-भिन्म अवस्थाओं ने सामाजिक नियमों, कानूनों तथा प्रचलनों की समझ भी प्रायः भिन्न-भिन्म होती है।

बालक अपने सतत सकियता से बाहरा जगत को समझने तथा अपने सामाजिक अनुभवों को नैतिक मूल्यों तथा नैतिक निर्णय के रूप में संगठित करने का प्रयास करता रहता है। यही कारण है कि सामाजिक तथा बौद्धिक विकास के विभिन्न स्तरों पर बालकों के नैतिक मूल्यों तथा निर्णयों का संगठन भिन्न-भिन्न होता है। जैसे-जैसे उनके विकास की प्रक्रिया आगे वढ़ती है, उनमें नैतिक मूल्यों तथा उत्तरदायित्य की भावना में परिवर्तन होता जाता है।

बालकों में होने वाले लैतिक विकास के संबंध में पियाजे Pieget तवा कोहलवर्ग Kohlberg ने अपने-अपने सिद्धान्त प्रस्तुत किए।

जीन पियाजे का नैतिक विकास का सिद्धान्त -

जीन पियाजे ने नियमों, अधिकारों, दोषों, पापों व अत्याचारों के मूल्यांकन, रामानता तथा पर-निर्भरता से संबन्धित प्रश्नों तथा कहानियों के माध्यम से बच्चों के गहन साक्षात्कार लिए तथा इससे प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण करके बालकों के नैतिक विकास का अध्ययन किया। उनके अनुसार नैतिक विकास के तीन मुख्य स्तर होते हैं जो निमन्वत हैं –

- (i) नैतिक यथार्थता (Moral Reallism) (ii) नैतिक समानता (Moral Equality)
- MCEN





EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in ICEM







Maitreya College of Education & Management Shaping Education

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

(iii)नैतिक सापेक्षता (Moral Relativism)

1. जैतिक ववार्थता (Moral Reallism) – यह लैतिक विकास का प्रयम स्तर है जो लगभग सात-आठ वर्ष की आयु तक चलता है। इसे विषय लैतिकता अथवा विवशता की लैतिकता भी कहते हैं। लैतिक विकास के इस स्तर पर बालक के अव्यर विद्यमान लैतिकता अर्ज्यों के द्वारा स्थापित लियमों पर आधारित होती है। लियमों, उत्तरदायित्वों अथवा लिर्देशों को अपरिवर्तलीय, अविचारणीय तथा निरपेक्ष लाना जाता है। जो कुछ भी घर के बड़े, बुजुर्ग, शिक्षक, अधिकारी अथवा नियम कहते हैं वही न्याय है, वही तर्कसंगत है, वही उचित है। जो भी वण्ड अथवा पुरस्कार बड़े व्यक्ति देते हैं वही सबको स्वीकार्य होता है। इस स्तर पर ययावत आज्ञा पालन अच्छा माना जाता है। उदेश्य के आधार पर नहीं वरन् परिणाम के आधार पर व्यक्ति को विभिन्न कार्यों को सही-गलत दहराया जाता है। जिस कार्य का परिणाम जितना अधिक जम्भीर होता है, उसके लिए मिलने वाला दंड भी उतना ही अधिक कच्छप्रद होने की आशा की जाती है।

पियाजे के अनुसार नैतिक यथार्थता के दो मूल स्त्रोत होते हैं:--

- (1)बालकों की बौद्धिक संरचना।
 (2)उसके स्वयं के अनुभव।
- 2. नैतिक समानता (Moral Equality) नैतिक विकास का स्तर लगभग सात-आठ वर्ष की आबु से प्रारम्भ होकर लगभग 12 वर्ष की आबु तक चलता है। यह स्तर समयर्गी बच्चों के साथ बढ़ती अंतःक्रिया का परिणाम होता है। जो कि वस्तुतः समानता तथा लेन-देन के संबंधों पर आधारित होती है। इस स्तर पर बालक की दृष्टि में क्याय मुख्यतः व्युत्क्रम दंड (Reciprocal Punishment) तथा समावता पर केव्दित हो जाता है। वालक स्वकेन्द्रित खेलौं से हटकर सहयोगात्मक खेलों में अधिक रुचि लेने लगते हैं जिसमें वे पारस्परिक सहमति के आधार पर खेल का निर्धारण करने लगते हैं। खेल में ईमानवारी के नियमों (Honesty)वनाथे रखने के लिए सभी भरसक प्रयास करते हैं। इस आय के खेलों का अधिकांश समय नियमों तथा बेइमानी के ऊपर लर्क-विलर्क करते हुए जुजर जाता है। लर्क-विलर्कों के कारण स्वकेव्दित खेल सहयोगात्मक खेल की ओर अग्रसर होते हैं। तर्क-वितर्क के फलस्वरूप बालकों में परस्पर सम्मान तथा सहयोग की भावना विकसित होती है इस प्रकार नैतिक विकास तब होता है जब बालकों में अन्य व्यक्तियों के दुष्टिकोण को बहण करने तथा जटिल मान्यताओं को समझने की योज्यता विकसित हो रही होती है।
- जैतिक सापेक्षता (Moral Relativism) नैतिक विकास का यह स्तर सर्वाधिक विकसित स्तर है। प्याजे ने इसे स्वतः नैतिकता अथवा



34







Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

सहयोगात्मक नैतिकता के नाम से भी सम्बोधित किया है। यह स्तर समान्यतः लगभग 12 वर्ष की आयु में प्रारम्भ होती है। इस स्तर पर ज्याय की संकल्पना मुख्यतः समानता पर आधारित होती है। बाह्य बबाव के अभाव में भी न्याय के आवर्शों का अनुसरण किया जाता है नियमों को सामाजिक अंतर्किंग तथा आम, सहमति के आधार पर निर्मित माना जाता है तथा ये नियम आवश्यकतानुसार परिवर्तनीय होते हैं। इस स्तर पर बालक तबा किशोर नैतिक निर्णयों के संबंध में अपने स्वयं के नियम बनाना शुरू कर लेते हैं।

उपरोक्त विवेधना से स्पष्ट है की जैतिक समार्थता स्तर पर बालकों में नियमों का अंध-अनुसरण (Blind-Obedience)करने की प्रवृत्ति होती है, जैतिक समानता स्तर पर नियमों की व्याख्या करने की प्रवृत्ति होती है तथा जैतिक सापेक्षता स्तर पर कार्यों की व्याख्या करने की प्रवृत्ति होती है।



होती है तथा **जैतिक सापेक्षता** स्तर पर कार्यों की व्याख्या करने की प्रवृत्ति होती है। लैतिक शिक्षा, घरेलू जीवन तथा अन्य यातावरणीय कारकों के कारण उनके दूष्टिकोण तथा लैतिक विकास में अंतर आ जाता है। प्याजे के अनुसार, सहयोग, पारस्परिक पर-निर्भरता तथा यिभिन्न वृ षिठकोणों के प्रति जागरूकता व्यक्ति को ख्वतः नैतिकता के स्तर तक

कोहलवर्ग का नैतिक विकास का सिद्धान्त Kohlberg's Theory of Moral Development

पहुँचाने में सहायक सिद्ध होती है।

लारेंस कोहलबर्ग (25 October 1927- 19 जलवरी 1987) एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे। कोहलवर्ग ने नैतिक तर्क विकास के स्थान पर नैतिक तार्किकता के विकास की अवधारणा को प्रस्तुत किया। कोहलवर्ग ने बालको एवं किशोरों दोनों के साक्षात्कार लिए एवं उन्होंने विभिन्न परिस्थितियों में बालकों व किशोरों द्वारा दिए गए उत्तरों में विशेष रूचि न लेकर उनके द्वारा चयनित व्यवहारों के पीछे निहित तार्किकता को नैतिक विकास की हण्टि से अधिक महत्वपूर्ण माना। इस साक्षात्कार में एक परिस्थिति का चयन किया गया तथा उस परिस्थिति में बालको द्वारा दिए गए उत्तरों का विश्लेषण किया गया।

कोहलवर्ग ने इस परिस्थिति को प्रस्तुत करने के बाद प्रश्न किया कि "क्या उस महिला के पति को ऐसा करना चाहिए था।" (1963)

नैतिक विकास के सिद्धांत की अवस्थाएं-

नैतिक विकास की छः अवस्थाएं इस प्रकार है.



35

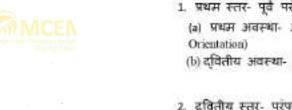






Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



- 1. प्रथम स्तर- पूर्व परंपरावादी नैतिकता (Preconvention Morality)
 - (a) प्रथम अवस्था- आज्ञाकारिता एवं दंड उन्मुखीकरण (Obedience and Punishment Orientation)
 - (b) द्वितीय अवस्था- वैयक्तिकता एवं विनिमय (Individualism and Exchange)
- 2. द्वितीय स्तर- परंपरागत नैतिकता (Conventional Morality)
 - (c) तृतीय अवस्था -स्वस्थ अन्तर्वयक्तिक संबंध (Good Interpersonal Relationship)
 - (d) चतुर्थ अवस्था सामाजिक क्रम को लागू रखना (Maintaining the social order)
- 3. तुतीय स्तर-पश्च परंपरावादी नैतिकता (Post conventional Morality)
 - (e) पंचम अवस्था- सामाजिक अनुबंध एवं व्यक्तिगत अधिकार (Social contract and Individual Rights)
 - (1) षष्ठ अवस्था –सार्वभॉमिक अन्सिद्धांत (Universal Principle)

प्रथम स्तर- पूर्व परंपरावादी नैतिकता (Preconvention Morality

(a) प्रथम अवस्था- आजाकारिता एवं दंड उन्मुखीकरण (Obedience and Punishment Orientation)- इस अवस्था में बालक यह मानता है कि उसे शक्तिशाली प्राधिकरणों द्वारा निधोरित नियमों को बिना किसी संदेह के मानना है। कोहलवर्ग ने इस अवस्था को पूर्व परंपरावादी अवस्था कहा हैं क्योंकि इस अवस्था में बालक समाज के सदस्य की हैसियत से व्यवहार नहीं करता। अपितु वह नैतिकता को अपने अंदर से उत्पन्न व्यवहार ना मानकर बाहर से बड़ों के द्वारा बनाए गए नियमों को मानने की अनिवायंता के रूप में स्वीकार करता है।

(b) द्वितीय अवस्था- वैयक्तिकता एवं विनिमय (Individualism and Exchange)-इस अवस्था में बालक यह अनुभव करने लगते हैं कि किसी विशिष्ट प्राधिकारिता द्वारा आयोजित दृष्टिकोण ही सही नहीं है बल्कि भिल्न भिल्न व्यक्तियों के स्वयं के भी दृष्टिकोण हो सकते हैं। उपयुक्त दोनों अवस्थाओं में बालकों ने दंड को केंद्र में रखा। यद्यपि दोनों ही अवस्थाओं में बालक ने दंड का भिल्न भिल्न हंग से प्रत्यक्षीकरण किया। प्रथम अवस्था में बालक के दिमाग में दंड को सामान्य रूप से एक जोखिम (risk) के रूप में लिया गया है जिसे व्यक्ति टालना चाहता है। यद्यपि द्वितीय अवस्था में बालको द्वारा दिए गए उत्तर नीति निरपेक्ष (anxeal) लगते हैं। किंतु इन अर्थों में एक प्रकार का सही कार्य करने का भाव निहित होता है। यह एक प्रकार का सही विनिमय का भाव है जिसमें यह निहित होता है कि यदि तुम हमें हानि पहुंचओगे तो मैं भी तुम्हें हानि पहुंच जाऊंगा।

द्वितीय स्तर -परंपरागत नैतिकता (Conventional Morality)-इस अवस्था में भी बच्चों का नैतिक ल्याय समाज में बनी परंपराओं नियम एवं अधिनियम तथा कानून व्यवस्था दूसरों की पसंद को नापसंद के दवारा नियंत्रित होता है परंपरागत नैतिकता उचित एवं अनुचित से संबंधित समाज की परंपराओं की स्वीकृति दवारा प्रदर्शित होता है। इस अवस्था में एक एक









36

ICEM





Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna



टयकिंत नियमों का पालन करता है तथा समाज के मानकों का अनुसरण करता है जबकि आजा पालन या अवज्ञा का कोई भी परिणाम नहीं है।

(c) तृतीय अवस्था -स्वस्थ अन्तवैयक्तिक संबंध (Good Interpersonal Relationship)-इस अवस्था में बालक किशोरावस्था में प्रविष्ट होने लगता है। वह यह विश्वास करने लगता है कि लोगों को परिवार एवं समुदाय की अपेक्षाओं के अनुरूप ही जीवन यापन करना चाहिए और अच्छी तरह से व्यवहार करना चाहिए। अच्छे इरादे एवं अतवैयक्तिक आवनाओं जैसे- प्रेम. तदनभूति, विश्वास एवं दसरों के हित को ध्यान में रखकर किया गया व्यवहार है।

(d) चतुर्थं अवस्था – सामाजिक क्रम को लागू रखना (Maintaining the social order)-चतुर्थ अवस्था में व्यक्ति अपने संबंधों की परिधि को बढाते हुए पूरे समाज के साथ अपने को जोड़ते हुए उनके हित से जुड़ने लगता है। अब उसका पूरा जोर नियमों एवं कानूनों के अनुपालन. पाधिकारिता के प्रति आदर तथा अपने कतेव्यों का निष्ठा से अनुपालन करने पर हो जाता है। जिससे कि सामाजिक क्रम को ठीक ढंग से लागू रखने में सुविधा हो सके।

तुतीय स्तर-पश्च परंपरावादी नैतिकता (Post conventional Morality)

(e) पंचम अवस्था- सामाजिक अनुबंध एवं व्यक्तिगत अधिकार (Social contract and Individual Rights)- पंचम अवस्था में बालक यह सोचने लगते हैं कि किसी भी समाज को अच्छा बनाने के मापदंड क्या हो। उसमें किस प्रकार के मूल्यों की स्थापना हो तथा उसे किस प्रकार के अधिकारों से युक्त होना चाहिए। इस अवस्था में वे स्वयं इस निर्धारित उपयुक्त मापदंडों के आधार पर विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं का आकलन भी करते हैं। अब व्यक्ति परस्पर लेनदेन में विश्वास करने लगता है कि व्यक्ति व समाज के बीच एक समझौता होता है। व्यक्ति यह मानने लगता है कि व्यक्ति को सामाजिक नियमों का पालन इसलिए करना चाहिए क्योंकि समाज हमारे हितों की रक्षा करता है। तो हमारा दायित्व बनता है कि हम समाज के नियमों का पालन करें। अगर व्यक्ति सामाजिक नियमों का पालन नहीं करता है तो व्यक्ति व समाज के बीच का समझौता टूट जाता है।

(1) षष्ठ अवस्था -सार्वभौमिक अनुसिद्धांत (Universal Principle)- इस अवस्था में पहुंचने पर व्यक्ति नैतिकता के बारे में अपना इष्टिकोण भी विकसित कर लेता है। व्यक्ति के अच्छे -बुरे, उचित.अनुचित आदि विषयों पर स्वयं के व्यक्तिगत विचार विकसित हो जाते हैं। अब व्यक्ति के नैतिक विकास का एकमात्र आधार विवेक ही बन जाता है। अब इस अवस्था में व्यक्ति नियमों का पालन स्वयं के इष्टिकोण से प्रेरित होकर करने लगता है। इस अवस्था में व्यक्ति अब नियमों की वैधता को भी चुनौती देने लगता है। व्यक्ति के लिए वहीं आचरण नैतिक होगा जो उसके स्वयं के विवेक का समर्थन पाप्त होता है।

बाल्यावस्था में भाषा विकास

भाषा एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने भावों और विधारों को दूसरों के सामने प्रस्तुत करते हैं और दूसरों के भावों और विधारों को समझ







EPIP Campus, Hajipur Industrial Area, Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834 e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in ihaping Lakaatlee







Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

MCEN

पाते हैं। बालक के सामाजीकरण के लिए भाषा का विकास अत्यब्त आवश्यक है। प्रारम्भ में बालक अपने भावों की अभिव्यक्ति विभिन्न प्रकार की ध्वनियों, मुखाकृति, अभिव्यंजना (Facial Expression) एवं हावभाव के द्वारा प्रस्तुत करता है। बाल्यावस्था में बालक बोलकर या लिखकर अपने विचारों को प्रकट करता है।

भाषा में सम्प्रेषण के वे सभी साधन आते हैं जिसमें विचारों एवं भावों को प्रतिकात्मक बना दिया जाता है, जिससे अपने विचारों एवं भावों को दूसरों से अर्थपूर्ण ढंग से कहा जा सके। भाषा सीखने में भाषा विकास का क्रम सुनना, बोलना, लिखना, पढ़ना के क्रम का अनुसरण करता है। एक की निप्रणता दूसरे की निप्रणता प्राप्ति में सहायक होती है।

बालक के विकास क्रम में भाषा का बहुत महत्वपूर्ण खान है भाषा के माध्यम से ही व्यक्ति अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाता है, बहुत सी बातों को सीखता है दूसरों के निकट सम्पर्क में आता है और उनको समझता है। भाषा बुद्धि के प्रयोग और तर्क का एक माध्यम है।

भाषा विकास बालक के सामाजिक और संवेगात्मक विकास में बहुत सहायक होता है। बालक का मानसिक विकास उसके भाषा के विकास में बहुत कुछ पर निर्भर करता है। प्रायः यह देखा जाता है कि बालक जितना शीघ्र बोलना और दूसरों की बातों को समझना सीख लेता है वह उतना ही कुशाग्र बुद्धि का समझा जाता है और भाषा विकास में पिछड़ा हुआ बालक मन्द बुद्धि का होता है बालक का सम्पूर्ण व्यवहार उसके भाषा विकास में बहुत प्रभावित होता है।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था में भाषा विकास -

प्रारम्भिक बाल्यावस्था में बालकों की बोली (Speech) मूलतः आतमकेव्दित होती है। ये अपनी जरूरतों और स्वयं के बारे में ही बोलते हैं परन्तु इस अवस्था के अंत तक पहुँचते-पहुँचते वे परिवार के अन्य लोगों के बारे में भी कुछ बोलना शुरू कर देते हैं। इस अवस्था में बालक अभ्यास द्वारा शब्दों का उच्चारण करना (Pronunciation of Words) शब्दायली बनाना Vocubulary Building तथा वाक्य बनाकर बोलना Forming Sentences मुख्य रूप से सीखते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इस अवस्था को "बक्की अवस्था"(Chatterbox Stage) कहा वर्षोंकि जैसे ही ये आसानी से बोलना सीख लेते हैं, वे अवसर कुछ-न-कुछ बोलते ही रहते हैं। इस अवस्था में बालकों में भाषा विकास अन्य बातों के अलावा बालकों की बुद्धि परेलू वातावरण, नियमित प्रशिक्षण आदि पर निर्भर करता है।

उत्तर बाल्यावस्था में भाषा विकास – इस अवस्था में बालकों में भाषा-विकास तीव्र जति से होता है और अब वे रोने-चिल्लाने जैसी क्रियाओं को कम महत्व देते हैं। इस अवस्था में बालकों में शब्दावली निर्माण में









38

ICEM





Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

2000 शब्द के पार पहुँच जाता है।

MCEN

यूद्धि, उच्चारण में स्पष्टता तथा जटिल याक्यों का प्रयोग आदि गतिविधियाँ देखी जाती है। बालक स्कूल के शिक्षक तथा अन्य लोगों से वार्तालाप कर, पुस्तक पक्कर, देशीविज़न देखकर अपनी शब्दावली में पर्याप्त वृद्धि कर लेते हैं। मनोवैज्ञानिकों के अध्ययन से पता चला है कि इस अवस्था में बालकों ने रंग-शब्दावली, गन्दी शब्दावली, रुपये-पैसे सम्वन्धी शब्दावली की प्रधानता होती है। उत्तर बाल्यावस्था में बालकों का संभाषण आत्मकेंद्रित न रहकर सामाजिक हो जाता है। अब वे अपनी रुपि के किसी भी विषय पर दूसरों से खुलकर बालचीत करने के लिए तैयार हो जाते है। अब उनके संभाषण अधिक निबंत्रित एवं तथ्यपूर्ण दिखने लगते है। मनोवैज्ञानिकों अध्ययनों से निष्कर्भ निकलता है कि इस अवस्था में लडकियाँ लड़कों की तुलना में अधिक बातचीत करने वाली होती है।

भाषा विकास व शिक्षा – भाषा विकास की जति दो वर्ष से ज्यारह वर्ष की आयु में सर्वाधिक होती है। जिसका अंवाजा इस बात से ही लगाया जा सकता है कि आयु के बीच शब्द भण्डार 200 शब्दों से बढ़कर लगभग

एक छः साल के बच्चे का शब्द भण्डार लगभग 8000 से 14000 शब्द हो जाता है। जो ज्यारह वर्ष की आयु तक 40,000 शब्दों तक पहुँच जाता है। विद्यालय आने से पहले बच्चे मातृभाषा या घर पर बोली जानी वाली भाषा में अपनी बात समझने में लगभग सक्षम हो चुके होते हैं। शिक्षकों को उनके उच्चारण प्वनियों और स्वरों का और विशुद्ध बनाने में सहयोग करने का प्रयास करना चाहिए जिसके लिए वह जरूरी है कि बच्चों को कक्षा में समकक्षों से व शिक्षक से संवाद करने का अवसर मिले तथा अभिव्यक्ति के लिए एक संवेदनशील मंच मिले, जहाँ उनकी व्याकरण व

Shaping Educat



भाषा में केवल शब्द, उच्चारण, ध्वनियाँ व व्याकरण ही महत्वपूर्ण नही हैं, अर्थ, भाव व अभिव्यक्ति की सक्षमता भी भाषा का अहम अंग हैं।

उच्चारण संबंधी 'गलतियों' को उपहास का विषय न बनावा जाए।

इसलिए शिवाकों को इन सभी पत्नी का ध्यान रखते हुए बच्चों से संवाद स्थापित करना चाहिए व उनके लिए भाषा अनुसरण का माध्यम बनना चाहिए, क्योंकि हमारे द्वारा बोली जानेवाली भाषा का बड़ा हिस्सा हम अनुसरण कर सीखते हैं।

रांवाद की प्रक्रिया का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि जिन नियमों (जैसे-एक दूसरे की बात सुनना, दूसरों को भी बोलने का अवसर देना आदि) का पालन हम संवाद के दौरान करते हैं, वह हमारे सामाजिक रिश्तों की नींव बनते हैं। इसलिए यह जरूरी है की शिक्षक बच्चों को संवाद के नियमों से परिधित कराएँ। यह भी भाषा विकास का एक अभिन्न अंग है।

39





Shaping Editor





Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

MCEN

भाषा विकास का एक पक्ष लिखित भाषा का विकास भी है। यह देखा जा सकता है कि बोली जानेवाली भाषा का विकास लिखने से पहले होता है क्योंकि लिखना बोलने से ज्यादा जटिल प्रक्रिया है और मांशपेशियों के विकास पर भी आधारित है। लिखने के लिए हाद तथा मरितष्क में समन्वय वैवना भी अनिवार्य है। लिखित शब्द, व्याकरण व अभिव्यक्ति के विकास के लिए शिक्षक को ऐसे अवसर उत्पन्न करने चाहिए, जिसमें बच्चे सिर्फ शिक्षक से ही नहीं अपितु पुस्तकों से सीखें।

कविताओं य कहानियों की मदद से भी भाषा विकास की प्रक्रिया में सहयोग मिलता है। मातृभाषा का विकास दूसरी भाषा के विकास से जल्दी व सहजता से हो जाता है इसलिए भी मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने पर सभी मनोवैक्रानिक व समाजशास्त्री एक मत है।

भाषा विकास का क्रम --

- (1)ध्यलि की पहचान -
- (2)ध्वनि उत्पन्न करना -
- (3)शब्द एवं वाक्यों का लिर्माण -
- (4)लिखित भाषा का प्रयोग -
- (5)भाषा विकास की पूर्णावस्था -

भाषा विकास को प्रभावित करने वाले तत्व -

- 1. स्वास्क्य (Health) स्वास्क्य का प्रभाव भाषा विकास पर भी पहता है। जीवन के पहले दो वर्षों में गंभीर या लंबी बीमारी होने से बालक का भाषा विकास ठीक से नहीं हो पाता। रोगी वालक को अन्य वालकों का सम्पर्क नहीं मिलता। विना बोले ही उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है। उसे बोलने की कोई प्रेरणा नहीं मिलती, जिससे उसका भाषा विकास पिछड़ जाता है। जिन बालकों में श्रवण दोष पाया जाता है उनका भाषा विकास अवरोधित हो जाता है दोषयुक्त तालू, कण्ठ, दांत तथा जबड़ों के कारण भी बालक शुद्ध भाषा की योग्यता प्राप्त नहीं कर पाता।
- 2. बुद्धि Intelligence परीक्षणों के द्वारा यह देखा गया है कि बालक की बुद्धि व उसकी भाषा योण्यता में गहरा संबंध है। तीव बुद्धि बालक सामान्य बालक की अपेक्षा कम से कम चार माह पूर्व बोलना प्रारम्भ कर देता है और मन्द बुद्धि बालक सामान्य बुद्धि वाले बालक से बोलने में तीन वर्ष पिछड़ जाता है परन्तु सभी मन्द बुद्धि बालकों के संबंध में यह बात नहीं कही जा सकती।
- 3. सामाजिक-आर्थिक स्थिति (Socio-Economic Status) शिक्षित परिवार के बालकों का भाषा का विकास अशिक्षित परिवार के बालकों की तुलना में अधिक ढुत गति से होता है। उच्च सामाजिक स्तर के परिवारों के बालकों का शब्द भण्डार निर्धन परिवारों के बालकों की अपेक्षा अधिक





ICEM









Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

होता है। मैकार्थी (Macarthi) के अनुसार, उच्च व्ययसाय वाले परिवारों के बालकों को बाक्य रचना, निम्न कोटि के व्यवसाय वाले परिवारों के बालकों की वाक्य रचना की अपेक्षा कही अधिक सुन्दर होती है। इन सबका कारण यही है कि शिक्षित और उच्च सामाजिक व आर्थिक स्तर के परिवारों के बालकों को सीखने और समझने के अधिक अवसर उपलब्ध होते हैं। 4. पारिवारिक संबंध (Family Relationship) – बालक के माता-पिता के साथ क्या संबंध है, माता-पिता बालक के साथ कितना समय व्यतीत करते हैं, माता-पिता वालक से अत्यधिक प्रेम करते हैं या उसे हर समय ड्रिइकते हैं, इन सब बातों का प्रभाव बालक के भाषा विकास पर पडता है। जिन परिवारों में बालकों की संख्या अधिक होती है, यहाँ माता-पिता बालकों की ओर उचित ध्यान नहीं वे पाते, जिसके परिणामस्वरूप बालकों का भाषा विकास पिछड़ जाता है। सामान्य परिवार में पले बालक का भाषा विकास अनाथालय में पले बालक की अपेक्षा अच्छा होता है। अधिया (जनसंचार) - फिल्म, रेडियों, दी.वी, पत्र-पत्रिकाएँ और पुरतकें भी भाषा विकास को प्रभावित करती हैं। बच्चों को प्रायः फिल्मों और टी.वी. कार्यक्रमों के पात्रों की नकल उतारते हुए देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न कार्यक्रमों और मीडिया द्वारा उठाये गये मुद्दों से बच्चों को असंखय शब्द, विचार, वाक्य रचना के प्रारूप सीखने को मिलते हैं। 6. साथियों के साथ सम्बन्ध (Contact with Peers) - ऐसे माता-पिता द्वारा जो अपने बच्चों पर नियन्त्रण अधिक रखते हैं फलरवरूप वे साथियों के साथ अपने बच्चों को ज्यादा मिलने-जुलने नहीं देते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि ऐसे बच्चों का सामाजिक सम्पर्क सीमित हो जाता है। फलतः ऐसे बच्चों का भाषा विकास प्रभावित हो जाता है। 7. माता-पिता द्वारा प्रेरणा (Stimulation by Parents) - जिन वालकों को माता-पिता द्वारा शब्दों को बोलने, लिखने तथा पढ़ने के लिए अधिक प्रेरणा मिलती हैं, उनमें भाषा विकास अधिक तीवता से होती है। भाषा-विकास में शिक्षक की भूमिका -शिक्षकों द्वारा रकत में औपचारिक शिक्षा दी जाती है तो बालक शुद्ध-शुद्ध बोलने, लिखने तथा पवने का प्रशिक्षण पाते हैं और इससे उनके आषा-विकास में तेजी से वृद्धि होती है। (1)शिक्षकों के चाहिए कि वे वालकों को शुद्ध एवं सही भाषा सिखाने में रुचि विखाए तथा बालकों मे अपने विशेष प्रयास ब्रारा रुचि उत्पन्न करें।





Shaping Education







Maitreya College of Education & Management

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

- (2)शिक्षकों को बालकों में स्वास्य भाषा विकास के लिए वाद-विवाद, अंताक्षरी तथा अन्य कार्यक्रमों का समय-समय पर आयोजन करना चाहिए।
- (3)शिक्षकों को वर्ज में अध्यापन करते समय शुद्ध एवं स्पष्ट शब्दों या वाबचों का भरपूर प्रयोग करना चाहिए।
- (4)बालकों को ज्ञानवर्द्धक पुस्तकों, मैंगजीनों, पत्रिकाओं आदि को पढ़ने का युअवसर देना चाहिए।
- (5)बालकों को उन बालकों के साथ खेलने तथा बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जिनकी भाषा में शुद्धता तथा स्पष्टता अधिक हो।
- (6)बालकों को जंदे तथा अस्वस्थ वातावरण, जिसमें जैवारू भाषा का अधिक प्रयोग किया जाता है, से दूर रखना चाहिए।









42







Maitreya College of Education & Management Shaping Education

Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

× ■ Library – Maitreya ... < □ : maitreyaedu.co.in

(INICITINCI)

- Kavita Kumari, Student B.Ed. Session 2022-24, (Member)
- Himanshu Kumar, Student B.Ed. Session 2022-24, (Member)

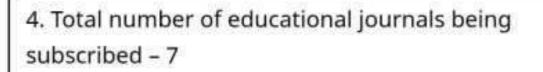
Library Resources



1. Separate library facilities for the course.

2. Total number of titles in the library – 3825

3. Total number of Books in the library – 6735



5. Total number of refereed research journals being subscribed – 3



6. Number of titles of encyclopedia available – 9

7. Number of titles available in the reference section – 1645

9 Total coating capacity in library 50





